भूदान-यज्ञ

[नाटक]

★

प्रस्तावना लेखक
विनोबा भावे

लेखक
गोविन्ददास

प्रकाशक :
मध्यप्रदेशीय भूदान-यज्ञ-समिति,
सुभाषचन्द्र रोड,
नागपुर ।

प्रथम संस्करण, मार्च १९५४

मुद्रक :
जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस,
गोपालबाग, जबलपुर ।

भूदान-यज्ञ

[नाटक]

विनोबा जी की प्रस्तावना

शरी गोवीददासजी ने भूदान-यज्ञ पर यह नाटक लीखा है। अुन्होने चाहा की "दो-शब्द" अुसके लीये मैं लीख दूं। अुनका मेरा अीतना आतरीक नीकट सबध है की अुनकी अीच्छा अमान्य करना मेरे लीये असभव था, अीसलीये लीख रहा हू। वैसे नाटकादी-ललीत-साहीत्य के बारे में अभीप्राय देने का मेरा कोअी खास अधीकार मै नही मानता।

दुनीया की प्राचीन और अर्वाचीन १०, १५ भाषाओ का साहीत्य पढने का मुझे मौका मीला है। लेकीन सब भाषाओ के मीलाकर अेकाध डझन से जयाद्ह नाटक मैंने पढे नही होंगे, और देखा तो सीर्फ एक ही नाटक है। मुझे याद है की वह भी मै पूरा नही देख पाया था। थोडी देर देखकर मै थीयेटर के बाहर नीकल आया था। बचपन में मुझे घूमने का बहुत शौक था। जीस दीन वह नाटक देखने गया था अुसदीन घूमना अुतना कम हुआ अीसीका मुझे अफसोस रहा। अैसा शख्स आज नाटक का 'आमुख' लीख रहा है।

लेकीन अीसके यह मानो नही की मुझे नाटक की कोअी नफरत है। बल्की अुलटे मैं अुसको सर्वोत्तम कला में गीनती करता हू। नाटक को लोग अेक खेल समझते हैं। देखने वालो के लीये तो वह अेक खेल जरूर है, लेकीन लीखने वाले के लीये वह हृदय का नीचोड है।

परन्तु उपदेशात्मक साहीत्य से सूचक साहीत्य अूंचा माना जाता है, और वह ठीक भी है। अुसका कारण मै यह समझता

हू कि परत्यक्ष अुपदेश में सामने वाले पर अेक परहार का आक्रमण होता है। सूचक-शैली मे वैसा आक्रमण नहीं होता, और अिसलीये अहींसा के लीये वह अधिक अनुकूल है। सूचक-साहीत्य में नाटक शीरोमणी है। पर अुत्तम नाटक लीखना आसान बात नही है। कालीदास शाकुंतल लीखकर अमर हो गया। शेक्सपीयर ने वैसे सख्या में तो कओ नाटक लीख दीये, लेकीन अुसकी कीर्ती अुसके दो-चार नाटको पर ही नीर्भर है।

जीस नाटक का हेतु समाप्ती के पहीले मालूम नहीं होता है, और समाप्ती के पहीले जीसका रसीको पर वीवीध परभाव पड़ता है, "जीसकी रही भावना जैसी परभू मूरत तीन्ह देखी तैसी" यह वर्णन जोस नाटक पर लागू होता है वह सर्वोत्तम-कृती मानी जायगी। जाहीरही गोवीददासजी का यह नाटक अुस कोटी का नहीं है। अुसका हेतु आरभ से आखीर तक परकट है।

लेकीन हेतु परकट होने पर भी अगर नाटक रजन-पूर्वक भावना-परीपोष कर दे तो हेतु का परकट होना गुनाह तो नही माना जायगा। गोवीददासजी ने अपनी शक्ती के अनुसार वैसा परयत्न अीसमें कीया है। और अुसमें अुनको जो यश मीला होगा अुसका कारण न सीर्फ अुनकी लेखन-कला होगी, बल्कि साथ साथ भूदान यज्ञ के काम का जो उनको जाती अनुभव हुआ है वह भी होगा। मैं आशा करूंगा अीसका परकट हेतु अीसके परीणाम में परकटतर होगा।

२९-१-५४ पड़ाव, पटना जीला वीनोबा के परणाम

लेखक का निवेदन

फर्माइश पर जीवन मे मैंने केवल एक ही चीज लिखी थी—'मगल-प्रभात' नाटक, जो १५ अगस्त सन् १९४७ को ब्राडकास्ट करने के लिये दिल्ली की आकाशवाणी ने मुझसे मागा था। यह कृति भी मैने अकेले नही लिखी थी। इसमे मेरे साथी थे श्री चन्द्रगुप्तजी विद्यालकार।

इस बार भूदान-यज्ञ समिति के मध्यप्रदेश के सयोजक श्री दादा भाई नाइक, उनके साथी श्री ठाकुरदास वग और श्री आचार्य विनोबा भावे के सेक्रेटरी श्री दामोदरदास मू दडा ने एक तरह की उत्कट इच्छा सी प्रकट की कि मै भूदान-यज्ञ पर एक नाटक लिख दू।

भूदान-यज्ञ आन्दोलन पर आरभ से ही मेरा कुछ अटल-सा विश्वास था और जब श्री विनोबाजी पडित जवाहरलाल नेहरू से मिलने सन् १९५१ में दिल्ली पैदल जा रहे थे तब महाकोशल प्रान्त में उनके सागर के मुकाम पर महाकोशल प्रान्तीय काग्रेस कमेटी के सभापति की हैसियत से मैने उन्हें एक पत्र लिखकर दिया था कि महाकोशल में उन्हें एक लाख एकड भूमि मिलेगी। बाद मे तो उन्हें अन्य स्थानो पर एक-एक व्यक्ति ने लाखो एकड जमीन दी, पर मै यह कहने का लोभ सवरण नही कर सकता कि सन् १९५१ म मेरा वह पत्र अपनी एक विशेषता रखता था।

तभी से मेरी इच्छा भूदान-यज्ञ के लिये स्वय महाकोशल का दौरा करने की थी। पर उस बीच कुछ ऐसी चीजें आ गई, विशेषकर मेरी पृथ्वी-परिक्रमा, कि इस दौरे को मै पहली जून सन् ५३ के पहले आरभ न कर सका।

नाटक के अन्य प्रधान गुणो के साथ ही उसके दृश्य काव्य होने के कारण वह यदि पढने के साथ खेला भी जा सके तो सोने में सुगध हो जाती है । फिर इस नाटक लिखने की जिन्होने फर्माइश की थी उनका मुख्य उद्देश्य तो यही था कि यह नाटक सरलता से खेला जा सके। रामायण, महाभारत और प्राचीन ऐतिहासिक कथा में जिन सच्चे पात्रो को लाया जाता है उनको उनके काल की कोई मूर्तिया अथवा चित्र न होने के कारण उनकी वेश-भूषा आदि का ध्यान रख उनका रूप मच पर किसी प्रकार या भी प्रदर्शित किया जा सकता है, जैसे राम के किरीट, कुडल, धनुष आदि धारण कराकर कोई भी राम बनाया जा सकता है। कृष्ण के मुकुट, काछनी, वशी आदि धारण कराकर कोई भी कृष्ण बनाया जा सकता है। यही बात चन्द्रगुप्त, चाणक्य, समुद्रगुप्त, हर्ष, राज्यश्री आदि के लिये भी है, प्रताप, शिवाजी, मुगल सम्राटो इत्यादि के लिये उतनी दूर तक नही, क्योंकि इनके चित्र उपलब्ध है, फिर भी इन्हे भी हुए बहुत समय हो गया है, इसलिये इनके विषय में भी बहुत दूर तक गोलमाल चल सकती है। पर यदि आप जीवित विनोबाजी, राजेन्द्रबाबू, जवाहरलालजी, जयप्रकाशनारायणजी आदि को मच पर लाना चाहते है, तो दृश्य काव्य में, जिसका प्राण बहुत दूर तक स्वाभाविकता है, यह कम कठिन काम नही है। अत जो नाटक खेलने के लिये लिखवाया या लिखा जा रहा हो और जिसकी रचना सच्चे पात्रो को मच पर प्रदर्शित किये बिना सभव न हो, उस नाटक की यह कठिनाई मुझे सर्वोपरि कठिनाई जान पड़ी।

अभी हाल ही में मैने पश्चिम के प्रसिद्ध नाटककार डिक्वाटर्स का "इब्राहीम लिकन" नाटक अमरीका में देखा था। मच पर लिकन को लाया गया था और लिकन की मूर्ति अथवा चित्रो में जैसा लिकन दिखाई पड़ता है ठीक वैसा ही मच पर आने वाला लिकन दिख पडता

ही उस काल के अनेक महानुभाव भी उस नाटक में लाये गये थे। यह नाटक गांधीजी को सुनाया गया था और उनसे जो कुछ इस नाटक में कहलाया गया था वह उनकी आज्ञा के अनुसार यत्र तत्र परिवर्तित भी किया गया था। गांधीजी के जीवन काल मे ही यह नाटक कई स्थानों पर सफलतापूर्वक खेला गया, ऐसी रिपोर्टें मेरे पास आई थीं, यद्यपि मैंने स्वयं इसका अभिनय नहीं देखा। ऐसे नाटक आकाशवाणी द्वारा ब्राडकास्ट होने में अवश्य बड़ी दिक्कत होती है, क्योंकि आकाशवाणी मे तो केवल आवाज प्रसारित होती है और जनता को जिनकी आवाज सुनते रहने का अभ्यास होता है उसे जब तक आवाज पात्रों के ठीक अनुरूप न हो तब तक नाटक का आकाशवाणी द्वारा प्रसारित होना अस्वाभाविक होता है। रंगमंच पर यह बात बहुत दूर तक इसलिये ढक जाती है कि रंगमंच पर जो पात्र आते हैं वे सच्चे पात्रों के ठीक अनुरूप होते हैं।

ललित साहित्य में चाहे नाटक हो चाहे उपन्यास और चाहे कहानी उसका विकास बिना संघर्ष के नहीं होता। यह संघर्ष बाह्य और आंतरिक दोनों प्रकार का हो सकता है। भूदान-यज्ञ नाटक का संघर्ष किस तरह का हो यह मेरे सामने दूसरी समस्या थी। बहुत कुछ विचारने के पश्चात् मैं इस निर्णय पर पहुंचा कि दार्शनिक दृष्टि से यथार्थ में यह संघर्ष भूदान-यज्ञ के दर्शन और साम्यवादी दर्शन का है। इसलिये मैंने इस नाटक में यही संघर्ष रखा है।

कथोपकथन ही नाटक के विषय प्रतिपादन का एकमात्र साधन है। श्री विनोबाजी, राजेन्द्रप्रसादजी, जवाहरलालजी, जयप्रकाशजी आदि के मुख से जो बातें मैंने कहलायी हैं उनमें इस बात का बहुत ध्यान रखना पड़ा है कि वे उनके विचारों और भावों के प्रतिकूल न जावें। विनोबाजी के मुँह से जो बातें कहलायी गई हैं उनमें से तो बहुत अधिक

ऐसी है कि जो उन्होने कही न कहीं अपने भाषणो या वार्तालाप में कही है। हा, यह मुझे अवश्य करना पडा है कि उनकी किसी स्थान पर कही हुई किसी बात को मुझे किसी अन्य स्थान पर उनसे कहलानी पडी है। कुछ यही बात मुझे कुछ घटनाओ के सबध में भी करनी पडी है। कुछ पीछे की घटनाए पहले और कुछ पहले की पीछे करनी पडी है। इतनी स्वतत्रता तो लेने का किसी भी लेखक को हक है। बिना इसके नाटक का ठीक गठन हो नही सकता था। नाटक के कथोपकथन के विषय में विद्वानो के बीच एक भ्रम और फैला हुआ है कि नाटक का कोई भी भाषण लम्बा नहीं होना चाहिये। कौन कथन कैसा हो या वह किस अवसर पर कहा जाता है इस बात पर निर्भर है, जैसे यदि किसी सभा में कोई भाषण दे रहा हो तो वह भाषण यदि छोटा होगा तो अस्वाभाविक हो जायगा। यही बात कुछ अन्य अवसरो के लिये भी कही जा सकती है। स्वाभाविकवाद के प्रवर्तक नार्वे के ईबसन और उनके अनुयायी बर्नार्डशा तथा गाल्सवर्दी आदि नाटककारो के अनेक नाटको में अनेक स्थानो पर लम्बे-लम्बे भाषण मिलते है। इस नाटक में भी कुछ स्थानो पर लम्बे भाषण है। उनके स्थान पर यदि भाषण छोटे होते तो वे अस्वाभाविक होते और उनमें जिस बल की आवश्यकता है वह न रहकर निर्बल हो जाते। इबसन ने स्वाभाविकता के लिये स्वगत कथनो को नाटक से बिलकुल निकाल दिया था, पर कुछ आधुनिक नाटककारो ने, जिनमें अमरीका के ओ नील प्रमुख हैं, स्वगत कथन को स्वाभाविक ढग से लिखना आरभ किया है। मैने भी अपने कुछ नाटकों में इस प्रकार के स्वगत कथन लिखने का प्रयत्न किया है। इस नाटक में भी एक स्थान पर इस प्रकार का स्वगत कथन है।

इस नाटक के अन्तिम गीत को छोडकर, जो मेरी पुत्री रत्ना कुमारी ने इसी नाटक के लिए लिखा है, शेष गीत इस नाटक के

लिए नहीं लिखे गये हैं। भूदान-यज्ञ आन्दोलन में जो गीत बहुत लोकप्रिय हुए हैं उन्हें इस नाटक में जैसा का तैसा ले लिया गया है। प्रातःकाल और सायंकाल की आश्रम की प्रार्थनाएं भी इसमें आ गई है।

मैं इस बात का पक्षपाती रहा हूं कि नाटक के साथ सामूहिक दृश्य सिनेमा के द्वारा प्रदर्शित किये जायं। विदेशों में मैंने इस प्रकार के नाटक देखे जिनमें नाटक के साथ फिल्म का भी प्रदर्शन होता था। इस नाटक में भी कुछ स्थानों पर फिल्मों का प्रदर्शन रक्खा है। भूदान-यज्ञ आन्दोलन अभी बहुत समय चलने वाला है। मेरी राय है कि इस प्रकार के कुछ फिल्म बनाये जायं, जैसे फिल्मों का इस नाटक में जिक्र है और वे प्रोजेक्टरों के द्वारा इस नाटक के साथ तथा स्वतंत्र रूप से भी दिखाये जायं। पर यदि यह तुरंत संभव नहीं है तो इन फिल्मों के न होने के कारण इस नाटक का अभिनय नहीं रुकेगा। इन फिल्मों में प्रदर्शित दृश्यों की चर्चा संभाषण में की जा सकती है।

इस नाटक में भूदान यज्ञ का भूत और वर्तमान तो है ही, इसी के साथ भविष्य की भी कल्पना की गयी है। इसलिये यह सन् १९६० के अन्त तक का है।

किसी श्रेष्ठ नाटक में जिन गुणों का होना आवश्यक है इसका दिग्दर्शन मैंने अपनी 'नाट्यकला मीमांसा' पुस्तिका में तथा और भी कुछ स्थानों पर किया है। मेरे ही द्वारा कथित नाटक के गुणों की कसौटी पर कसने से भी यह नाटक कहां तक खरा उतरता है, इस संबंध में मुझे कुछ भी कहने का अधिकार नहीं है। यदि यह नाटक सफल हुआ तो इसका श्रेय होगा भूदान-यज्ञ को और यदि विफल हुआ तो इसका जिम्मेदार मैं होऊंगा।

अंत में एक बात और लिखकर इस निवेदन को समाप्त करता हूं।

इस नाटक में विनोबाजी, राजेन्द्रप्रसादजी, जवाहरलालजी और जयप्रकाशनारायणजी के मुख से मैंने जो कुछ कहलाया है उन अंशों को चारों ही महानुभाव या तो सुन या पढ चुके है और चारों की स्वीकृति के बाद ही ये अंश इस नाटक में प्रकाशित किये जा रहे है।

जबलपुर,
बसन्त पचमी सवत् २०१० गोविन्ददास

पात्र, स्थान, समय

मुख्य पात्र—

- विनोबा भावे
- राजेन्द्रप्रसाद
- जवाहरलाल नेहरू
- जयप्रकाशनारायण
- रामचन्द्र रेड्डी—जिसने पहला भूदान दिया
- दामोदरदास मूंदड़ा—विनोबाजी के सेक्रेटरी
- कुछ कांग्रेसी
- कुछ प्रजा समाजवादी
- कुछ जनसंघी, रामराज्य परिषद् वाले और हिन्दू सभाई
- कुछ साम्यवादी
- कुछ विदेशी पत्रकार
- कुछ शहराती और देहाती नागरिक

मुख्य स्थान—

- उत्तरप्रदेश में गोरखपुर जिले का एक ग्राम
- तेलंगाना में नालगुंडा
- वर्धा में पौनार का परमधाम आश्रम
- तेलंगाना में पोचमपल्ली
- नई दिल्ली में प्रधान मंत्री का गृह

कलकत्ते में विक्टोरिया मेमोरियल का बाग
बिहार में गया नगर और गया जिले के गाँव
बंबई में जहाजी बंदर
सेवाग्राम

समय—

ईस्वी सन् १९५१ से सन् १९६० तक

उपक्रम

स्थान—उत्तरप्रदेश के गोरखपुर जिले का एक गाव

समय—रात्रि

(पीछे की ओर एक सिनेमा के फिल्म देखने की सफेद चादर लगी हुई है उसके सामने जमीन पर एक जाजम बिछी है, जिस पर कुछ शहराती और देहाती स्त्री, पुरुष और बच्चे बैठे हैं। इस जाजम पर एक ओर सिनेमा की फिल्म दिखाने की मशीन रखी है। एक अधेड़ अवस्था का व्यक्ति, जो खादी का कुर्ता और धोती पहने हुए है तथा सिर पर गांधी टोपी लगाये है, खड़ा हुआ इस समुदाय को कह रहा है।)

खड़ा हुआ व्यक्ति—भारत को स्वराज्य मिले वर्षों बीत गये। स्वराज्य प्राप्त करना छोटा काम था यह मैं नही कहता, लेकिन स्वराज्य पाकर इस देश की जनता जिस सुख की कल्पना कर रही थी, वह सुख उसे अब तक नही मिला। कहिये, ठीक कहता हू या गलत ?

कुछ व्यक्ति (एक साथ)—बिलकुल ठीक कहते है, बिलकुल ठीक कहते हैं।

खड़ा हुआ व्यक्ति—इसकी मुख्य वजह है देश की गरीबी। उसे दूर करने की कोशिश हमारी सरकार द्वारा नही की जा रही है, यह मेरा भी कहना नही है।

एक व्यक्ति—क्या कर रही है सरकार ?

कुछ व्यक्ति (एक साथ)—कुछ भी नही, कुछ भी नही।

खड़ा हुआ व्यक्ति—नही ऐसी बात नही है, सरकार बहुत कुछ कर रही है, परन्तु इतने पर भी गरीबी दूर नही हो रही है।

एक व्यक्ति–अरे ! इह रजवा से तो अगरेजो रजवा ही अच्छा रहा।

खडा हुआ व्यक्ति––(उत्तेजित होकर) यह आप क्या कह रहे हैं ? स्वराज्य से अगरेजी राज्य अच्छा ! यह तो हमें स्वप्न में भी नही सोचना चाहिये। हम भूल जाते हैं अंग्रेजी राज्य की जलियां वाले बाग की घटना। हमें याद नहीं रहा है बंगाल का वह मनुष्य द्वारा बनाया हुआ अकाल जिसमें पैंतीस लाख नर-नारी और बच्चे भूख से तड़प-तड़पकर कुत्तो और बिल्लियों की मौत मर गये थे। फिर अगर विदेशी राज्य अपने राज्य से अच्छा भी हो तो वह एक मिनिट के लिये भी हमें बर्दाश्त न होना चाहिये। दरअसल स्वतंत्रता नून, तेल, लकड़ी की तखड़ी पर नहीं तौली जा सकती। अगर आजादी और उसकी रक्षाके लिए हमारे आज छत्तीस करोड मानवोंमें पैंतीस करोड निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे का भी बलिदान करना पड़े और स्वतंत्र भारत में एक स्वतंत्र व्यक्ति भी बचे तो भी हमें पीछे नहीं हटना है।

(जोर की करतल ध्वनि)

खडा हुआ व्यक्ति––खुशी हुई मुझे मेरी इस बात पर आप सबके इस समर्थन से। तो अंग्रेजी राज्य और स्वराज्य का आप मिलान मत कीजिये। मैं सत्य और अहिंसा मे पूरा विश्वास रखता हू, एक शांति-प्रिय आदमी भी माना जाता हू, किन्तु जब मैं स्वराज्य और अंग्रेजी राज्य का किसी को मिलान करते सुनता हू तब मेरा खून खौलने लगता है।

कुछ व्यक्ति––महात्मा गांधी की जय।

कुछ व्यक्ति––स्वतंत्रता अमर हो।

खडा हुआ व्यक्ति––इस तरह स्वराज्य के लिये महान गर्व का अनुभव करते रहने पर भी हमारे देश मे जो भीषण गरीबी

है उससे मैं आंखे नहीं मूंद सकता और न किसी को कह सकता कि वह इस गरीबी की परवाह न करे। इस गरीबी को पूरी तौर से पहचान इसे दूर करने के लिये हमें सारी कोशिशें करनी हैं।

कुछ व्यक्ति—बेशक। बेशक।

खड़ा हुआ व्यक्ति—यह देश कितना गरीब है इसकी जानकारी के लिये आपका उत्तरप्रदेश, जो इस देश का सबसे बड़ा सूबा है, उसके सबसे बड़े जिले गोरखपुर के गांव का ही एक दृश्य मैंने सिनेमा के एक फिल्म में उतारा है।

एक व्यक्ति—अच्छा, हमारा जिला गोरखपुर?

खड़ा हुआ व्यक्ति—(बीच ही में) जी हां, यह दृश्य है उन गरीबों का गोबर में से अनाज के दाने चुनने, उन्हें धोकर सुखाने, फिर अपनी रूखी सूखी रोटियों के लिए उन दानों के आटा पीसने और उस आटे की रोटियां खाने का, जिसका हाल आप लोगों ने भी सुना होगा।

एक व्यक्ति—हां, हां, सुना है।

दूसरा व्यक्ति—सुना क्या आंखों से देखा है। और इस दृश्य को देखकर आंखों ने चौधारे आंसू बहाये हैं।

तीसरा व्यक्ति—(खड़े होकर, खड़े हुए व्यक्ति से) शायद आप इस सम्बन्ध में एक बात न जानते होंगे, जो मुझे मालूम है।

खड़ा हुआ व्यक्ति—कौन सी?

तीसरा व्यक्ति—जो ये गोबर में से अनाज के दाने चुने जाते हैं, उनका भी ठेका होता है, जिसके खेत में से गोबर के दाने चुने जाते हैं उसे जो सबसे ज्यादा कीमत देता है उसे ही गोबर में से दाने चुनने का अधिकार मिलता है।

खड़ा हुआ व्यक्ति—खूब जानता हूँ। गोबर के उस नीलाम का दृश्य भी इस फिल्म में दिखाई देगा। (लम्बी सांस लेकर) जिस भूमि पर जन्म लेने को कभी देवता तरसते थे उस भूमि के निवासी अब जितने गरीब हो गये हैं उतने शायद दुनिया में किसी देश के नहीं। (आंखों में आंसू भर आते हैं। कुछ ठहर कर) अच्छा देखिये, अब फिल्म देखिये।

(यह व्यक्ति फिल्म दिखाने की मशीन के निकट बढ़ता है। अंधेरा हो जाता है। पीछे की सफेद चादर पर फिल्म दिखाई देता है। एक खेत के गोबर में से अनाज के दाने चुनने के ठेके का नीलाम हो रहा है। कुछ आधे नंगे, चिथड़े पहने हुए गरीब बोलियां बोलते हैं। सबसे ऊंची बोली वाले को ठेका मिलता है। दृश्य बदलकर गोबर में से जल्दी जल्दी दाने बिनने का दृश्य दिखाई देता है। उसी प्रकार के अर्धनग्न नरनारी और बच्चे गोबर में से जल्दी जल्दी में दाने बीनते दिखते हैं। कभी कभी कोई बच्चा आंख बचाकर गोबर के सने उन दानों में से कुछ दानों को खा भी लेता है। फिर दृश्य बदलता है। ये दाने धोये और पीसे जाते हैं। फिर दृश्य बदलकर इनके आटे की रोटियां बनती दिखाई देती हैं और उन रोटियों के बटवारे पर भी बच्चों में झगड़ा झंझट होता है। इस फिल्म के साथ साथ सूरदास का निम्नलिखित गान चलता रहता है)

गीत

सुने री मैंने निर्बल के बल राम।
पिछली साख भरूं संतन की अड़े संवारे काम॥
जब लग गज बल अपनो बरत्यो नेक सर्यो नहिं काम।
निर्बल ह्वै बल राम पुकार्यो आये आधे नाम॥
द्रुपद सुता निर्बल भयि ता दिन गह लाये निज धाम।

दुःशासन की भुजा थकित भयी वसन रूप भये श्याम ॥
अपबल तपबल और बाहुबल चौथो हैं बल दाम ।
सूर किशोर कृपा तें सब बल हारे को हरिनाम ॥

यवनिका

पहला अंक

पहला दृश्य

स्थान—तैलगाने में नालगुडा

समय—अर्द्धरात्रि

(एक बियाबान जगल में कुछ साम्यवादियो की गुप्त बैठक हो रही है। जहां यह बैठक हो रही है उसीके निकट एक बडा-सा नाला बह रहा है)

एक—हा, मैं कहता हू और जितनी भी मुझमें ताकत है उस सारी ताकत के साथ कहता हू कि जब जो जमीन जोतते हैं उनके पास एक डेसिमल जमीन नही तब जिन्होने अपनी जमीन देखी तक नही है, उन्हें सैकडो हजारो और लाखो एकड जमीन पर अपना कब्जा रखने का कोई अधिकार नही है।

दूसरा—मैं आपसे भी आगे जाना चाहता हू। मेरी राय में तो किसी ऐसे व्यक्ति के पास जो खुद जमीन नही जोतता एक डेसिमल जमीन भी नही रहना चाहिये।

तीसरा—ठीक, जमीन उसकी जो उसे जोते।

चौथा—नही, नही मैं तो यह कहूगा कि जमीन किसी की नही। दुनिया पाच तत्वो से बनी है, पृथ्वी, जल, वायु, तेज और आकाश। जब दूसरे चार तत्वो पर किसी का अधिकार नही तब पृथ्वी पर किसी व्यक्ति का स्वामित्व कैसे रह सकता है?

पाचवा—पर, भाई, आकाश छोडकर जल, वायु और तेज पर भी मानव ने अपना अधिकार जमाया है। जल से वह कितनी सिचाई

करता हूं, वायु से कितनी तरह की मशीनें चलती हैं और तेज से तो आज की वैज्ञानिक दुनिया में जितने काम होते हैं, शायद ही किसी दूसरे तत्व से होते हों।

छठवां—हां, बिजली की शक्ति के सारे काम यथार्थ में तेज तत्व के काम ही हैं।

पांचवां—ठीक, और यदि जमीन पर किसी का अधिकार न रहेगा तो संसार के सारे उत्पादन ही बन्द हो जायगे।

सातवां—इसीलिये हमारा साम्यवाद कहता है कि जमीन पर व्यक्ति का अधिकार न रहकर राज्य का अधिकार होना चाहिये।

पहला—इस राज्य का? इस राज्य का अधिकार, जो जमींदारों का, पूंजीपतियों का, हर प्रकार के शोषणकर्त्ताओं का राज्य है।

दूसरा और तीसरा (एक साथ)—इसीलिये में हम कहते हैं जमीन उसकी जो उसे जोते।

पहला—यह ठीक है। रूस और चीन में भी अब तक जमीन सरकार की नहीं हो पायी है। वह उन ही की है जो उसे जोतते हैं।

आठवां—मैं तो दोनों देशों से होकर हाल ही मे लौटा हू। जो जमीन नही जोतते उनसे जमीन ले ली गयी। रूस मे ज्यादातर कलैक्टिव फार्म है। चीन में हाल ही में जो जमीन न जोतकर उसके झूठे मालिक बने हुए थे, उनसे अधिकारा जमीन लेकर जोतने वालो को बाट दी गई है। रूस मे कलैक्टिव फार्मों पर वहा की जमीन के स्वामी स्वय सारा काम करते हैं और चीन में जिन्हें जमीन बाटी गयी है वे लोग।

नवां—पर भाई, इन देशों की हालत और हमारे देश की हालत में अन्तर है।

आठवां—कैसा?

नवां—रूस और चीन में गया तो नहीं, पर वहां की सारी स्थिति का साहित्य मैंने बारीकी से पढा है। वहां पहले या तो साम्यवादी अथवा साम्यवादियों के नेतृत्व की सरकारें कायम हुई और उन सरकारों ने जमीन के मसले को हल किया। यहां तो जैसा अभी एक भाई ने कहा जमींदारों, पूंजीपतियों और शोषणकर्ताओं की सरकार है।

दसवां—तभी तो मैंने कई बार कहा कि इस प्रश्न को हम हल करेंगे।

नवां—कैसे ?

दसवां—वही योजना आपके सामने रखनी है।

बहुत से व्यक्ति (एक साथ)—रखिये। जरूर रखिये। फौरन रखिये।

एक व्यक्ति—हां, तत्काल। जमीन का प्रश्न दुनिया में सदा ही महत्व का रहा है।

दूसरा व्यक्ति—बेशक, न जाने कितने युद्ध जमीन के कारण ही लडे गये, न जाने कितनी क्रांतियां जमीन के कारण ही हुई।

तीसरा व्यक्ति—और हमारे देश का तो यह सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक प्रश्न है, क्योंकि यहां की आबादी में तो नब्बे फी सदी आबादी जमीन पर ही अपना निर्वाह करती है।

दसवां—मेरी योजना खून की नदियां बहाने वाली योजना है।

(कुछ व्यक्ति चौंक पडते हैं)

दसवां—लीजिये, आप तो अभी से चौंक पडे। अरे! ससार के इतिहास में कोई भी महत्वपूर्ण काम बिना खून बहे हुआ है ?

कुछ आदमी (एक साथ)—कभी नहीं, कभी नहीं।

दसवां—फिर यह महान कार्य बिना खून बहे कैसे हो सकता है ? लेकिन जब मैं खून बहने की बात करता हूं तब यह भी बता देना चाहता

हू कि किसका खून बहना है।

एक व्यक्ति—(बीच ही में)—उनका ही न जिनके शरीरों का खून दूसरों का खून चूसने के कारण बढ़ा है ?

दसवां—बेशक, उन्हीं का। हां, उनके खून के साथ हमें भी अपना खून बहाने को तैयार होना होगा। जो सद् सिद्धांतों की रक्षा करना चाहते हैं, जो दुनिया के शोषण और दलन को समाप्त करना चाहते हैं, जो अप्राकृतिक आर्थिक असमानता को उखाड़कर फेंक देना चाहते हैं, जो सबको समान अवसर देने वाले समाज रचना चाहते हैं उन्हें इन सिद्धान्तों के विरुद्ध आचरण करने वाले नरपिशाचों के साथ अपने खून का बलिदान करने को भी तैयार होना पड़ता है। युद्ध और क्रांति की चण्डी के खप्पर पर अशुद्ध और पातकी खून के साथ ही शुद्ध और पुण्यमय खून भी चढ़ता है। वह अशुद्ध और पातकी खून बिना इस शुद्ध और पुण्यमय खून के बलिदान के योग्य नहीं बन पाता। हां, पहली प्रकार का खून लाल होने पर भी इतिहास में काला दिखाई देता है, पर दूसरे प्रकार के लाल खून पर इतिहास में माथा चढ़ जाता है।

एक व्यक्ति—ठीक, ठीक कह रहे हैं आप।

दसवां—संसार में मानव का सर्वश्रेष्ठ स्थान उसकी ज्ञानशक्ति का कारण है। है न ?

कुछ व्यक्ति (एक साथ)—बिल्कुल।

दसवां—विचार मानव ही कर सकता है, अन्य प्राणी नहीं।

एक व्यक्ति—हां, कोई प्राणी विचार करने की शक्ति नहीं रखता।

दसवां—इसीलिये कोई भी विचारपूर्ण सामूहिक कृति, मनुष्यों में होती है, अन्य प्राणियों में नहीं।

एक व्यक्ति—ठीक ।

दसवां—किसी भी क्रान्ति का अन्य दार्शनिक विचार के रूप में स्वागत होता है । जब इस दार्शनिक विचार के कार्यक्रम में परिणत होने का मौका आता है तब सशस्त्र शक्ति की उत्पत्ति होती है । इसी शक्ति के द्वारा मानव समाज उत्तरोत्तर उन्नति के सोपान पर चढता जाता है । इस यात्रा में दिन और रात्रि दोनो पडते है । रात्रि को कई बार यह शक्ति सो भी जाती है । पर यह विश्राम होता है आगे की यात्रा के लिये और अधिक ताकत प्राप्त करने को। इस यात्रा में बाधाओं के रोडे भी आते है । यह शक्ति उन रोडो को चूर चूर करती हुई आगे बढ़ती है । जो सच्चे मर्द है वे इस यात्रा में भाग लेते है

एक व्यक्ति (बीच ही में)—कहिये हम में से कितने मर्द है। कितने नामर्द ?

अधिकांश लोग—(एक साथ) सब मर्द है मर्द ।

एक व्यक्ति—नामर्द यहा आ ही कैसे सकते थे ?

दसवां—तो अपने खून से प्रतिज्ञा लिखिये कि हम इन शोषण करने वालो का खून बहायेंगे ।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) अवश्य बहायेंगे, अवश्य बहायेंगे ।

दसवां—और इस क्रान्ति के सफल करने में अगर अपने खून की जरूरत होगी तो सहर्ष अपना भी बलिदान कर देंगे ।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) जरूर । जरूर ।

दसवां—तिलगाने में जो जोतते नही उनके पास जमीन न रहेगी । उनकी जमीन जोतने वालो में बटेगी ।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) ठीक, बिलकुल ठीक ।

दसवां—और अगर सरकार हमारी इस क्रान्ति के मार्ग में रोडा बनकर आयगी तो उस रोड़े को भी चूर-चूर कर हम अपनी यात्रा में आगे बढेंगे।

एक व्यक्ति—जरूर। सरकार को तो सबसे पहले चूर चूर करेंगे।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) तो लाइये, हम अपने खून से प्रतिज्ञा लिखने को तैयार है।

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—मध्यप्रदेश के वर्धा जिले में पौनार गाव का परमधाम आश्रम

समय—उषःकाल

(विनोबाजी एक तख्त पर बैठे हुए प्रातःकाल की आश्रम की प्रार्थना में दत्त चित हैं। स मने जमीन पर स्त्री पुरुषों का एक छोटा सा समुदाय उपस्थित है। निकट ही तख्त के नीचे उनके सेक्रेटरी दामोदरदास मूंदड़ा बैठे हैं। आश्रम की प्रसिद्ध प्रातःकालीन उपासना हो रही है)

प्रातःकाल की उपासना

१

ॐ पूर्ण है वह पूर्ण है यह,
पूर्ण से निष्पन्न होता पूर्ण है।
पूर्ण में से पूर्ण को यदि लें निकाल

शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

१ हरिः ॐ ईश का आवास यह सारा जगत्,
जीवन यहां जो कुछ उसी से व्याप्त है।
अतएव करके त्याग उसके नाम से
तू भोगता जा वह तुझे जो प्राप्त है।
धन की किसी के भी न रख तू वासना।

२ करते हुए ही कर्म इस संसार में
शत वर्ष का जीवन हमारा इष्ट हो।
तुझ देहधारी के लिये पथ एक यह,
अतिरिक्त इससे दूसरा पथ है नहीं।
होता नहीं है लिप्त मानव कर्म से,
उससे चिकटती मात्र फल की वासना।

३ मानी गई हैं योनियां जो आसुरी,
छाया हुआ जिनमें तिमिर घनघोर है,
मुड़ते उन्हीं की ओर मरकर वे मनुज
जो आत्मघातक शत्रु आत्मज्ञान के।

४ चलता नहीं, फिरता नहीं, है एक ही -
- वह आत्मतत्व सवेग मन से भी अधिक,
उसको कहीं भी देव धर पाते नहीं,
उनको कभी का वह स्वयं ही है धरे।
वह उन सभी को, दौड़ते जो जा रहे,
ठहरा हुआ भी छोड़ पीछे ही गया।
वह "है", तभी तो सचरित है प्राण यह
जो कर रहा क्रीड़ा प्रकृति की गोद में।

५ वह चल रहा है और वह चलता नहीं,

वह दूर है, फिर भी निरन्तर पास है ।
भीतर सभी के बस रहा सर्वत्र ही,
बाहर सभी के है तदपि वह सर्वदा ।
६ जब जो निरन्तर देखता है, भूत सब
आत्मस्थ ही हैं, और आत्मा दीखता
सम्पूर्ण भूतों में जिसे, तब वह पुरुष
ऊबा किसी के प्रति नहीं रहता कहीं ।
७ ये सर्वभूत हुए जिसे हैं आत्ममय,
एकत्व का दर्शन निरन्तर जो करे,
तब उस दशा में उस सुधीजन के लिए
कैसा कहां क्या मोह, कैसा शोक क्या ?
८ सब ओर आत्मा घेरकर आत्मज्ञ सी
है बैठ जाता, प्राप्त कर लेता उसे—
जो तेज से परिपूर्ण है, अशरीर है,
यों मुक्त है तन के व्रणादिक दोष से,
त्यों स्नायु आदिक देहगुण से भी रहित—
जो शुद्ध है, बेधा नहीं अघ ने जिसे ।
वह क्रान्तिदर्शी, कवि, वशी, व्यापक, स्वतंत्र
सब अर्थ उसके सध गये हैं ठीक से,
सुस्थिर रहेंगे जो चिरन्तन काल में ।
९ जो जन अविद्या में निरन्तर मग्न हैं,
वे डूब जाते हैं घने तमसान्ध में ।
जो मनुज विद्या में सदा रममाण है,
वे और घन तमसान्ध में मानो धसे ।
१० यह आत्मतत्व विभिन्न विद्या से कथित,
एवं अविद्या से कथित है भिन्न यह ।

यह तथ्य हमने धीर पुरुषों से सुना,
जिनसे हुआ उस तत्व का दर्शन हमें।

११ विद्या, अविद्या–इन उभय के साथ में
हैं जानते जो मनुज आत्मज्ञान को,
इसके सहारे तर अविद्या से मरण
वे प्राप्त विद्या से अमृत करते सदा।

१२ जो मनुज करते हैं निरोध-उपासना,
वे डूब जाते हैं घने तमसान्ध में।
जो जन सदैव विकास में रममाण हैं,
वे और घन तमसान्ध में मानो धसे।

१३ वह आत्म तत्व विकास से है भिन्न ही
कहते उसे ! व विभिन्न निरोध से।
यह तथ्य हमने धीर पुरुषों से सुना,
जिनसे हुआ उस तत्व का दर्शन हमें ?

१४ ये जो विकास-निरोध,—इन दो के सहित
हैं जानते जो मनुज आत्मज्ञान को,
इसके सहारे मरण पैर निरोध से
पाते सदैव विकास के द्वारा अमृत।

१५ मुख आवरित है सत्य का उस पात्र से
जो हेममय है, विश्व-पोषक हे प्रभो,
मुझ सत्य-धर्मा के लिए वह आवरण
दूर कर, जिससे कि दर्शन कर सकूं।

१६ तू विश्व पोषक है तथा तू ही निरीक्षक एक है,
तू कर रहा नियमन तथा तू ही प्रयतन कर रहा,
पालन सभी का हो रहा तुझसे प्रजा की भांति है।
निज पोषणादिक रश्मियां तू खोलकर मुझको दिखा,

फिर से दिखा एकत्र त्यों हों जोड़ करके तू उन्हें ।
अब देखता हूं रूप तेरा तेजयुत कल्याणतम,
वह जो परात्पर पुरुष हैं, मैं हूं वही ।
१७ यह प्राण उस चेतन अमृतमय तत्व में
हो जाय लीन, शरीर भस्मीभूत हो ।
ले नाम ईश्वर का अरे संकल्पमय
तू स्मरण कर, उसका किया तू स्मरण कर,
सन्यस्त करके सर्वथा सकल्प निज
हे जीव मेरे, स्मरण करता रह उसे ।
१८ हे मार्गदर्शक दीप्तिमन्त प्रभो, तुझे
हैं ज्ञात सारे तत्व जो जग में प्रथित ।
ले जा परम आनन्दमय की ओर तू
ऋजु मार्ग से, हमको कुटिल अघ से बचा ।
फिर फिर विनय नत नम्र वचनों से तुझे ।
फिर फिर विनय नत नम्र वचनों से तुझे ।
ॐ पूर्ण है वह पूर्ण है यह,
पूर्ण से निष्पन्न होता पूर्ण है ।
पूर्ण में से पूर्ण को यदि लें निकाल
शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ तत्सत् श्री नारायण तू, पुरुषोत्तम गुरु तू ।
सिद्ध-बुद्ध तू, स्कन्द विनायक सविता पावक तू ।।
ब्रम्ह मज्द तू, यह्व शक्ति तू, ईशु-पिता प्रभु तू ।
रुद्र विष्णु तू, राम कृष्ण तू, रहीम ताओ तू ।।
वासुदेव गो-विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू ।

अद्वितीय तू, अकाल निर्भय आत्म-लिंग शिव तू ॥

३

नारायण नारायण जय गोविन्द हरे ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥ धुन

४

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रम्हचर्य असग्रह ।
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन ॥
सर्वधर्म समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना ।
विनम्र व्रत निष्ठा से ये एकादश सेव्य हैं ॥

(उपासना समाप्त होने पर एकत्रित समुदाय में से दो व्यक्ति खड़े हो विनोबाजी की ओर बढ़ते हैं)

एक व्यक्ति—(विनोबाजी के पैरों पर सिर रखते हुए) त्राहि, त्राहि, आचार्य !

दूसरा व्यक्ति—(अपने साथी के सदृश्य ही विनोबाजी के पैरों पर सिर रखते हुए) त्राहि, त्राहि आचार्य !

विनोबाजी—(कुछ चौंककर खड़े हो पैर पीछे को हटाते हुए तथा उन दोनों की पीठ थपथपाते हुए) उठो, उठो, कहां से आये हो आप लोग ? क्या संकट है ?

एक व्यक्ति—तिलगाने में नालगुंडा से आये हैं हम लोग ।

दूसरा व्यक्ति—भारी संकट ! महान आपत्ति आयी है हम लोगों पर !

विनोबाजी—(पुन तख्त पर बैठते हुए) बैठो, बैठो, बताओ कैसा संकट, कैसी आपत्ति ?

(दोनो व्यक्ति जमीन पर बैठ जाते है। उपस्थित समुदाय उत्सुकता से इन दोनों की ओर देखता है)

एक व्यक्ति—महाराज, हम दोनो का सारा कुटुम्ब—पत्नी पाच बच्चे

दूसरा व्यक्ति—निर्दोष पत्नी, महाराज नन्हें नन्हें कमल के सदृश, गुलाब के मानिन्द बच्चे

(दोनों रोने लगते हैं)

विनोबाजी—हा, क्या क्या हुआ तुम्हारी पत्नियो को तुम्हारे बच्चो को ?

पहला—दुष्टो ने मार डाला, भगवन । (और जोर से रोने लगता है)

दूसरा—छुरिया भोक-भोक कर, घाव कर कर, अग प्रत्यग काट-काटकर मार डाला, आचार्य । (हिचकने लगता है)

(कुछ देर निस्तब्धता)

विनोबा—(गला साफ करते हुए कुछ भर्राये स्वर में) शान्त हो, बन्धुओ, शान्त हो । किसने मार डाला, क्यो मार डाला? पूरा हाल बताओ ।

पहला—(कुछ शान्त होते हुए) साम्यवादियों ने, देव । हमारी जमीन के लिये ।

विनोबा—अच्छा, समझा । कुछ दिनो से तिलगाने से इसी तरह की खबरे मिल रही है । भूमिहीन भूमिपतियो की जमीनो पर कब्जा करने के लिये वहा मार काट कर रहे हैं । आपका कुटुम्ब भी इसी का शिकार हो गया ।

दूसरा—पर, महाराज, भूमिपतियो ने किसी की भूमि चोरी

कर या डाका डालकर हरण नहीं की है। कानून के अनुसार वे जमीन के मालिक हैं।

पहला—और फिर, आचार्य, बेचारी स्त्रिया और नन्हें नन्हें बच्चे तो उस जमीन के मालिक भी न थ। आह किस तरह किस क्रूरता से मारा गया है उन्हे! आप सुनेंगे पूरा हाल तो आपके भी रोम खडे हो जायगे। हम लोग तो घर नहीं थे, एक ब्याह मे गये थे। जब घर लौटे, हमें मिली हमारी पत्नियां और बच्चे मरे हुए। मरे हुओ के भी समूचे शरीर नहीं थे। अग प्रत्यग काटे गये थे, देव। कहीं सिर था और कहीं धड! कहीं भुजाए थीं, कहीं हाथ! कहीं टागे थीं, कहीं पैर!

दूसरा—जिन माताओ ने अपने खून का दूध बना-बनाकर उन बच्चो को पाला पोसा था, उन माताओ और बच्चों का खून मिलकर, एक साथ बहकर हमारे घरो के आगनो में खून और मास कीचड बन गया था! ओह! कैसा भयानक .. कैसा वीभत्स था वह सारा दृश्य!

पहला—मैं तो लडाई पर भी गया हू। लडाई के खूनी दृश्य भी मैने देखें हैं, पर लडाई में स्त्रियो और मासूम बच्चो का इस तरह खून नहीं बहता। लडाई के दृश्य सिपाहियों के मनो में वीरता की उत्पत्ति करते हैं। लडाई में बहता हुआ खून भीतर के खून को उत्तेजित करता है। पर हमारे घरो का यह दृश्य, वहा पर बहा हुआ स्त्रियो और बच्चो का वह खून बहादुर से बहादुर व्यक्ति को भी कपा देगा! थर्रा देगा!

(कुछ देर फिर निस्तब्धता। विनोबाजी और सारा समुदाय उन दोनों व्यक्तियों की ओर एक टक देखता है)

विनोबा—मैंने सुना वहा अनेक घरो और कुटुम्बो का यही हाल हुआ है।

पहला—हजारो घरा और कुटुम्बो का, आचार्य। सरकारी

आकडो के अनुसार आहतो की सख्या तीन हजार है पर यथार्थ में दस हजार के भी ऊपर है ।

दूसरा—कितने लोग मारे गये । कितनी स्त्रिया बेवा हो गई ! कितने बच्चे अनाथ हो गये ! कितने कुटुम्बके कुटुम्ब मिट गये ! कितने घरो में ताले पड गये !

पहला—और करोडों रुपया खर्च करने पर भी सरकार स्थिति को काबू में न ला सकी ।

दूसरा—हा, साम्यवादी भूमिपतियो को मार काटकर उनकी भूमि ले जिनके पास भूमि नही है उनको देते हैं। जब सरकार को इसकी खबर मिलती है, सरकारी पुलिस और फौजें वहा पहुच इनसे भूमि छीन फिर से जिनकी भूमि थी उन्हें देने की कोशिश करती है। पर वे भूमि-स्वामी या तो मर चुके होते हैं या भाग गये होते हैं। न भूमि पुराने स्वामियो के पास रह पाती है और न नयो के।

पहला—महाराज, सारा तिलगाना जन और धन दोनो दृष्टिया से अल्प समय में ही उजड गया है ।

दूसरा—लोग जान हथेली पर रखे भाग रहे हैं । सारा क्षेत्र आर्तनाद से गूंज रहा है । आहतो के प्रतिनिधि रूप हम आपकी सेवा में आये हैं । आप तिलगाने का त्राण करें ।

विनोबा—(कुछ आश्चर्य से) मैं ? मैं इस सबध में क्या कर सकूंगा, भन्नुओ ?

पहला—महात्मा गांधी के महान मत्र हृदय-परिवर्तन का प्रयोग ।

(विनोबाजी का सिर झुक जाता है । सब लोग विनोबाजी की ओर देखते हैं । कुछ देर निस्तब्धता)

दूसरा—देखिये, महाराज, सर्वस्व स्वाहा होने पर भी हम लोग

हृदय पर पत्थर रख इतनी दूर आपकी सेवा में इसलिये आये हैं कि हमारा विश्वास है कि यह खूनी खेल केवल हृदय परिवर्तन से ही समाप्त हो सकता है।

पहला—महात्मा गांधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह के समय आपको प्रथम सत्याग्रही का पद दे अपना प्रथम शिष्य घोषित किया था। उनके उसूलों को कार्य रूप में परिणत करने के लिये अगर आज कोई भी व्यक्ति अधिकारी माना जा सकता है तो आप। आप उनके इस महान मंत्र का तिलगाने में अनुष्ठान करें।

दूसरा—और आप यह भी समझ लें कि तिलगाने के इस प्रलयकारी बाढ़ का खातमा कोई भी सरकारी ताकत न कर सकेगी।

पहला—अगर आप इसे समाप्त न कर सके तो फिर तो यह अराजकता तिलगाने में ही न रहकर धीरे-धीरे सारे मुल्क में फैलेगी और जो खबरें आप आज तिलगाने से सुन रहे हैं वे देश के कोने कोने आपको सुनने को मिलेंगी।

दूसरा—सारे देश में प्रलय का ताण्डव होगा। नर रक्त से भारत-भूमि प्लावित हो जायगी। आहतों के आर्तनाद से कानों के परदे फटने लगेंगे। शान्ति और समृद्धि जैसी कोई चीज कहीं न दिखायी पड़गी।

(कुछ देर निस्तब्धता। विनोबाजी सिर झुकाये विचार-मग्न हैं। सब लोग एकटक उनकी ओर देखते हैं)

विनोबा—(सिर उठाते हुए) मैं नहीं जानता कि मैं तिलगाने में हृदय-परिवर्तन के इस मंत्र का सफल प्रयोग कर सकूंगा कि नहीं, पर इस परिस्थिति में यहां चुपचाप बैठा रहूं यह भी संभव नहीं है। मैं तिलगाना चलूंगा।

दोनों व्यक्ति—महात्मा गांधी की जय? सन्त विनोबा की जय?

जन समुदाय—महात्मा गांधी की जय ! विनोबा भावे की जय !

विनोबा—(तिलगाने के दोनो व्यक्तियों से) और देखो, वन्धुवर, मैं तिलगाना पैदल चलूंगा ।

दामोदरदास—(चिन्ताकुल स्वर में) पैदल !

दोनो व्यक्ति—(आश्चर्य से) पैदल !

विनोबा—हां पैदल ।

(पुन. जय जयकार)

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान—तिलगाने में पोचमपल्ली

समय—सन्ध्या

(गाव के बाहर एक मैदान में जन-समुदाय एकत्रित है । दूर पर पोचमपल्ली के कुछ छोटे छोटे मकान दृष्टिगोचर होते है । जन-समुदाय में चर्चा चल रही है)

एक—इस जमाने में जब यातायात के इतने शीघ्रगामी साधन है

दूसरा—(बीच ही में) हां सारी दुनिया का कुछ घंटो में ही वायुयान द्वारा चक्कर लगाया जा सकता है

पहला—ठीक, ऐसे जमाने में यह सन्त विनोबा मध्यप्रदेश के वर्धा से हमारे तिलगाने के इस पोचमपल्ली तक पैदल आया है पैदल ।

तीसरा—पर, भाई, क्षमा करना, यदि मैं यह कहूं, कि यह पैदल यात्रा मेरे समझ में नहीं आती ।

पहला—(तीसरे की ओर घूरते हुए) तुम्हारी समझ में नहीं आती ! यान ?

तीसरा—यान यह कि जब यातायात के इतन शीघ्रगामी साधन ह तब पैदल चलन की आवश्यकता क्या है ?

दूसरा—बारीक बातें मोटा समझ में नहीं आ पाती ।

(जन-समुदाय का अट्टहास)

पहला—अजी जनाबे आल उस्तरे को सिल्ली पर घिसकर जिस तरह हजामत के लायक बनाया जाता है उस तरह जरा अपनी मोटी समझ को

(जोर का अट्टहास)

चौथा—(तीसरे से) भाई पैदल यात्रा से जैसा जन सपर्क होता है

पांचवां—(बीच ही में) हा जनता के सुख दुःख

छठवां—(बीच ही में) जनता की भावनायें

पाचवां—(बीच ही में) आदि का जिस प्रकार पता लगता है

सातवां—(बीच ही में) रेल और वायुयान आदि सवारियो पर चलन से कभी लग सकता है ?

तीसरा—(रूक्ष स्वर से) तो आप लोगो की राय के अनुसार विनोबाजी को इस पैदल यात्रा से एस बातो का पता लगा है जो सवारी पर आन से न लगता ?

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) बशक बशक ।

तीसरा—(जोर से) मैं इसे नहीं मानता ।

एक व्यक्ति—मोटी समझ

(अट्टहास)

तीसरा—अच्छा मेरी समझ मोटी ही सही। आप लोगों ने तो उस्तरे की सिल्ली पर घिस-घिसकर अपनी समझ तेज करली ठहरी। विनोबाजी तिलगाने की भूमि समस्या को हल कर यहा की मारकाट को रोकने ही आये है न ?

एक व्यक्ति—और काहे को आये है ?

दूसरा—हा, किसी के घर ब्याह शादी में शरीक होने अथवा मातमपुरसी के लिये तो आये नहीहैं।

(अट्टहास)

तीसरा—ठीक कहा आपने। तो अब यह देखना है कि वे यहा शाति कैसे कायम कर पाते है।

आठवां—हा, यह सरल बात नहीं है। जो काम अपनी पुलिस और फौज पर करोडो रुपया खर्च कर सरकार नही कर पायी, उस काम को मुट्ठी भर हड्डियो का यह दुबला पतला आदमी कैसे करेगा यह देखने की ही चीज होगी।

नवा—पर, भाई, इसमे दुबले-पतले मोटे ताजे आदमी का सवाल नही है। गाधीजी भी तो ऐसे ही दुबले पतले आदमी थे। अग्रेजों के पास फौज फाटा भी कम नहीं था

दसवां—(बीच ही में) और इतने पर भी गाधीजी ने स्वराज्य ले लिया।

ग्यारहवां—हा, रखी रह गयी अग्रेजों की सारी फौज पलटन।

वां—तुमने देखा उस विनोबा को ? कैसा दिव्य तेज है उसके मुख पर।

कुछ व्यक्ति—हा, हा हमने दर्शन किये हमने दर्शन किये

हैं उनके। दिव्य महान दिव्य ...

(विनोबाजी का कुछ साथियों के संग प्रवेश। इन साथियों में विनोबाजी के सेक्रेटरी दामोदरदास मूंदड़ा तथा रामचन्द्र रेड्डी भी हैं। तिलंगाने के कुछ लोग भी इस समुदाय में सम्मिलित हैं। विनोबाजी के आगमन के पहले से उपस्थित जो जन-समुदाय था वह खड़ा हो जाता है। इनमें से कई लोग विनोबाजी के पैर छूने का प्रयत्न करते हैं। किसी की पीठ थपथपाते, किसी के सिर पर हाथ रखते, अधिकांश से अपने पैरों को बचाते हुए विनोबाजी इस जन-समुदाय के एक ओर खाली स्थान पर जमीन पर बैठ जाते हैं। कई लोग अपने दुपट्टे, रूमाल आदि बिछाने का प्रयत्न करते हैं, पर सफल नहीं होते। विनोबाजी के साथ जो लोग आये हैं उनमें से कुछ लोग बैठ जाते हैं। कुछ खड़े रहते हैं)

विनोबा—(उपस्थित जन समुदाय से) बैठिये आप लोग। सब बैठ जाइये।

(सब लोग बैठ जाते हैं)

विनोबा—(अपने साथियों में से कुछ व्यक्तियों से) तो आप लोगों के सारे कष्ट दूर हो जायँगे अगर आपको चालीस एकड़ सूखी और चालीस एकड़ सिंचाई की भूमि मिल जायगी ?

कुछ व्यक्ति—(खड़े हो, हाथ जोड़कर, एक साथ) हां, महाराज।

(विनोबाजी विचार-मग्न हो जाते हैं। सारा जन-समुदाय एक टक कभी विनोबाजी की ओर और कभी इन खड़े हुए लोगों की ओर देखता है। कुछ देर निस्तब्धता)

विनोबा—(दामोदरदास मूंदड़ा से) नोट करो, दामोदर, इन लोगों की आवश्यकताएं। यह जमीन तो तेलंगाना से ही मिल सकती है।

दामोदरदास--(नोट करते हुए) परन्तु सरकारी कामों में जैसी देर लगती है, वह तो आप जानते ही हैं।

विनोबा--(विचारते हुए) हां, सो तो मैं क्या सभी जानते हैं पर और उपाय ही क्या है ? मेरे पास तो जमीन है नहीं और जिनके पास है वे क्या देने वाले हैं।

रामचन्द्र रेड्डी--(खड़े होकर) अगर आप मंजूर करें तो मैं अपनी जमीन में से यह जमीन देने को तैयार हूं।

(सब लोग अवाक से रामचन्द्र रेड्डी की ओर देखते हैं।)

विनोबा--(गला साफ करते हुए, कुछ आश्चर्य भरे हुए स्वर में) आप आप यह जमीन अपनी जमीन में से देने को तैयार हैं ?

रामचन्द्र रेड्डी--हां, महाराज, इतनी ही नहीं, इससे भी कुछ ज्यादा। ये लोग चालीस एकड भूमि सूखी और चालीस एकड सिंचाई की जमीन चाहते हैं न ?

विनोबा--(खड़े हुए व्यक्तियों से) क्यों, भाई ?

खड़े हुए व्यक्ति--(हाथ जोड़कर) हां महाराज इतनी जमीन से हम सबकी गुजर-बसर हो जायगी।

रामचन्द्र रेड्डी--मैं पचास एकड सूखी और पचास एकड सिंचाई की जमीन देता हूं।

विनोबा--आपका शुभ नाम ?

रामचन्द्र रेड्डी--मुझे रामचन्द्र रेड्डी कहते हैं।

विनोबा--(कुछ गद्‌गद्‌ स्वर से) आपने दान का एक महान आदर्श उपस्थित किया है। धन्य हैं आपको।

कुछ व्यक्ति--महात्मा गांधी की जय !

सारा समुदाय—महात्मा गांधी की जय !

कुछ व्यक्ति—सन्त विनोबा की जय !

सारा समुदाय—सन्त विनोबा की जय !

कुछ व्यक्ति—रामचन्द्र रेड्डी की जय !

विनोबा—रेड्डीजी, आपके समान ही अगर भूमिपति भूमिदान के लिये आये आव तो तिलगाने का ही नही पर तमाम देश की भमि का सवाल हल हो सकता है। गांधीजी ने सन् ४२ मे इस सबध मे जो कहा था उसका एक एक अक्षर मुझे वैसा का वैसा याद है। उन्होने कहा था "अधिकाश जमींदार खुशी से अपनी जमीन छोड देगे" पर जब वर्धा से मै तिलगाने के लिये रवाना हुआ तब मुझे यह उम्मीद नही थी कि वह समय आ पहुचा है। कत्ल का जो रास्ता कम्युनिस्टो ने यहा अख्त्यार किया वह उन्होने रूस से सीखा है, पर यह बात हिन्दुस्तान मे चलने वाली नही है। नालगु डा में यह मार्ग बहुत अपनाया गया, लेकिन इसका कोई अच्छा नतीजा नही निकला। तिलगाना न हिंसा की व्यर्थता सिद्ध कर दी। यहा हिंसा तथा कानून दोनो नाकामयाब रहे। जब मैं वर्धा से चला तब भी यह सब तो जानता था, पर इसका हल मुझे नही सूझ पडता था। रेड्डीजी, आपने इसका हल मुझे सुझा दिया। अब मैं दूसरो से भी यह दान मागूगा और जो भूमि मुझे मिलेगी वह मैं भूमिहीनों को बाट दूंगा। देखता हू, मेरा यह प्रयोग कहा तक कामयाब होता है।

रामचन्द्र रेड्डी—महाराज, मैंने तो अपने पूज्य पिताजी के सकल्प को पूरा किया है। उन्होने सौ एकड़ जमीन दान देने का सकल्प किया था।

एक व्यक्ति—(जो कुछ देर से कुछ लिख रहा था) खडे होकर,

आचार्य, मैंने अभी-अभी इस सबब में एक गीत लिख डाला है। आज्ञा हो तो सुनाऊं ?

विनोबा—(मुस्कराते हुए) अच्छा, तो आप आशुकवि हैं। जरूर सुनाइये और अगर लोग उसे आपके साथ गा सकें तो और अच्छा हो।

वही व्यक्ति—मैं तो समझता हूं गा सकेंगे। एक एक। कित मैं गाता हूं। लोग उसे दोहरायें।

गीत

इस धरती पर लाना है,
हमें खींचकर स्वर्ग, कहीं यदि उसका ठौर ठिकाना है,
इस धरती पर लाना है !

यदि वह स्वर्ग कल्पना ही हो,
यदि वह शुद्ध जल्पना ही हो,
तब भी हमें भूमि माता को अनुपम स्वर्ग बनाना है ;
जो देवोपम है उसको ही इस धरती पर लाना है।

और स्वर्ग तो भोग-लोक है,
तदुपरान्त, बस रोग-शोक है ;
हमें भूमि को योग-लोक का नव अपवर्ग बनाना है ;
जो कि देव दुर्लभ है, उसको इस धरती पर लाना है।

बनना है हमको निज स्वामी ;
ऊर्ध्व-वृत्ति, सत्-चित्-अनुगामी ;

वसुधा सुधा सिंचित करके, हमें अमर फल खाना है;
जो कि देव दुर्लभ है उसको इस धरती पर लाना है।

है आनन्द-जात जन निश्चय,
सदानन्द में ही उनका लय;
चिर आनन्द वारि धाराएं हमें यहां बरसाना है;
जो देवोपम है उसको ही इस धरती पर लाना है।

सिहर उठें हम एक बार, बस,
तज दें निम्न वृत्तियों का रस,
फेंकें कंचुकि-वत् वह वल्कल, जो कि अतीव पुराना है;
तब हम देखेंगे कि हमें कुछ नहीं यहां पर लाना है।

सन्त विनोबा की वर वाणी,
यदि सुन सकें द्विपद हम प्राणी,
तो देखेंगे धरा बन गई उन्नत स्वर्ग समाना है;
देव कहेंगे स्वयं कि उनसे अच्छा नर का बाना है।*

लघु यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान—नालगुंडा
समय—अर्द्ध रात्रि

(प्रथम दृश्य वाला दृश्य है। साम्यवादियों की पहले दृश्य के सदृश ही गुप्त बैठक हो रही है)

एक—हां, अजीब देश है यह।

* श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' कृत

दूसरा—एक दम अजीब ।

तीसरा—शायद किसी देश मे भी दान मे जमीन इस तरह नही मिल सकती जैसी इस देश में मिल रही है ।

चौथा—(यह वही व्यक्ति है जो पहले दृश्य में दसवां था) पर, भाई, तुम लोग समझते हो, कि इस देश में भी दान मे जमीन मिलने वाली है ?

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) *यह तो अब देखने की बात है ।*

चौथा व्यक्ति—देख लेना । मै कहता हू, इस देश मे भी दान में जमीन कभी नहीं मिलेगी । तिलगाने में क्यों मिली और क्यों मिल रही है, जानते हो ?

कुछ व्यक्ति—क्यों मिली और क्यों मिल रही है ?

चौथा—इसलिये कि हमने सारे तिलगाने में एक तहलका मचा दिया था । न किसी को जमीन सुरक्षित थी न जान ।

पांचवां—तो यहा पर 'रपट पड़े तो हर गंगा' वाली कहावत चरितार्थ हो रही है ।

चौथा—बेशक । बात यह है कि दुनिया में वैज्ञानिक चीजें ही सफल हो सकती है ।

पांचवां—हा, राज्य पल्टते है युद्धों से और समाज का आर्थिक संगठन बदलता है क्रान्तियों से ।

छठवां—पर, भाई, अब तो इस भूमि दान के संबंध मे भी एक वैज्ञानिक शास्त्र तैयार हुआ है और इसे अहिंसक क्रान्ति कहा जा रहा है ।

चौथा—मैंने उस शास्त्र को देखा है और इस नाम को भी सुना है । वह वैज्ञानिक शास्त्र नहीं, महा अवैज्ञानिक शास्त्र है और भूदान

के कार्य को क्रान्ति कहना तो क्रान्ति की खिल्ली उडाना है। हा, सच्ची क्रान्ति के मार्ग का यह बडा भारी रोडा अवश्य है।

छठवां—रोडा ! कैसे ?

चौथा—देखो, तिलगाने मे हमने भूमि वितरण के विषय में एक वैज्ञानिक कदम उठाया था।

पांचवां—और हमें इसमें सफलता भी कम नही मिली।

चौथा—पूरी सफलता मिली। कितने थोडे वक्त में, कैसे अल्प साधनों के रहते हुए हमने अपने उस दिन के फैसले के अनुसार कितने भूमिपति नरपिशाचो का खून क्राति की चण्डी के खप्पर पर चढाया। हमारा भी कुछ खून वहा, पर उसे बहाने का उन कायर नर पिशाचो को साहस न हुआ। वह बहाया शोषणकर्त्ताओ की सरकारी पुलिस और फौज ने। लेकिन अत में जमीदारो और पूंजीपतियो की हिमायती सरकार भी पस्त हिम्मत हो गयी।

पाचवा—हां हम ठीक रास्ते पर चल रहे है। उसी रास्ते पर जिस रास्ते पर फरासीसी, रूसी और चीनी क्रान्तिकारी चले थे।

चौथा—लेकिन जैसा मैंने अभी कहा एकाएक यह भूमिदान का रोडा हमारे रास्ते मे आ गया और अब सबसे पहले हमें इसे चकनाचूर करना होगा।

पांचवां—बात यह है कि इस देश में लोग वैज्ञानिक ढग से चीजो को सोच ही नही सकते।

चौथा—भाई, अधिकाश लोग है निरक्षर भट्टाचार्य। रूस और चीन का भी यही हाल था। वहा के वैज्ञानिक विचारको ने जो किया वही हमें भी करना होगा।

छठवा--पर, अगर समस्या बिना रक्तपात के सुलझायी जा सके तो

चौथा--(आश्चर्य से छठवें को ओर घूरते हुए बीच ही में) अच्छा। तो अब हमारे साथी भी डगमगाने लगे हैं ?

छठवां--(सहमते हुए) नही, डगमगाने की बात नही है, मगर अगर भूमिदान का यह आन्दोलन कामयाब हो सकता है तो

चौथा--*(फिर बीच ही में उत्तेजना भरे स्वर में)* अगर मगर लेकिन की हमारे क्रान्तिकारी कार्य में कोई जगह नही है। यह भूमिदान हमारी क्रान्ति के रास्ते का सबसे बडा रोडा है। **(सब लोगो को सम्बोधन कर)** कहिये, क्या राय है आप लोगो की ?

छठवें को छोडकर शेष सब--ठीक कहते हैं, बिलकुल ठीक कहते हैं आप।

छठवा--(सकुचते सकुचते) तो फिर मेरा स्तीफा ले लीजिये।

चौथा--(उत्तेजना से) ऐसा ?

छठवा--(अब दृढ़ता से) जी हा, अब तक मैंने आप लोगो के साथ दल मे कोई कोर कसर नही रक्खी। मैंने उन नरपिशाच भूमिपतियो, उनकी स्त्रियो, उनके बच्चों को शायद सबसे अधिक मौत के घाट उतारा होगा। उनकी अनुनय-विनय, बिलख-बिलख कर उनकी की हुई प्रार्थनाए, उनकी करबद्धता और पैरो पर लोट लोटकर अश्रु-प्रवाह किसी की भी मैंने परवाह नही की। स्त्रियो का आर्तनाद, बच्चों की चीख चिल्लाहट मेरे जल्लाद हाथो को पल भर के लिये भी नहीं रोक सकी। जिसे मैंने अपना कर्तव्य समझा था, उसे पालने मे मेरा कलेजा हमेशा पत्थर का रहा। दारुण से दारुण दृश्य भी उसे क्षण भर को भी न पिघला सका। लेकिन अगर और कोई रास्ता इस भीषण रक्तपात को रोक सकता है तो उस प्रयोग के होने तक हमें अपना यह

काम बन्द रखना चाहिये। यदि भूदान यज्ञ सफल नहीं होता है तो हमारा रास्ता खुला हुआ ही है, हम फिर उस पर चलेंगे।

चौथा—(अत्यंत क्रोध से) कायर कहीं का !

(उसी समय समुदाय का एक व्यक्ति छठवें आदमी पर पिस्तौल तान तीन गोलियां चलाता है। छठवां व्यक्ति आहत हो गिर पडता है। छटपटाकर उसकी मृत्यु हो जाती है और उसके शरीर में से खून की धारायें बहने लगती हैं। कुछ देर सन्नाटा)

चौथा—(गम्भीरता से) ठीक हो गया। हमारा समुदाय ऐसा समुदाय है जिससे इस प्रकार सलाह नहीं दिया जा सकता, जैसा यह भाई देना चाहता था। हमने अपने अपने खून से प्रतिज्ञापत्र भरे हैं। असमानता का पाप भीषण से भीषण पाप है। उसके मोचन के लिये खून का बलिदान अनिवार्य है। जैसा मैंने उस दिन कहा था युद्ध और क्रान्ति की चण्डी के खप्पर पर अशुद्ध और पातकी खून के साथ ही शुद्ध और पुण्यमय खून भी चढता है। वह अशुद्ध और पातकी खून बिना इस शुद्ध और पुण्यमय खून के बलिदान के योग्य नहीं बन जाता। आज हमने क्रान्ति की चण्डी के खप्पर पर पवित्र से पवित्र खून को चढाया है। बोलिये—क्रान्ति अमर हो !

सारा समुदाय—(एक साथ) क्रान्ति अमर हो !

चौथा—(जिसने छठवें पर गोली चलाई थी,उसकी ओर देखते हुए) और धन्य हैं इनको। इन्होंने उस खप्पर पर इस पवित्रतम खून को चढाया है।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ जोर से) धर्मव्रत जिन्दाबाद !

सब लोग—(एक साथ जोर से) धर्मव्रत जिन्दाबाद !

(कुछ देर निस्तब्धता)

एक व्यक्ति—देखिये, साथियो अब मैं एक बात जरूरी मानताहू।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) कौन सी ?

वही व्यक्ति—अपन एक अपना नेता चुनें, जिसकी आज्ञा से हमारा आगे का तमाम काम चले।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) हा, यह जरूरी है, जरूरी है।

वही व्यक्ति—तो मैं प्रस्ताव करता हू कि हमारे दल के नेता (चौथे को ओर संकेत कर) रुद्रदत्तजी बनाये जाय।

दूसरा व्यक्ति—मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हू।

सारा समुदाय—रुद्रदत्त जिन्दाबाद !

(कुछ देर निस्तब्धता)

रुद्रदत्त—मेरे प्रति इस विश्वास के व्यक्त करने पर मैं आप सबको हृदय से धन्यवाद देता हू। पर इसी के साथ यह भी महसूस करता हू कि आप लोगों ने कितनी बडी जिम्मेदारी मेरे कमजोर कन्धों पर रखी है। हम जिस तरह की क्रान्ति करना चाहते हैं उसमे क्रान्तिकारी दल के नेता का काम सुगम नहीं है।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) बहुत कठिन है, बहुत कठिन है।

रुद्रदत्त—ससार के इतिहास में ऐसी क्रान्तियो के नेताओं को जो-जो भोगना पडा है उसे आप लोगो में से कौन नही जनता।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) सब जानते है, सब जानते है।

रुद्रदत्त—साथियो को अनुयायी न समझ समान रूप का क्रान्तिकारी मान, सबका विश्वासभाजन रह क्रान्ति के रास्ते में बढते जाना, ठीक वक्त ठीक बात कर अपने उसूलों को सफल करने में मार्ग की बाधाओं को दूर करना, निराशा की घनी से घनी घटाओं के रहते हुए

भी पल भर के लिये भी कोई को भी नैराश्य को पास न फटकने देना और आठो पहर तथा चौसठो घड़ी अपने खून का बलिदान चढ़ाने के लिये तत्पर रहना, यह छोटा काम नहीं है ।

कुछ व्यक्ति—कदापि नहीं, कदापि नहीं ।

धर्मव्रत—पर मुझे पूरा विश्वास है कि आप सबके सहयोग से हम अपने ध्येय में कामयाब होकर रहेंगे और हमारी क्रान्ति के रास्ते का इस वक्त का सबसे बड़ा रोड़ा जो यह भूमिदान यज्ञ है उसे जल्दी से जल्दी चूर-चूर कर आगे बढ़ेंगे ।

कुछ व्यक्ति—क्रान्ति अमर हो !

सब—(जोर से) क्रान्ति अमर हो !

(धर्मव्रत उस आदमी की लाश को जिसे उसने पिस्तौल से मारा था उठाकर नाले के पानी में फेंक देता है । धर्मव्रत के दोनों हाथ खून से भर जाते हैं और उसके कपड़ों पर भी खून के छींटे पड़ते हैं)

यवनिका

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—बिहार प्रांत में गया नगर

समय—सन्ध्या

(एक मैदान में सार्वजनिक सभा का आयोजन है। नर-नारियों और बच्चों का बृहत जन-समुदाय उपस्थित है। इस समुदाय में सभी-दलोंके लोग तथा साधारण शहराती और देहाती नागरिक दिखाई पड़ते हैं। एक तख्त पर विनोबाजी बैठे हुए चरखा कात रहे हैं। उन्हीं के निकट तख्त के नीचे दामोदरदास मूंदड़ा बैठे हैं। तख्त के एक ओर कुछ गाने वाले खड़े हुए हैं। उन्हीं के निकट वाद्य बजाने वाले एक तख्त पर बैठे हैं। गाने वालों के सामने लाउड स्पीकर है। परदा उठते ही गाने वालों में से एक कहता है)

गायकों में से एक—सन्त विनोबा का भाषण शुरू होने के पहले आपके बिहार प्रांत के ही प्रसिद्ध कवि "दिनकर" का भूदान संबंधी एक गीत गाया जाता है।

(वाद्य बजना आरंभ होता है और इसके साथ ही गीत गाया जाता है)

गीत

१

सुरम्य शान्ति के लिये, जमीन दो, जमीन दो,
महान क्रान्ति के लिये जमीन दो, जमीन दो।

जमीन दो कि देश का अभाव दूर हो सके,
जमीन दो कि द्वेष का प्रभाव दूर हो सके,
जमीन दो कि भूमिहीन लोग काम पा सकें,
उठा कुदाल बाजुओं का जोर आजमा सकें,
महा विकास के लिये जमीन दो, जमीन दो,
नये प्रकाश के लिये जमीन दो, जमीन दो।

२

जमीन दो, समाज से कड़ी पुकार आ रही,
जमीन दो कि एक माग बार, बार आ रही,
जमीन मातृ-रूपिणी पुनीत है, पवित्र है,
जमीन, वारि, वायु का समान ही चरित्र है।
पुनीत कर्म के लिये जमीन दो, जमीन दो,
नवीन धर्म के लिये जमीन दो, जमीन दो।

३

जमीन चाहिये समाज के समत्व के लिये,
स्वराज्य के लिये, स्वदेश के महत्व के लिये,
मनुष्यता के मान के लिये जमीन चाहिये,
बहुत दुखी किसान के लिये जमीन चाहिये।
नि स्वत्व दीन के लिये जमीन दो, जमीन दो,
क्षुधार्त विश्व के लिये जमीन दो, जमीन दो।

४

जमीन दो कि शान्ति से नया समाज ला सकें,
जमीन दो कि राह विश्व को नई दिखा सकें।
जमीन दो कि प्रेम से समत्व सिद्धि पा सकें,
जमीन दो कि दान से, कृपाण को लजा सकें।

सुरम्य शान्ति के लिये जमीन दो, जमीन दो,
महान क्रान्ति के लिये जमीन दो, जमीन दो ।*

(गान पूर्ण होने पर विनोबाजी के तख्त के निकट की जमीन पर बैठा हुए एक व्यक्ति खड़ा होता है । लाउड स्पीकर इसके सामने लाया जाता है)

वह व्यक्ति—अब मैं बिहार के सभी दलों और समुदायों की ओर से सन्त विनोबाजी से प्रार्थना करता हू कि वे अपना भाषण आरभ करें ।

(लाउड स्पीकर विनोबाजी के सामने आता है)

विनोबा—(चरखा कातना बद कर गला साफ करते हुए) बहनो और भाइयो ! तिलगाने के काम के बाद यद्यपि मैं और भी कई प्रातों में गया तथापि आपके सूबे बिहार को अब मैं भूदान के काम में सबसे प्रधान स्थान देने वाला हू ।

एक व्यक्ति—धन्य है इस प्रात को ।

विनोबा—हा,आपका प्रात धन्य तो कई दृष्टियों से रहा है । इसी प्रात में राजा जनक राज्य करते थे जिनकी निस्पृहता की वजह से देह रखते हुए भी उन्हें विदेह की पदवी प्राप्त हुई थी ।

एक व्यक्ति—महाराजा विदेह की जय ।

जन समुदाय—महाराजा विदेह की जय !

विनोबा—इसी प्रात में उन सीता का जन्म हुआ था जो हजारो वर्षों के बीत जाने पर भी आज ससार के नारी-जीवन के लिये सर्वोत्कृष्ट आदर्श है ।

एक व्यक्ति—जनकनदिनी की जय !

जन समुदाय—वैदेही की जय !

* श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' कृत

विनोबा—यही भगवान बुद्ध ने निर्वाण का सच्चा रहस्य जाना था।

एक व्यक्ति—भगवान बुद्ध की जय!

जन समुदाय—भगवान बुद्ध की जय!

विनोबा—इसी प्रांत में प्राचीन भारत के मौर्यवंश, गुप्तवंश आदि अनेक राजवंशों का उत्कर्ष हुआ था।

एक व्यक्ति—प्राचीन भारत की जय!

जन समुदाय—प्राचीन भारत की जय!

विनोबा—यहीं ऐतिहासिक दृष्टि से सबसे पहले पुरानी भारतीय संस्कृति पनपी।

एक व्यक्ति—भारतीय संस्कृति अमर हो!

जन समुदाय—भारतीय संस्कृति अमर हो!

विनोबा—इसी प्रांत में शेरशाह सूरी का उत्कर्ष हुआ था जो हिन्दू मुस्लिम एकता के और शासकीय कार्यों के महान आदर्श माने जाते हैं।

एक व्यक्ति—शेरशाह सूरी जिन्दाबाद!

जन समुदाय—शेरशाह सूरी जिन्दाबाद!

विनोबा—ऐसे प्रांत की सारी भूमि समस्या को मैं भूमिदान से हलकर तमाम मुल्क में इस सूबे के काम को एक आदर्श का रूप देना चाहता हूं।

एक व्यक्ति—सन्त विनोबा की जय!

जन समुदाय—सन्त विनोबा की जय!

विनोबा—भाइयो! जब तिलगाने में मैंने इस काम को शुरू

किया और वहा मुझे काफी जमीन मिलने लगी तब मेरे कान पर एक बात आयी ।

एक व्यक्ति—कौन सी ?

विनोबा—कुछ साम्यवादी कहते सुने गये कि तिलगाने में जमीन इसलिये मिल रही है कि साम्यवादियो ने मार-काट के जरिये ऐसा वायुमण्डल बना दिया है कि लोग अपनी-अपनी जमीन से अपना पिंड छुड़ाना चाहते है ।

एक व्यक्ति—गलत बिलकुल गलत बात है ।

जन समुदाय—एकदम गलत ।

विनोबा—हा, बाद में तो यह बात इसलिये गलत सिद्ध हुई कि मुझे दूसरे स्थानो में तिलगाने से भी ज्यादा भूमि मिली,लेकिन जब तक यह नही हुआ था तब तक तो साम्यवादियो का कहना गलत है इसका मैं कोई प्रमाण न दे सकता था ।

एक व्यक्ति—पर अब तो दे सकते है ।

विनोबा—हा, अब जरूर दे सकता हू । बात यह है कि मैंने कभी माना ही नही कि मारकाट से इस देश की कोई समस्या हल हो सकती है ।

जन समुदाय—बिलकुल ठीक । बिलकुल ठीक ।

विनोबा—अब आपके सूबे में जमीन का सवाल बिलकुल हल कर मैं मुल्क और दुनिया को बता देना चाहता हू कि ऐसे सवालो को हल करने का सबसे अच्छा तरीका हृदय परिवर्तन ही है ।

जन समुदाय—धन्य है । धन्य है ।

विनोबा—देखिये, अगर समाज रचना में फौरन परिवर्तन नही होता है तो हम नष्ट हो जायगे ।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) बिलकुल ।

विनोबा—दूसरे मुल्कों ने जिस प्रकार जमीन का सवाल हल किया वह हमारे देश के लिये इष्ट नहीं है।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) कदापि नहीं। कदापि नहीं।

विनोबा—रशिया और अमरीका की स्पर्धा से दुनिया के दूसरे राष्ट्रों का जो नाश होने जा रहा है उस समय दुनिया को समझदारी का रास्ता बताने वाला एक ही मुल्क भारत है।

एक व्यक्ति—पुण्यमयी भारत भूमि की जय!

जन समुदाय—पुण्यमयी भारत भूमि की जय!

विनोबा—दुनिया की अहम समस्यायें शान्ति के रास्ते से हल करने की दिशा भारत ही दिखा सकता है।

जन समुदाय—पुण्यमयी भारत भूमि की जय!

विनोबा—आज सामाजिक असंतोष और आर्थिक विषमता के जाल में हिन्दुस्तान फंस गया है।

एक साथ—(एक साथ) अवश्य।

विनोबा—इनमें से सही सलामत निकलने के लिये ही यह भूदान यज्ञ आन्दोलन है, जो भारत की प्रकृति के अनुकूल है।

एक व्यक्ति—भूदान यज्ञ सफल हो।

जन समुदाय—भूदान यज्ञ सफल हो।

विनोबा—महाभारत में राजसूय यज्ञ का वर्णन है और मेरा यह प्रजासूय यज्ञ है।

कुछ व्यक्ति—धन्य है। धन्य है।

विनोबा—इसमें प्रजा का अभिषेक होगा।

कुछ व्यक्ति—धन्य है। धन्य है।

विनोबा—ऐसा राज, जहां मजदूर, किसान, मंत्री आदि सब यह समझे कि हमारे लिये कुछ हुआ है। ऐसे समाज का नाम सर्वोदय है। वहीं से प्रेरणा लेकर मैं घूम रहा हूं।

जन समुदाय—सन्त विनोबा की जय!

विनोबा—आप जानते हैं कि मैं सर्वोदय समाज का सेवक हूं। सर्वोदय का नाम मेरे लिये भगवान का नाम है।

जन समुदाय—सन्त विनोबा की जय!

विनोबा—ब्राम्हण तो मैं था ही। वामन अवतार मैंने ले लिया और भूदान मागना मैंने शुरू कर दिया।

जन समुदाय—वामन भगवान की जय!

विनोबा—पहले पहल लगता था कि इसका परिणाम वातावरण पर क्या होगा? थोड़े से अमृत बिन्दुओं से सारा समुद्र कैसे मीठा होगा? पर धीरे-धीरे विचार बढ़ता गया। परमेश्वर ने मेरे शब्दों में कुछ शक्ति भर दी,लोग समझ गये कि यह जो काम चल रहा है क्रान्ति का है और सरकार की शक्ति के परे है।

जन समुदाय—क्रान्ति अमर हो।

विनोबा—यद्यपि यहां लोगों ने इस बात को समझ लिया है कि क्रान्ति टल नहीं सकती, मगर चीन तथा रशिया में जैसी क्रान्ति हुई है वैसी वे नहीं चाहते। कहिये ठीक कह रहा हूं न?

जोर की आवाज—बिलकुल ठीक। बिलकुल ठीक।

विनोबा—इसीलिये सबको विश्वास हो गया है कि अहिंसक क्रान्ति मेरे ही तरीके से आ सकती है। और इसीलिये वे जमीनें देते जाते हैं। हिन्दुस्तान में सद्भावना काफी है। उसको जगाने वाला योग्य आदमी चाहिये। याद रखिये, प्रेम और विचार की तुलना में कोई शक्ति

टिक नहीं सकती। लोगों की सद्भावनाएं जगाने में हमारा पुरुषार्थ कितना है, समझाने की शक्ति कितनी है, त्याग की शक्ति कितनी है, इन सबका असर पड़ता है।

कुछ व्यक्ति—अवश्य। अवश्य।

विनोबा—फिर यह सवाल केवल भूदान या जमीन मात्र का नहीं है, एक विशिष्ट तत्त्व प्रणाली का है। आज मौजूदा सामाजिक, आर्थिक समस्याओं को हल करने के लिये जो तरीके अमल में लाये जा रहे हैं उनके मुकाबले में यह प्रयोग शुरू किया गया है।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) महान महान प्रयोग है।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) सफल सफल प्रयोग है।

विनोबा—आज साम्यवाद ने दुनिया की तमाम समस्याओं के हल करने का दावा करके अपने कामों की कुछ मिसालें भी दुनिया में पेश की हैं। उनकी तुलना में एक स्वस्थ, शान्तिपूर्ण और क्रान्तिकारी हल लेकर मैं आपके सामने उपस्थित हुआ हूं।

जन समुदाय—सन्त विनोबा की जय!

विनोबा—अतएव यह काम महान है, न केवल महान है, बल्कि बुनियादी है, बुनियादी के साथ सामायिक है और सामयिक ही नहीं क्रान्तिकारी है।

कुछ व्यक्ति—अहिंसक क्रान्ति जिन्दाबाद!

जन समुदाय—अहिंसक क्रान्ति जिन्दाबाद!

विनोबा—क्रान्ति परिवर्तन लाती है। मैं परिवर्तन चाहता हूं प्रथम हृदय परिवर्तन, फिर जीवन परिवर्तन और बाद में समाज रचना में परिवर्तन। इस तरह से त्रिविध परिवर्तन। तिहरा इन्कलाब मेरे मन में है।

जन समुदाय—इन्क्लाब जिन्दाबाद !

विनोबा—भूमिदान साधन है, हृदय परिवर्तन साध्य, जिसके बिना यह तिहरा परिवर्तन असंभव है। और अन्त में इस परिवर्तन का अर्थ है स्वामित्व विसर्जन। भारत माता की यह मांग है।

जन समुदाय–भारत माता की जय !

(विनोबाजी अपना भाषण समाप्त कर सिर झुका लेते हैं)।

जनसमुदाय—(जोर से) सन्त विनोबा की जय ! महात्मा गांधी की जय ! भारत माता की जय !

(सब लोग भूदान करते हैं, कुछ हजारों, कुछ सैकड़ों, कुछ एक-एक बीघा तथा कुछ दसमलव तक का। लोग अपनी जमीन का दान बोलते हैं और दामोदरदास मूंदड़ा विनोबाजी के तख्त पर बैठकर इस दान के आंकड़ों को लिखते हैं। अन्त में भूदान यज्ञ संबंधी नारे लगाये जाते हैं)।

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—नयी दिल्ली में प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू का निवास स्थान

समय—रात्रि

(एक बड़े कमरे में एक गद्दीदार आराम कुर्सी पर जवाहरलालजी बैठे हुए हैं। उनके आसपास के कुछ सोफों और कुछ कुर्सियों पर कुछ अन्य स्त्री और पुरुष बैठे और खड़े हैं। इनमें वह व्यक्ति भी है, जो उपक्रम में सिनेमा का एक फिल्म दिखाने के पहले उस दृश्य में उपस्थित जन-समुदाय के सामने एक भाषण दे रहा था। जवाहरलालजी के सामने

कुछ दूर पर सिनेमा के फिल्म दिखने की एक सफेद चादर है। उनके निकट ही फिल्म दिखाने वाली मशीन रखी है, जिसे चलाने की पूरी तैयारी है और जिसे चलाने वाले उस मशीन के निकट ही खड़े हैं)

जवाहरलाल—(पास में बैठे हुए उपक्रम वाले व्यक्ति से) तो आप गोरखपुर जिले के रहने वाले हैं ?

वह व्यक्ति—जी हां, पंडितजी, आपके ही प्रांत का निवासी हूं।

जवाहरलाल—आपका शुभ नाम ?

वह व्यक्ति—मुझे सम्पूर्णदास कहते हैं। मैं कुछ समय से इस देश की विशेष विशेष अवस्थाओं तथा घटनाओं के फिल्म उतारता और लोगों की ज्ञान वृद्धि कर इसी काम से अपनी जीविका चलाता हूं।

जवाहरलाल—और जो फिल्म आप मुझे दिखाने के लिये लाये हैं, वे अब तक मुख्तलिफ सूबों में भूदान के मुताल्लिक जो खास-खास बातें हुई हैं उसकी मुझ पूरी वकफियत करा देंगे ?

सम्पूर्णदास—पूरी वकफियत तो नहीं, पंडितजी, परन्तु उनसे कुछ विशेष बात आपको अवश्य मालूम हो जायगी।

जवाहरलाल—हां, हां, वे विशेष बातें ही मैं जानना चाहता हूं पूरा हाल तो मैं जानता हूं, इन फिल्मों से नहीं मालूम हो सकता।

सम्पूर्णदास—बात यह है कि पहले तो फिल्म उतारे नहीं गये। फिर इतने स्थानों में हर दिन इस थोड़े से काम में इतना अधिक काम हुआ है कि फिल्म द्वारा उस सबका बताया जाना सम्भव नहीं है।

जवाहरलाल—मुश्किल एक और हुई है। अखबारों ने विनोबा जी कहां-कहां गये, दूसरे लोग भी कहां कहां गये और उन्हें कितने एकड़ जमीन मिली यह तो छापा है, लेकिन निरी मुख्तसिर खबरें। जमीन मिलने के साथ ही कहां क्या क्या हुआ इसकी ब्यौरे में रिपोर्ट या तो

छपी है। नहीं या बहुत छपी।

सम्पूर्णानन्द—बात यह है कि आरंभ में किसीने सोचा ही न था कि यह आंदोलन इतना बड़ा रूप लेगा। पहले तो खबरें ही बहुत कम छपी और फिर जब आन्दोलन का बड़ा रूप हो गया तब खबरें छपने का जो एक ग बन गया था वही चलता रहा। हम लोगों को पबलिसिटी की कला भी नहीं मालूम।

जवाहरलाल—आप ही लोगों को नहीं, हिन्दुस्तान में यह आर्ट शायद ही कुछ लोगों को मालूम हो। हिन्दुस्तान की सरकार और सूबों की सरकारें भी जो काम कर रही हैं उनकी जानकारी भी इस मुल्क और दूसरे मुल्कों में कितने लोगों को है? इस काम में एक्सपर्ट हैं अमरीका और रूस वग़ैरह मुल्क के लोग। देखते नहीं आप हमारे मुल्क में इन मुल्कों की पबलिसिटी। (तर्जनी उंगली की एक पोर पर अंगूठा रखते हुए) काम करेंगे इत्ता-सा (दाहिनी भुजा आगे बढ़ा बायां हाथ दाहिनी भुजा की बगल पर रखते हुए) और एडवर्टाइज़िंग इत्ता।

दूसरा व्यक्ति—पर, पंडितजी, हमें भी प्रचार की आवश्यकता है। अपने देश तथा विदेशों के लोगों को जानना चाहिये कि हमारे देश में भी क्या क्या हो रहा है।

जवाहरलाल—ठीक कहते हैं आप बिना इसके बड़ी गलत फहमियां भी हो रही हैं। पर इसमें कई दिक्कतें भी हैं।

दूसरा—कैसी, पंडितजी?

जवाहरलाल—देखिये, पहले तो हम इस आर्ट को जानते ही नहीं, फिर खर्च का बड़ा भारी सवाल है। अमरीका वाले अपनी पबलिसिटी के लिये जो खर्च करते हैं उसका आप अंदाजा नहीं कर सकते। हमारी पबलिसिटी में तो पाकिस्तान, जो हमसे इत्ता छोटा है, अपनी पबलिसिटी पर कहीं ज्यादा खर्च करता है।

(कुछ देर निस्तब्धता)

सम्पूर्णदास—फिल्म चलाये जाय ?

जवाहरलाल—(हाथ घड़ी देखते हुए) हां शुरू कीजिये।

(अंधेरा होता है। फिल्म दिखाने वाली मशीन चलती है और सफेद चादर पर चित्र दिखना प्रारंभ होता है। इसके साथ ही इन चित्रों का वर्णन चलता है)

गया जिला जेठीमन ग्राम का एक प्रसंग

हृदय की गहराई से जयप्रकाशजी बोल रहे हैं। बीस दाताओं से एक सौ पचास एकड के दान पत्र भरे गये, तो जयप्रकाशजी ने पूछा—"क्या इस भगवान बुद्ध के क्षेत्र में बीस ही दानी हैं ? ऐसा नहीं हो सकता।" उनकी इस नम्र मूर्ति को दान की याचना करते देखकर लोग रोमांचित हो गये। भूदान की वर्षा होने लगी। बाबू शिवधरसिंह खड़े हुए। बोले, "साढ़े छः बीघा" जयप्रकाश ने जाहिर किया "साढ़े छ बीघा।" एक कार्यकर्त्ता ने धीरे से जयप्रकाश जी के कान में कहा, "इनके पास सारी साढ़े छ. बीघा जमीन है। सब देने पर यह क्या खायेंगे ?" जयप्रकाशजी ने जाहिर किया, "इन भाई के पास उपार्जन का दूसरा साधन नहीं है। इनकी दान की भावना की मैं कदर करता हूं। दाता बाबू शिवधरसिंह फिर भी सिर्फ एक बीघा रखकर साढ़े पांच बीघा तुम्हें वापिस करता हूं।" दाता बाबू शिवधरसिंह खड़े होकर हाथ जोड़कर बोले, "महाराज वापिस करेंगे, तो मैं अनशन करूंगा। मेरे शरीर में ताकत है। कहीं भी कमाई करके मैं पेट भर सकूंगा। आज तक इस धरती से मैंने सुख प्राप्त किया है। अब मेरे दूसरे गरीब भाई को यह सुख मिलने दो।" जयप्रकाशजी गद्‌गद् हुए। उस दाता से कहा, "मैं आपके सामने नतमस्तक हूं। आप शिवि, दधीचि, हरिश्चन्द्र कर्ण के वंशज हैं। शरीर का अंग काट देने वाले, हड्डियां निकालकर

देनेवाले दानवीरो के वशज है । उनका रक्त आपकी नाडियो में रम रहा है, इसका मुझे घ्यान नही था । जैसी दाता की इच्छा हो मै दान स्वीकार करता हू ।"

मजीरगंज का एक वाकया

भागवत पाडे खड हुए और उन्होने तीन बीघा भूमि दान जाहिर किया। दूसरे एक सज्जन ने तुरन्त उ कर कहा, "१९३० से पाडेजी ने राष्ट्र के लिये असीम त्याग किया है । जो कुछ बाकी था वह भी अब भारत माता के चरणो में अर्पण कर दिया। इनके बाल-बच्चों की फिक्र इन्हे भले ही न हो, हमें जरूर है । मैं पाडेजी को अपनी जमीन में से पाच बीघे देता हू ।" जयप्रकाशजी की आखो में आसू भर आये।

रांची जिले का एक अपूर्व दान

सन् ४३ के १५ जून को बिहार के सर्वोच्च स्थान नेतरहाट मे पालकोट के राजा साहब कदर्पलाल शाह देव ने सुन्दर कमल पुष्पो की माला के साथ ४५७३२ एकड भूमि का दान-पत्र विनोबाजी को समर्पित किया राजा साहब का, जो राची भूदान समिति के सयोजक भी है, ४४५०० एकड का दान-पत्र भी उसी में सम्मिलित किया गया था । उन्होने अपनी सारी पडोत जमीन और कादत की जमीन के छठें हिस्से अर्पित करते हुए कहा कि "मुझे संयोजक बनाकर आपने मुझ पर बहुत उपकार किया है ।" इसका जिक्र करते हुए विनोबाजी ने कहा "पालकोट के राजा साहब का दान 'पूर्ण दान' है । इसलिये नही कि वह बडा दान है, बल्कि इसलिये कि उन्होने बिल्कुल ठीक ढग से दान दिया है । उन्हें सयोजक का पद देने के लिये उन्होने हमारा उपकार माना है । हमारा याने गरीबो का जिसके हम प्रतिनिधि है और जमीन पर वास्तव में उनका हक ही है । इसलिये वे अगर जमीन वालों से दान स्वीकार करते है तो वास्तव में जमीन वालो पर उपकार ही करते हैं । गरीबों को जमीनें उन्हें लौटाना जमीदारो का कर्तव्य है ।"

रविशंकर महाराज का गुजरात का अनुभव

"एक गाव में एक ब्राम्हण स्त्री कहने लगी, 'महाराज, मुझे जमीन देनी है। मेरे घर पधारियेगा।' स्त्री मुझे अपने घर ले गयी। भोजन कराया और चार बीघा जमीन का दान दिया। इतने मे बाहर से आवाज 'आई मेरी पौन बीघा जमीन लेंगे ?' मैंने कहा, 'अन्दर आओ अन्दर आओ।' परन्तु वह चमार था। कहने लगा, 'अन्दर नही आ सकता' मुझे याद नही रहा और मैं आग्रह करता रहा। परतु वह ब्राम्हण के घर पर कैसे आ सकता था। वह तो बाहर खडा खडा पूछता रहा 'जमीन लेंगे ?' मैंने उसका हाथ पकडकर घर में खीच लिया। मुझे ख्याल नही रहा। स्त्री तो कुछ बोली नही।, ब्राम्हण का घर। पूर्णतया सनातनी। घर में सध्या, गायत्री आदि का पाठ होता था। ऐसे सनातनी के घर में मैंने चमार को दाखिल किया।

वर्धा का एक प्रसंग

दत्तोबा दास्ताने से सर्वोदय परिवार परिचित है। उन्होंने अपनी सारी जमीन, १९ एकड विनोबाजी को अर्पित कर दी। दूसरे एक साथी श्री ठाकरे ने भी अपनी सारी जमीन, करीब अठारह एकड दे दी। कुछ लोगों ने सुझाया दत्तोबाजी की सारी जमीन न ली जाय। कम से कम आधी तो भी उनको लौटा दी जाय, तो विनोबाजी ने कहा, "दत्तोबा मुझसे अभिन्न है। मैं उन पर सपूर्ण प्रेम ही कर सकता हू, आधा नहीं कर सकता," और सारा दान उन्होंने स्वीकार कर लिया।

एक हरिजन का सर्वस्व दान

सहयोगी गौतम बजाज, मगरू नामक एक हरिजन भाई को विनोबाजी के पास ले आये। विनोबाजी के कमरे में मिलने वालों की भीड लगी थी। उनमें कोई जमींदार थे, कोई मालदार कोई मिल्दार थे। गौतम भइया ने शिकायत की "बाबा, इस भाई के पास

केवल इक्कीस डेसिमल जमीन है। बहुत समझाने पर भी नही मानते है और सब की सब देना चाहते है।" सर्वस्व समर्पण करने वाले अपने इस महान दाता की ओर विनोवाजी ने कृतज्ञता भरी प्रसाद-मुद्रा से देखा। उस भाई ने विनोवा के चरण पकड लिये और कहा "महात्माजी मेरी यह तुच्छ भेंट स्वीकार कर लीजिये।"

"फिर तुम्हारे लिये तो कुछ भी नही रहेगा ?"

"आखिर मुझ उस कारखाने की नौकरी तो करनी ही पडती है। इतनी जमीन से मेरा निर्वाह नहीं होता। घर में पाच सात आदमी है। आज उस जमीन में क्या होता है। कुछ धान बोयी थी। वह निकाल लीया है।"

"तुम्हारी भावना देखकर मुझ खुशी होती है, परन्तु इसे रहने दो।" लेकिन बहुत समझाने पर भी उसने नही माना। "मैंने देने का निश्चय कर लिया है। मुझ पर कृपा कीजिये।" तब विनोवाजी ने उसका दान-पत्र स्वीकार कर लिया और उस पर लिख दिया "इस मनुष्य की बाकी हालत देखते हुए यह जमीन इन्ही को देनी है। अनेक आग्रह से उनके समाधानार्थ हमने ली है। इन्ही को प्रसाद रूप वापिस देते है।"

एक आदिवासी भी आगे आये

एक गोंड ने अपनी जमीन का चौथा हिस्सा १४ एकड ऐसी जमीन दी जो उसने अपने लिये तैयार की थी। खाद डाल चुका था। पानी की बूंद भी बरस चुकी थी। बोनी हो रही थी। गोंड ने दान देते हुए कहा। "मै अपने लिये और जोत लूंगा पर ये गरीब कहा से साधन जुटायगे। देना है तो अच्छी जमीन देना चाहिये।"

कीर्तिशाली मंगरोठ ग्राम

हमीरपुर जिले के पहले गाव मगरौठ ने तो भूदान-यज्ञ के

सिलसिले में ऐसा चमत्कार कर दिया, जिससे वह अजरामर हो गया।

हमीरपुर जिले का यह छोटा सा गाव ऐसे शुरू में ही पुरुषार्थी रहा। सन सत्तावन के विद्रोह से वह अछूता नहीं रहा। उसके बाद वह क्रान्तिकारियों का अड्डा बना रहा। फिर बापू युग मे सत्याग्रह आन्दोलन में उसने पूरा हिस्सा लिया और अंत में विनोबाजी के भूदान यज्ञ में "सबै भूमि गोपाल की" का आदर्श पूरा करने का श्रेय भी उसने प्राप्त कर लिया। इस गाव के ६६ भूमि वालो ने अपनी सारी भूमि, करीब तेरह सौ एकड, विनोबाजी के सुपुर्द कर दी। और यह सब प्रेरणा उनको विनोबाजी के संदेश मात्र से मिली। स्वयं विनोबाजी उस गाव में पहुंच ही नहीं पाये। गाव से दो मील पर जहा से विनोबाजी का मार्ग गुजरता था सब लोग दर्शन के लिये पहुंचे। कलेवे के लिये जैसे भगवान रामचन्द्र को उन कोल-किरातों ने पत्र-पुष्प भेंट किये थे, ये लोग भी अपनी श्रद्धांजलि ले आये थे—एक सौ एक एकड भूमि का दान। विनोबाजी ने उसे स्वीकार करते हुए अपने छोटे से प्रवचन में एक विचार इन लोगो के सामने रखा—"सबै भूमि गोपाल की।"

ये लोग अपना कर्तव्य क्या है? यह गाव लौटकर सोचने लगे दीवान शत्रुदमनसिंह, जिन्होंने इस गाव की तन, मन से सेवा की है, भूदान-यज्ञ के काम के सिलसिले में बाहर घूम रहे थे। लोगो ने उन्हें बुलवा भेजा। वे रात को ११ बजे पहुंचे, तो सारा गाव उनकी प्रतीक्षा में जाग रहा था। गाव वालो ने अपना विचार दीवान साहब से कहा। वे भी इतना ही चाहते थे। दान-पत्र लिखे गये और सबकी ओर से एक अधिकार पत्र दीवान साहब को दिया गया कि वे विनोबाजी के चरणो में जाकर सारी भूमि अर्पण कर दें।

आज मगरौ में कोई भूमिपति नहीं है। "जाचक सर्व अजाचक" हो गये हैं। सब मिलकर काश्त करना तै हुआ है।

गया जिले सईया गांव का एक वाकया

गइया नाम के गया जिले के गाव में १७-१-५३ को एक बेलदार ने ३॥ डोमा जमीन का सर्वस्व दान दिया और गाव में एक भैंसा और एक हल भी दिया।

नागपुर के एक दर्जी का दान

कृष्णराव दर्जी नाम के एक व्यक्ति ने अपनी सारी ११७ एकड जमीन, अमरावती शहर का एक मकान भूदान में दे दिया। उनसे पूछा पर उन्होंने कहा "मैं दर्जी के काम से पेट भर लूंगा। जिस जमीन को मैं जोतता नही और जिस मकान को मैं साफ नहीं करता उस जमीन एव मकान के किराये पर जिन्दा रहना पाप है। मैं उससे मुक्त होना चाहता हूं।"

छिंदवाड़ा जिले के गणेशगंज गांव का एक वाकया

एक प्रायमरी स्कूल के अध्यापक ने अपनी सब ३॥ एकड जमीन दान में दे दी। सभा के पूर्व भूदान का उनका कोई इरादा नही था।

छिंदवाड़ा जिले के झिलमिली गांव का एक प्रसंग

एक प्राइमरी स्कूल के अध्यापक ने ३॥ एकड जमीन में से १ एकड जमीन दान में दे दी, एक महीने का वेतन दिया और जमीन जिसे मिलेगी उसके खेत में एक महीने मुफ्त काम करने का वचन दिया।

होशंगाबाद जिले के बरमान गांव में सर्वस्व दान

कुवरबाई नाम की एक महिला ने दो एकड जमीन का सर्वस्व दान किया। पूछने पर कहा "मैं गाय भैंस के दूध से अपना पेट भर लूंगी।"

गया जिले के टिकारी गांव के महाराजकुमार का महान दान

टिकारी के महाराजकुमार ने ३० बीघा जमीन दान मे देने को कहा। जब जयप्रकाशजी ने उन्हें समझाया तब ३० बीघा से ३९७० बीघा जमीन ४००० एकड की सपत्ति में से दान में देने का उसी समय

कबूल कर लिया।

हजारीबाग जिले में रंका के राजा साहब का दान

रंका के राजा ने प्रथम एवं द्वितीय बार कार्यकर्ताओं को उन्होंने जितनी जमीन मांगी याने ५०० एवं ५००० एकड जमीन दे दी। जब विनोबाजी गये तब उन्होंने जितनी मांगी उतनी याने पूरी की पूरी १ लाख एकड पडती जमीन एवं २००० एकड जमीन काश्त की (कुल काश्त की जमीन का छठवां हिस्सा) विनोबाजी को दान में दे दी।

बिहार के रामगढ़ के राजा का अढ़ाई लाख एकड़ भूमि का दान

श्री कामाख्यानारायनसिंह नाम के रामगढ के राजा ने पहले १ लाख एकड जमीन दान में देने पर भी जब विनोबाजी गये तब ढाई लाख एकड-जमीन दान में दे दी।

श्री शंकरराव देव के दौरे की एक घटना

उनका भाषण हुआ एक मामूली शहर की सभा में। भीड काफी थी। भाषण के पश्चात शंकररावजी ने कहा "इस देश में जो जोतने लायक जमीन है वह और जो जोतने वाले हैं वह, इनका हिसाब लगाकर देखिये। एक आदमी को पौन एकड जमीन भी नसीब नहीं हो सकती। ऐसी हालत में ज्यादा जमीन का मालिक बने रहना, न तो धर्म संगत है, न मानवता युक्त ही।" यह दलील सुनने वालों पर असर कर गयी। सभा के अंत में भूदान की मांग की गयी। एक भाई ने उठ कर कहा "मैं तेरह एकड जमीन का दान दे रहा हूं। मेरे पास केवल १४ एकड भूमि है।" सारी सभा अवाक रह गयी। मित्रों ने उसे समझाने की कोशिश की। वह कहने लगा "मैंने हिसाब से थोडी कम दी है और खुद के लिये पाव एकड ज्यादा रख ली है। पता नहीं मोह से छुटकारा कैसे होगा।"

साम्यवादी भी दान दे रहे हैं*

लोगो को अचभा तो तब हुआ, जब मैंने सुना मैनपुरी जिले के कम्युनिस्ट नेता श्री बाबूराम पालीवाल ने भी, अपने गाव के नजदीक विनोबाजी कलेवे के लिये रुके तो, न सिर्फ दो एकड जमीन दी, बल्कि सहयोग का आश्वासन भी दिया।

(फिल्म समाप्त होकर सफेद चादर पर विनोबाजी की तस्वीर दिखती है और तस्वीर के साथ एक गीत गाया जाता है)

गीत

जनकी जर्जर झोपड़ियो में
जागृति ज्योति जगाता।
गाव गाव की गली गली में
मोहन मत्र सुनाता।
कोटि कोटि भारत की जनता में
नवजीवन आया।
निखर रही धीरे-धीरे दुर्बल
समाज की काया।
दलता, दानवता को,
करता मानवता की रक्षा।
चला अग्नि के पथ पर
देता अपनी अग्नि परीक्षा।
चला गरीबी दफनाने,
मिट्टी में स्वर्ण उगाने।
बजर परती धरती पर
अब चला अन्न उपजाने।
सत्य, अहिंसा, समता

मानवता का परम पुजारी,
माग रहा है दान भूमि का
दर दर बना भिखारी।
भारत में सर्वत्र एकता की
गगा लहराता।
चला पताका, रामराज्य की
फहर-फहर फहराता।
क्यों न किसानों की दुनिया में
नव परिवर्तन आवे,
जब बापू के पदचिन्हों पर
चला विनोबा भावे।*

(गीत समाप्त होने पर फिर उजेला होता है)

जवाहरलाल—निहायत खुशी हुई मुझे यह फिल्म देखकर, सपूरणदासजी। भूदान का यह काम कित्ती छोटी शक्ल में शुरू हुआ और कहा से कहा पहुच गया। कई मर्तबा बडे बडे साइन्टिस्ट और एक्सपर्ट सोचते ही रह जाते हैं। इस तरह की बातें उनके सोच-विचार के दायरे में ही नही आ पाती और विनोबाजी के मानिन्द आदमी इन कामों को कर डालते हैं। गाधीजी का भी यही हाल था। एक छोटी सी बात शुरू करते। हम लोगो की समझ में ही न आता कि जिस काम के लिये यह बात शुरू की गई है उस छोटी सी चीज से वह बडी बात कैसे हासिल होगी, लेकिन उस छोटी सी बात से बडे-बडे नतीजे निकलते। जब गाधीजी ने नमक सत्याग्रह शुरू किया तब वह हम में से बहुत कम की समझ में आया था। पुराने इन्कलाबो को अगर छोड भी दिया जाय और रूस और चीन के हाल के इन्किलाबो को ही

* श्री अरविन्द कृत

लिया जाय तो हमें मालूम होता है कि जमीन के मसले को हल करने में उन मुल्को को क्या क्या करना पडा। कित्तो खून खराबी हुई है। हमारे मुल्क को जमीन का पूरा मसला चाहे भूदान से हल न भी हो सके और इसके मुताल्लिक चाहे हमें कुछ कानून बनाने भी पडें मगर इस भूदान से इस मसले को हल करने में हमें बहुत बडी मदद मिलेगी।

तीसरा—भूमि सबंधी कानून बनाने के विनोवाजी तथा उनके साथी विरुद्ध भी नहीं हैं।

(कुछ देर निस्तब्धता)

जवाहरलाल—(उठते हुए) अच्छा तो फिर इजाजत। विनोवाजी और आप लोगो को इस काम में पूरी कामयाबी मिले, यह मेरी दिली ख्वाइश है।

(जवाहरलालजी के उठते ही जो सब लोग खड़े हो गये थे अब पण्डित जी का हाथ जोड़कर अभिवादन करते हैं। उसी समय एक वृद्ध का हाथ में एक पत्र लिये हुए शीघ्रता से प्रवेश। वह वृद्ध हाथ जोडकर झुककर पण्डितजी का अभिवादन कर वह पत्र उन्हें देता है। जवाहरलालजी सरसरी ढंग से उस पत्र को पढते हैं। सब लोग उस वृद्ध की ओर देखते हैं)

जवाहरलाल—(वृद्ध से) शुक्रिया, बहुत बहुत शुक्रिया। (शेष उपस्थित लोगों से) लीजिये मुझे भी भूदान मिल रहा है। लडके का दान पिता लाये हैं। सुनिये क्या लिखा है लडके ने अपने खत में। (पत्र पढ़ते हैं)

बच्चो के लाडले नेहरू चाचा,

जयहिन्द

सेवा में सविनय निवेदन है मुझे लोगो से जबानी और अखबारो के समाचारो से मालूम हुआ कि लोग सहर्ष गरीब लोगो के वास्ते मुफ्त

जमीनें आचार्य विनोबा भावे की सस्था को भेट कर रहे है । मैं भी अपनी हार्दिक इच्छा से श्री नेहरू चाचा की ६३ वी वर्षगाठ की खुशी में नीचे लिखी अपनी कुल जमीन जायदाद, मकान वगैरह भेट करता हूँ। मुझे उम्मीद है आप मेरी भट स्वीकार करेंगे ।

जमीन जायदाद जहा है—मुकाम पुतो, तहसील डिगोडा, रियासत टीकमगढ, जिला झासी, विन्ध्यप्रदेश ।

जमीन जिनके नाम है—रामसिह दागी, रघुवरसिह दागी ।

तादाद जमीन—जमीन वाली बोसियार करीब ७० एकड, मय दो कुए व दो मकान मय हाते के ।

ये ऊपर लिखे दोनो हमारे बाबा थे । इनकी औलाद में सिर्फ हमारे पिता श्री परमानद दागी है । मैंने उनकी इजाजत ले ली है, उनके भी दस्तखत साथ में है । मैं प्रार्थना करता हू कि सस्था ऊपर लिखी जमीन जायदाद को फौरन अपने कब्जे में ले ले ।

मेरा यह पत्र पिताजी श्री परमानद दागी स्वयं आपको देगे ।

इति

दर्शनाभिलाषी सेवक,

कृष्णकुमार दागी,

कक्षा चौथी हिन्दी, उम्र नौ साल ।

(पत्र का अतिम भाग पढते पढते जवाहरलालजी का कठ गद्गद हो जाता है)

सम्पूरणदास—एक बच्चे का यह दान !

एक महिला—और उसका पत्र लेकर उसके पिता का स्वय आगमन ।

दूसरी महिला—फिर सर्वस्व दान !

तीसरी महिला—आदर्श, महान आदर्श दान है यह !

जवाहरलाल—(जिनकी दृष्टि अभी भी पत्र पर ही जमी हुई है। उसी प्रकार गद्‌गद् स्वर में) बेशक..... बेशक ।

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान—कलकत्ते का विक्टोरिया मेमोरियल

समय—प्रात.काल

(पीछे की ओर विक्टोरिया मेमोरियल भवन का कुछ भाग दिखायी पड़ता है । प्रातःकाल की चहल कदमी को बहुत लोग आये हुए हैं । कुछ घूम रहे हैं, कुछ इधर-उधर बैठे हैं । बगीचे के एक भाग में नर-नारियों का एक समुदाय बैठा हुआ बातें कर रहा है । इस समुदाय में कुछ कांग्रेसी, कुछ प्रजा समाजवादी, कुछ जनसंघी, रामराज्य परिषद वाले और हिन्दू महासभाई, कुछ साम्यवादी और कुछ भिन्नभिन्न वर्गों के साधारण नागरिक हैं। कांग्रेसी पहचाने जाते हैं अपने खादी के कपड़ों से, प्रजा समाजवादी अपनी लाल टोपियों से, जनसंघी रामराज्य परिषदवाले तथा हिन्दू सभाई अपने ललाट पर के तिलकों से और साम्यवादी तथा अन्य नागरिक अपनी बातचीत के ढंग से)

एक कांग्रेसी— हा, विनोबाजी की माग पाच करोड़ एकड भूमि की है ।

एक नागरिक—(कुछ आश्चर्य से) पाच करोड एकड ?

वही कांग्रेसी—जी हा, पाच करोड एकड और इस माग के पीछे एक पूरा हिसाब है ।

वही नागरिक---कैसा ?

वही कांग्रेसी---इस देश में छत्तीस करोड मनुष्य रहते हैं। इन छत्तीस करोड मानवो में तीस करोड अपनी जीविका खेती से चलाते हैं। तीस करोड एकड ही यहा खेती के लायक जमीन है। इन तीस करोड आदमियो मे पाच करोड भूमि हीन हैं। इन पाच करोड भूमि-हीनो के लिये विनोबाजी पाच करोड एकड जमीन चाहते हैं। चूंकि खेती करने वालो में एक छठवा भाग लोग भूमि हीन है और चूंकि जमीन उतनी ही है जितने खेती पर गुजर बसर करने वाले है इससे विनोबाजी कहते है कि हर भूमि-पति अपनी भूमि का एक छठवा भाग दान में दे दे।

एक प्रजा समाजवादी---सारा किला हवा में बनाया जा रहा है।

दूसरा समाजवादी---बिलकुल।

एक साम्यवादी---और जो कुछ हो रहा है सोशोब ठो हमारा साम्यवाद का सारा वैज्ञानिक सिद्धान्त का बिरुद्ध है।

दूसरा साम्यवादी---सर्वथा अवैज्ञानिक। सर्वथा अवैज्ञानिक।

रामराज्य परिषद् वाला---और यह कैसा दान है ?

जनसघी---और कैसा यज्ञ है ?

हिन्दूसभाई---हा, किस हिन्दू शास्त्र के अनुसार।

एक मुसलमान---और कुरान शरीफ की भी किसी आयत के मुताबिक नही।

दूसरा कांग्रेसी---न कभी पाच करोड एकड जमीन मिलना है और न भूमि हीनो की समस्या हल होना है।

एक व्यक्ति---हा, न तो नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।

एक सिख---अजी डडा दा काम कभी बातां से हुआ है। जब डडा उठेगा तब जमीन मिलेगी, बातो से मिलने वाली नही है।

एक मारवाड़ी—हर बात में डंडा, सरदारजी। कठे कठे किण-किण बात पे डंडा उठा स्यो ?

वही सिख—डंडा दा काम, सेठजी, बड़ा ओखा है, इयक दो तीन।

(सब लोग हंस पड़ते हैं)

पहला कांग्रेसी—मैं भी यह मानता हू कि सबका सब भूदान यज्ञ एक बड़ा भारी हवाई किला है।

एक महिला—कितने दिन से यह आन्दोलन चल रहा है....... कोई दो ढाई वर्ष हुए होंगे . ...क्यों ?

पहला कांग्रेसी—(विचारते हुए) हां, और क्या।

वही महिला—और इतने समय में कितनी जमीन मिली होगी ?

पहला कांग्रेसी—करीब बीस लाख एकड़।

वही महिला—विनोबाजी पांच करोड एकड जमीन चाहते हैं सन् १९५७ तक अर्थात् अगले चार वर्षों के भीतर; क्यों ?

पहला कांग्रेसी—हा, सन् १९५७ तक।

वही महिला—(उपस्थित समुदाय से) अब आप हीं लोग देखिये दो ढाई साल में २० लाख एकड जमीन मिली तो अगले चार साल में पाच करोड एकड कैसे मिल जायगी ?

पहला साम्यवादी—कोभी....कोभी नोही हो शोकोता।

बहुत से लोग—(एक साथ) असभव है। एकदम गैर मुमकिन।

पहला कांग्रेसी—इसका तो उत्तर है।

मुसलमान—अजी जनाबे आली, जवाब तो हर बात का दिया जा सकता है, लेकिन उस जवाब में कुछ कूवत भी है ?

पहला कांग्रेसी—नही, नही, इसका उत्तर तो है । पहले साल बिनोवाजी को सिर्फ एक लाख एकड जमीन मिली थी । दूसरे वर्ष इससे बारह गुनी ज्यादा अर्थात् बारह लाख एकड मिली । अब यदि हर साल पहली साल से बारह-बारह गुनी अधिक मिलने लगे तो सन् १९५७ तक पाच करोड एकड से भी अधिक हो जाती हैं ।

मारवाडी—अजी, भाई जी, यो हिसाब तो कागद को हिसाब है, कागद को ।

सिख—ठीक कह रहा है, सेठ ।

पहला कांग्रेसी—फिर बिनोवाजी सरकार से भी जमीनें मागेंगे। उनका कहना है कि जनता से जमीन मिलने पर एक नया वायु मण्डल बनगा और सरकार से जमीन मागने के लिये उनके हाथ मजबूत होंगे। जमीदारी खत्म होने पर सरकार के पास काफी जमीन आयी है । अब सरकार हर कुटुम्ब या व्यक्ति के पास अधिक से अधिक कितनी जमीन रह सकती है इस सबध में कानून बनाने वाली है । उधर स्टेट ड्यूटी एक्ट भी बन गया है और सन् १९५७ तक उनमें से भी कुछ लोग मरेंगे ही जिनके पास जमीनें हैं । इस प्रकार सरकार के पास सन् १९५७ तक और भी जमीनें आ जायेंगी । तो पाच करोड एकड में जो कोर कसर रह जायगी वह पूरी कर देगी सरकार ।

पहला प्रजा समाजवादी—हवाई किला न० २ ।

(कुछ लोग हस पडते है)

पहला कांग्रेसी—(मुस्कराते हुए) मैं तो आपको भूदान-यज्ञ का सारा शास्त्र बता रहा हू । मैं भी यह कहा मानता हू कि यह सफल होने वाला है ।

एक नागरिक—पर, आपकी कांग्रेस ने और (प्रजा समाजवादी से) और आपके समाजवादी दल ने तो भूदान यज्ञ में

सहायता देने के लिये प्रस्ताव पास किये है, आपके नेताओं ने न जाने कितनी अपीलें की है।

दूसरा नागरिक—अरे यह सब अगले चुनाव की तैयारी है, अगले चुनाव की।

तीसरा नागरिक—कैसे पते की बात कही है।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) क्या खूब। क्या खूब।

कुछ कांग्रेसवादी और प्रजा समाजवादी—(एक साथ) नही नही ऐसी बात नही है।

एक नागरिक—(बीच ही में) छोडिये, छोडिये इस बात को। हम यहा किसी पर कटाक्ष करने या व्यग कसने नही बैठे है। "वादे वादे जायते तत्व बोधा" सिद्धान्त के अनुसार हम तो इस भूदान यज्ञ को जरा समझने के लिये बातें कर रहे थे। (पहले कांग्रेसी से) अब यह बताइये कि यदि हम थोडी देर को यह मान भी लें कि पाच करोड एकड जमीन मिल जायगी तो इसका वितरण कैसे होगा और क्या सबको बराबर जमीन दी जायगी ?

पहला कांग्रेसी—वितरण के लिये भी योजना बन गयी है। जिस गाव की जमीन होगी उस गाव के लोगो को इकट्ठा किया जायेगा और उस गाव के लोगो से पूछकर उस गाव के भूमि हीनो को औसत से पाच पाच व्यक्तियो के एक-एक कुटुम्ब को पाच-पाच एकड जमीन दी जायगी। बहुत उपजाऊ जमीन होगी तो पाच एकड से कम और कम उपजाऊ होगी तो पाच एकड से अधिक। एक कुटुम्ब का गुजर-बसर जितनी जमीन से चलेगा उतनी। उस जमीन को दस बरस तक यह कुटुम्ब न बेच सकेगा न रहन कर सकेगा और न किसी को शिकमी उठा सकेगा। इस विषय में कुछ कानून भी बन चुके है। और बनते जा रहे है।

एक महिला—और वे भूमि हीन बेचारे उस जमीन पर जो पूंजी

लगेगी वह कहा से लावेंगे, क्योंकि जो जमीन दान में मिली है वह अधिकाश पडती और रद्दी ही होगी ?

पहला काग्रेसी—नही एक तो सब जमीन पडती और रद्दी नहीं है, सब तरह की है और बहुत कुछ अच्छी भी है, पर खेती में लागत और श्रम अवश्य लगेगा। इसीलिये विनोबाजी अब भूदान के साथ सपत्ति दान और श्रम दान भी मागते है। फिर सरकार से बैलो के लिये तथा बीज के लिये तकावी मिलेगी, जो इस समय वे काश्तकारों को भी मिलती है।

एक ईसाई—आल फैन्टेस्टिक। आल फैन्टेस्टिक।

एक व्यक्ति—(कुछ दूर पर देखते हुए) लीजिये, जयप्रकाश-नारायणजी आ रहे है अब उनसे और सुन लीजियेगा भूदान पर एक लम्बा भाषण।

एक महिला—(उसी ओर देखते हुए) ये तो इस भूदान के मामले में पागल हो गये है।

तीसरा व्यक्ति—हा, यह भूदान-यज्ञ आजकल इनके दिवस की चिन्ता और रात्रि का स्वप्न है।

(सब लोग उसी ओर देखने लगते है, जहां पहले व्यक्ति ने देखकर जयप्रकाशनारायणजी के आगमन की सूचना दी थी। कुछ देर निस्तब्धता। जयप्रकाशजी को समीप देखकर सब लोग खडे हो जाते है। जयप्रकाशनारायण का प्रवेश। सभी उनका अभिवादन करते है। वे सबके अभिवादन का हाथ जोड नम्रतापूर्वक उत्तर देते है)

जयप्रकाशनारायण—अच्छा, आज तो यहा बहुत से दलों और समुदायो के महानुभाव इकट्ठे ही मिल गये।

एक व्यक्ति—जी हा, हम लोग अभी यहा आपके आजकल के

प्रिय विषय भूदान-यज्ञ की चर्चा कर रहे थे ।

जयप्रकाशनारायण—अच्छा, अच्छा, बैठिये, तो फिर मैं भी आपकी इस चर्चा में थोडा सा भाग ले लूं ।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) हां, हा, हम सबको बड़ी खुशी होगी, बड़ी खुशी ।

(जयप्रकाशनारायण और सारा समुदाय बैठ जाता है)

जयप्रकाशनारायण—कहिये, भूदान के सम्बन्ध में क्या चर्चा हो रही थी ?

(कुछ लोग मुस्कराते हुए एक दूसरे की ओर देखते हैं)

जयप्रकाशनारायण—(इन मुस्कराने वालों में एक-एक की तरफ बारी बारी से देखते हैं) अच्छा, आप लोगो की मुद्रा से जान पडता है कि भूदान की सफलता में आप लोगो को सन्देह है ?

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) ऐसा. ...ऐसा तो नही, पर....पर. . .

जयप्रकाशनारायण—नही,नही, आप ही लोगो की बात नही है, पढे लिखे लोगो को इस आन्दोलन की सफलता पर मुश्किल से विश्वास होता है । यही बात थी गाधीजी के स्वराज्य के आन्दोलन के सम्बन्ध में। ज्यादातर पढे लिखे लोग,जिनमें वे लोग तक शामिल थे, जो गाधीजी के नेतृत्व में काम करते थे, गाधीजी के तरीको से स्वराज्य मिलेगा, इस बात पर सदिग्ध ही थे ।

एक व्यक्ति—आप कहते है कि गाधीजी के नेतृत्व में काम करने वाले भी उनके तरीको में विश्वास नही रखते थे ?

जयप्रकाशनारायण—कई ।

वही व्यक्ति—तब ऐसे व्यक्ति उनके नेतृत्व में काम क्यो करते थे?

जयप्रकाशनारायण—क्योंकि उन्हें खुद कोई दूसरा तरीका

सूझता नही था ।

(कुछ लोग हस पड़ते है)

जयप्रकाशनारायण—हां, हां, यह तो था ही । और गांधीजी के तरीको में विश्वास न रखते हुए भी उनके नेतृत्व में काम करनेवालो की देशभक्ति में कोई कोर कसर न थी, बल्कि अपनी उत्कट देशभक्ति के कारणही वे गांधीजी का, उनके तरीको मे पूरा विश्वास न रखते हुए भी, ईमानदारी से अनुसरण करते थे। (कुछ रुककर) सभी देशो में पढ़े लिखे लोग जल्दी से किसी बात पर विश्वास नही करते और हमारे देश में तो हम पढ़े लिखे लोग अविश्वास के मूर्तिमन्त रूप हो गये है ।

एक महिला—इसका कारण ?

जयप्रकाशनारायण—इसका प्रधान कारण है आधुनिक शिक्षा । खैर छोड़िये इस बात को हम भूदान पर आयें। आप लोगों को इस विषय मे जो शकाएं होंगी वे प्राय वही होंगी जो मैंने अधिकाश स्थानो में पायी । अर्थात् जितनी जमीन की जरूरत है उतनी मिलेगी या नही ? मिली हुई जमीन बाटी कैसे जायगी ? इत्यादि । क्यो इसी तरह की शकायें हैं या और कोई ?

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) हां हां बस इसी तरह की ।

जयप्रकाशनारायण—मैंने कहा न सब जगह ये शकाएं प्राय एकसी है, पर इन शकाओं के समाधान के सम्बन्ध में लोगो के मतों में विभिन्नता है ।

कुछ व्यक्ति—कैसी ?

जयप्रकाशनारायण—जैसे पहले इसी बात को ले लीजिये कि जितनी जमीन की जरूरत है उतनी मिलेगी या नही । इस सम्बन्ध में जो लोग भूदान-यज्ञ का काम कर रहे हैं उन सबकी एक राय नहीं ।

आप जानते हैं विनोबाजी कितनी जमीन चाहते हैं ?

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) पाच करोड एकड ?

जयप्रकाशनारायण—ठीक, पर मेरी राय है कि इस देश की भूमि का प्रश्न हल करने के लिये इससे भी अधिक भूमि चाहिये । इसीलिये मैं कहा करता हू कि भूदान-यज्ञ के इस आन्दोलन में आगे चलकर सत्याग्रह की भी आवश्यकता पड सकती है ।

एक व्यक्ति—हा, यह आपने अपने कई भाषणो में कहा है ।

जयप्रकाशनारायण—फिर भूमि का बटवारा केवल भूमिदान में मिली हुई जमीन से ही सम्बन्ध रखता है, यह भी मैं नही मानता ।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) तब ?

जयप्रकाशनारायण—मैं तो यह मानता हू कि इस देश की सारी जमीन का पुन वितरण होना चाहिये ।

एक प्रजासमाजवादी—यह तो हमारे दल के कार्यक्रम का भी एक मुख्य विषय है ।

एक कांग्रेसवादी—काग्रेस भी यह कहा चाहती है कि जिनके पास जितनी जमीन है सब जैसी की तैसी रहने दी जाय ।

एक जनसघी—तो जिस तरह जमींदारो को लूटा है, उसी तरह इन बेचारो को भी लूट लो ।

एक साम्यवादी—(उत्तेजित होकर) लूट । अरे, लुटेरा तो जमींदार था । भूमि पोथी है । डाकू कोही का

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) शान्ति, शान्ति ।

जयप्रकाशनारायण—देखिये, दरअसल यह सवाल समाज के नये सगठन के लिये एक बुनियादी सवाल है । भिन्न-भिन्न लोग, भिन्न-

भिन्न दल इस विषय में भिन्न-भिन्न राय रखते हैं। मेरे मतानुसार इस देश की तमाम जमीन का फिर से बटवारा होना चाहिये। इसीलिये इस बटवारे के सम्बन्ध में भी मेरी राय है कि आगे चलकर सरकार के खिलाफ भी सत्याग्रह करने का मौका आ सकता है।

पहला कांग्रेसी—और इन मतों को रखते हुए भी आप विनोबाजी के भूदान-यज्ञ आन्दोलन के सबसे बड़े समर्थकों में हैं।

जयप्रकाशनारायण—मेरे इन मतों के विरुद्ध विनोबाजी ने कभी एक शब्द भी नहीं कहा, बल्कि आगे चलकर सत्याग्रह की आवश्यकता कभी भी नहीं पड़ेगी यह भी उन्होंने नहीं कहा। मैं भूदान यज्ञ का समर्थक इसलिये हू कि देश मे इस भूदान यज्ञ से समाज के नये सगठन के सम्बन्ध में जो एक वायु मण्डल तैयार हो रहा है वह ससार के इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना है। जिस तरह गाधीजी ने बिना खून बहाये स्वराज्य प्राप्त किया उसी प्रकार देश की आर्थिक असमानता को दूर करने के लिये यह भूमिदान यज्ञ बिना खून बहाये एक नये ढग की क्रान्ति ला रहा है। इस देश के सभी प्रकार के लोगो में, चाहे वे धनवान हो या निर्धन, जो हृदय परिवर्तन हो रहा है वह देखने की चीज है। मैं भी पश्चिमी शिक्षा पाया हुआ व्यक्ति हू, पर इस भूदान यज्ञ के सिलसिले में मैंने प्राचीन भारत के दधीचि, हरिश्चन्द्र, शबरी आदि के सदृश दानियों और श्रद्धालुओ को देखा है। फिर यह एक ऐसा काम है जिसमें सब प्रकार के दल अपनी दलगत बातो से ऊपर उठ एक साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम कर सकते हैं। एक काम में एक दूसरे से सहयोग के बाद और भी अनेक कामो में परस्पर सहयोग हो सकता है। देश के पुनर्निर्माण में मैं इस प्रकार के सहयोग को आज सबसे महत्वपूर्ण मानता हू (कुछ रुककर) मैं आप सबसे प्रार्थना करता हू कि शकाओ को एक तरफ रखकर इस

वक्त सब लोग विनोबाजी के इस भूदान यज्ञ में जुट जाइये और अपनी-अपनी आहुति इस यज्ञ मे डालिये ।

एक रामराज्य परिषद् वाला—यह कैसा यज्ञ है ? किस वेद, किस शास्त्र के अनुसार ?

एक हिन्दू सभाई—और यह कैसा दान है ? सतोगुणी, रजोगुणी या तमोगुणी ?

जयप्रकाशनारायण—यज्ञ और दान शब्द से प्रचलित अर्थों में मत जाइये । यह यज्ञ और दान क्रान्तिकारी यज्ञ और दान है ।

एक साम्यवादी—क्रान्ति शब्द का बार-बार उपयोगकर आप उस शब्द को लज्जित मत कीजिये ।

दूसरा साम्यवादी—क्रान्ति क्रान्ति हो आ रोशिया मे, चाइना में ।

जयप्रकाशनारायण—रूस और चीन मे क्राति नही हुई यह भ नही कहता, पर रूस और चीन की हर बात में नकल की जाय यह भी मे जरूरी नही मानता, साथ ही हर देश म रूस और चीन के ढग की ही क्रान्ति होगी यह भविष्यवाणी भी कोई नही कर सकता । **(कुछ रुककर)** कहिये फिर ?

(अधिकांश लोग एक दूसरे की ओर देखते हं)

जयप्रकाशनारायण—मं जानता हू कि पढे लिखे लोगो की शकाओ का समाधान कर उन्हें किसी काम में जुटा देना यह सरल बात नही हं । **(कुछ रुककर)** सोचिये खूब सोचिये । यदि आपने निष्पक्षता और शान्ति से सब बातो पर विचार किया तो मेरा निश्चित विश्वास हं कि आप एक ही नतीजे पर पहुचेगे कि भूदान यज्ञ से महान

काम इस समय देश में और नहीं है।

(नेपथ्य में एक गान का ध्वनि सुन पड़ती है। सबका ध्यान उस ओर आकर्षित होता है)

गीत

आज इक फकीर की जो भूमि की पुकार है,
पुकार है यह दीन की यह देश की पुकार है,
पुकार दीन हीन की, न अब भुलायेंगे।
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे ॥१॥
बापू की थी कल्पना जो सत्य की स्वराज्य की,
यह संत जोड़ने चला, लड़ी वह रामराज्य की,
संत के कदम पे हम कदम बढायेंगे।
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे ॥२॥
आज है चतुर दिशा में गूंज साम्यवाद की,
कत्ल से, कानून से, खूनी क्रान्ति नाद की,
किन्तु हम तो करुणा का ही पथ बनायेंगे।
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे ॥३॥
प्रेम से हो भूमिदान, प्रेम से ही क्रान्ति हो,
विश्व का कलह मिटे, फिर सदा को शान्ति हो,
हम मनुज को शान्ति की सुधा पिलायेंगे।
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे ॥४॥
जिसके भूमि है नहीं, उसे भी भूमि चाहिये,
सबको वायु चाहिये, सबको आयु चाहिये
अब किसी के भाग को न हम दबायेंगे।
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे ॥५॥
भूमि-दान न भीख का प्रकार है,

जिसके भूमि है नहीं उसे भी स्वाधिकार है,
भूमि देके अपना फर्ज हम निभायेंगे।
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे ॥६॥
भूमि-दान दो मिले नई जगत को जिन्दगी.
भूमि-दान दो, मिले नई मनुज को जिन्दगी,
भूमि-दान दे, जगत का विष भगायेंगे।
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे ॥७॥
भूमि-दान देंगे दूसरों से भी दिलायेंगे
खुद जियेंगे और दूसरों को भी जिलायेंगे,
भूमि-दान दे, धरा पै स्वर्ग लायेंगे।
भूमि-दान-यज्ञ हम सरल बनायेंगे ॥८॥
सबके पास हो धरा, सभी के पास धाम हो,
सबको अन्न वस्त्र हो, सभी के पास काम हो,
फिर अशान्त की निशा को हम मिटायेंगे।
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे ॥९॥
द्वार-द्वार नग्न पद जी दीन हेतु जा रहा,
यह राम है, या कृष्ण है या विश्वबन्धु आ रहा,
इस 'विनोबा' संत पै सब कुछ लुटायेंगे।
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे ॥१०॥
सत्य शान्ति को दिशा में यह नया प्रयोग है,
सन्त का प्रयास है, यह एक शुभ संयोग है,
उठ पड़ो ऐ भारतीय जग जगायेंगे।
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे ॥११॥*

लघु यवनिका

* श्री रघुराजसिंह कृत

चौथा दृश्य

स्थान—तिलगाने म नालगुण्डा
समय—अर्द्धरात्रि

(वही दृश्य है जो पहले अक में पहले और चौथे दृश्य में था। धर्मव्रत अकेला नाले के किनारे बैठा हुआ नाले के पानी से रगड-रगड कर अपने हाथ धो रहा है। धोते धोते रुककर गौर से अपने हाथों को देखना और फिर धोना आरम्भ करता है। कुछ गुनगुनाता जाता है। गुनगुनाते गुनगुनाते जोर से बोलने लगता है)

धर्मव्रत—(हथेलियो को देखते हुए) कितना कितना धोता हु, पर पर दाग दाग ही नहीं नहा मिटते। य य लाल लाल लाल लाल खून खून के दाग। ओह ! (फिर चुप होकर हथेलिया को रगड-रगडकर धोने लगता है। कुछ देर तक धोने के बाद फिर हथेलियो को देखते हुए) हैं हैं आज तो आज तो इनमें और भी और भी रग रग बढ़ गया हा हा बढ गया है। (आखें फाड-फाडकर और गौर से हथेलियां को देखते हुए खडे होकर) रग में फीका फीकापन तो दूर हा उलटी चटक चटक आ रही है। जैसे जैसे धोता हू रग उलटा गहरा गहरा होता जा रहा है क्या. क्या है यह सब ? (फिर चप होकर बैठकर

नही बन पाता। (रुककर) और फिर और फिर जब
ने (खड़े होकर जेब से पिस्तौल निकाल उसे देखते हुए) अपनी
अपना इस पिस्तौ- कैसी सुन्दर कैसी सुन्दर और और साथ
हा कैसी कैसी भयानक हा भयानक है मेरी यह छोटी छोटी सी पिस्तौल
हा तो जब मैंने अपनी इस छोटी सी सुन्दर और भयानक हा
सुन्दर और भयानक पिस्तौल से उसे आहत आहत किया। तब
तब रुद्रदत्त ने कहा था आज हमने क्रान्ति की चण्डी के खप्पर पर पवित्र
से पवित्र खून को चढाया है। (पिस्तौल को जेब में डालकर हथेलियों
को देखते हुए) तो नो क्या क्या इसीलिये इस खून इस खून के
दाग नही नही मिट रहे है कि यह खन यह खून पवित्र से पवित्र
हा, पवित्र से पवित्र था? (फिर चुप होकर बैठकर रगड-रगडकर हाथ
धोता है। कुछ देर बाद हथेलिया देखते हुए) नही नही मिटग
दाग शायद जिन्दगी भर हा जिन्दगी भर य दाग य
दाग नही कदापि नही मिटग। लेकिन लेकिन रुद्रदत्त ने कहा
था धन्य है मुझे जिसने उस चण्डी के खप्पर पर इस पवित्रतम खून को
चढाया। जो कुछ जो कुछ हो। पर पर मैं तो दुनिया में किसी
काम का था, किसी काम का था तो नहीं नहीं रहा। कहा
कहा जाऊ खून खून से लतपत इन हाथो के साथ। (कुछ
रुककर खड़े होकर अपने कपडों को देखता है। इसी बीच रुद्रदत्त
आता है। रुद्रदत्त धर्मव्रत को देखता है, पर धर्मव्रत उसे नहीं)

धर्मव्रत—है है। आज तो आज तो मेरे कपडो पर
कपडो पर भी खून के छोटे वे छोटे दिखाई पड रहे है, जा जो उस
दिन पड पड गये थे, जब मैंने उसकी लाश- हा उसकी लाश इस
नाले में फेंकी थी। (हाथों को जेब में डालकर)हाथो हाथो का
जेब में डालकर इधर-उधर इधर उधर बच बचाकर जा भी
जा भी सकता था पर इन कपडो कपडो के साथ, कहा कहा

कैसे कैसे जाऊगा कहीं ? कहीं भी लोग मेरे खून से सने हाँ, खून से सने कपडों को देखेंगे ..पुलिस पुलिस देखेगी। मैं मैं कैद कैद किया जाऊगा। मुझ पर खून का हाँ, खून का मुकदमा .. मुकदमा चलेगा। और और मुझे फासी फासी ..

रुद्रदत्त—(आगे बढ़कर जोर से) धर्मव्रत धर्मव्रत क्या हुआ है तुम्हें ?

धर्मव्रत—(एकदम चौंककर फिर रुद्रदत्त को सामने देख कुछ शान्त हो) ओ रुद्रदत्त जी ?

रुद्रदत्त—दिन और रात तुम हाथ धोया करते हो। न जाने क्या क्या बडबडाते रहते हो।

धर्मव्रत—(जेब से हाथों को निकालकर हथेलियों को स्वय देखते हुए फिर जल्दी से रुद्रदत्त के पास आ हथेलियो को उसे दिखाते हुए बडे तीक्ष्ण स्वर में) कैसे न धोऊं रुद्रदत्तजी, देखिये खून से लतपत है हाथ।

रुद्रदत्त—(धर्मव्रत के हाथों को देखते हुए) कहा कहा खून है ?

धर्मव्रत—(हथेलियों की ओर गौर से देखते हुए) कहा है खून ? आपको नहीं दिखाई देता ?

रुद्रदत्त—हो तब तो दिखे। तुम्हें भ्रम, भारी भ्रम हो गया है, धर्मव्रत।

धर्मव्रत—(पागलो के सदृश अट्टहास करके) भ्रम, भ्रम हो गया है ? (रुद्रदत्त के अत्यन्त निकट जाकर जोर से) अरे रुद्रदत्त, मुझे नहीं तुझे - तुझे भ्रम हो गया है। स्पष्ट दिख रहा है खून मेरी हथेलियों

पर, अरे लथपथ हैं मेरी हथेलियां खून से। और इस खून का रंग आज तो कितना गहरा हो गया है, चटकदार, एकदम लाल सुर्ख। (अपने कपड़ों को देखते हुए) फिर देख मेरे कपड़े भी तो देख। सन हैं खून से। (नाले की ओर देखते हुए) अरे, अरे आज तो इस नाले का पानी भी लाल हो गया है। पर उस लाश को नाले में फेंके तो काफी दिन हो गये न, रुद्रदत्त ? पर पर पानी पर तो लाश कई दिन बाद जो उतराती है। हा, हा, देख देख वह लाश भी अब उतरा रही है और अभी भी खून बह रहा है उस लाश से। इसी से नाले का पानी जो लाल हो रहा है।

रुद्रदत्त—(जो धर्मव्रत के एकाएक अट्टहास और जोर के इस भाषण से दंग सा होकर सहम सा गया था, धर्मव्रत के कन्धों को जोर से झकझोरते हुए) धर्मव्रत धर्मव्रत होश में आओ। क्या तुम बिलकुल पागल ही हो गये हो।

धर्मव्रत— (नाले की ओर देखते हुए) अरे, अरे यह तो जिन्दा है। उठ रहा है नाले से। (जेब से पिस्तौल निकालकर नाले की ओर दो गोलियां चलाता है) पुलिस, पुलिस ले ले पहले पुलिस को मारूंगा फिर खुद मर जाऊंगा पर पुलिस के हाथ पड़, अपने पर मुकदमा चलवा फांसी की सजा न भोगूंगा। (सामने की ओर दो गोली चलाता है। रुद्रदत्त बाल बाल बचता है)

रुद्रदत्त—(बड़ी जोर से चिल्लाकर) धर्मव्रत, धर्मव्रत।

(अब धर्मव्रत खुद अपनी छाती में अपनी पिस्तौल से गोली मारकर मरता है)

यवनिका

तीसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—गया में एक जमींदार के भवन का हाल

समय—तीसरा पहर

(हाल पुराने जमींदारों के हाल के सदृश सजा है। दीवारों पर मरे हुए जंगली जानवरों के चमड़े और सिर सुन्दरता से टांगे गये हैं। इन जानवरों में शेर, चीते, रण भैंसे, बारहसिंहे आदि हैं। इधर उधर दीवारों पर ही कुछ पुराने हथियार तलवारें भाले आदि सजाये गये हैं। फर्श पर कालीन गद्दे मसनद और सोफा कुर्सियां आदि हैं। कुछ जमींदार गद्दी पर और कुछ सोफा कुर्सियों आदि पर बैठे हैं। इनमें वृद्ध, अधेड़, तरुण सब प्रकार के हैं और इनकी वेष-भूषा भी भारतीय तथा पश्चिमीय दोनों तरह की है)

एक वृद्ध जमींदार—तो आखिर हमें गुफ्तगू कर इस बात का फ़ैसला तो करना ही होगा कि इस मामले में किया क्या जाय ?

दूसरा वृद्ध—बेशक।

कई—(एक साथ) हां, हां, इसमें शक ही क्या है।

पहला वृद्ध—पहले जमींदारी चली गयी, फिर जब यह सुना कि इसका भी कानून बनेगा कि फी शख्स या फी खानदान के पास इतनी जमीन से ज्यादा न रह सकेगी, तब जमीन बेचने का इरादा किया। अब इस विनोबा की वजह से जमीन का कोई खरीददार ही नहीं।

एक दूसरा वृद्ध—जमीनों की खरीद बिक्री से सरकारी खजाने

को स्टाम्प और रजिस्ट्री से बिहार सूबे मे जो माहवारी आमदनी थी वह कितनी घट गयी है ।

कुछ—(एक साथ कुछ आश्चर्य से) अच्छा !

वही जो उनके पहले बोल रहा था—जी हा ।

एक अन्य—हा, हा, यह जरूर हुआ होगा । मेरे पास कोई डेढ लाख एकड जमीन है । मै इन्ही अफवाहो की वजह से अपनी जमीन का ज्यादातर हिस्सा फरोख्त करना चाहता था और एक जमाने में उसकी काफी कीमत थी, साथ ही खरीददारो की भी कमी न थी, लेकिन आज कोई लेने वाला नही ।

एक दूसरा व्यक्ति—मेरे पास डेढ लाख एकड से भी कुछ ज्यादा ही जमीन होगी

कुछ—(एक साथ मुस्कराते हुए) डेढ लाख से कुछ ही ज्यादा

एक अन्य—तीन लाख से कम न होगी ।

वही जिसने कहा था कि डेढ लाख से कुछ ज्यादा ही होगी—हो सकता है तीन हो । पूरा हिसाब तो कारिन्दो को ही मालूम है ।

एक अन्य—अरे आपने तो अपनी कुल जमीन देखी ही न होगी ।

एक दूसरा—हममे से कितनो ने अपनी कुल जमीन देखी है ?

कुछ—(एक साथ) बहुत कम बहुत कम ने ।

एक अन्य—बडो की दूसरी बात है भई, हम छोटो छोटो न तो अपनी एक एक चप्पा जमीन देखी है ।

एक दूसरा—देखी ही क्या अपनी अपनी जमीनो पर हम रहते ही है ।

वही जिसने कहा था डेढ लाख से कुछ ज्यादा ही होगी—

में यह कह रहा था कि मेरा भी वही तजरवा है जो अभी हमें (उस जमींदार की ओर इशारा कर जिसने कहा था कि मेरे पास डेढ़ लाख एकड़ जमीन है) राजा शिवसत्यनारायण सिन्हा साहब ने बताया।

शिवसत्यनारायण सिन्हा--अरे छोडो भाई राजा वाजा कहना। अब कौन राजा रह गया ?

एक अन्य--हा, इस सल्तनत में सब हो गये कुलियो से भी बदतर।

पहला--और अब ज्यो ही जमीनें गयी सब हो जायगे भिखमंगे।

एक अन्य--एक दिन मेरी माताजी ने इस विषय में एक ऐसी बात कही थी जो मैं कभी न भूल सकूंगा।

कुछ--(एक साथ) क्या ?

वही एक--पहले मुझसे पूछने लगी कि जमींदारी तो चली गयी अब सुनती हूं कि जमीन भी जाने वाली है, क्या यह सच है ? और जब मैंने उन्हें सान्त्वना देने को यह कहा कि एक के पास सैकडो, हजारो, लाखो एकड़ जमीन रहे और निन्यानबे भीख मागें यह कैसे हो सकता है तब वे एकाएक बोली--वे निन्यानबे तो भीख मागते ही रहेगे, एक जो अभी भीख नही मागता वह और भीख मागने लगेगा। इस तरह यह सारा देश भिखमगो का देश हो जायगा।

कुछ--(एक साथ) ठीक . . ..बिलकुल ठीक कहा आपकी माताजी ने।

पहला--अच्छा अब हम अपनी असली बात पर फिर आवे। जमीनो के निस्वत जो कानून बनने वाला है उसके पहले यह जमीनें इस विनोबा की वजह से बेची किस तरह से जायें ?

एक अन्य--हां, इसकी तरकीब सोचनी ही चाहिये। हम समझते थे जमींदारी नही जायगी, वह चली गयी। जमीनों के निस्वत

कानून जरूर बनेगा। आधी दूधी जिस कीमत में भी जमीनें बिकें बच-कर गुजर-बसर के लिये कुछ रुपया तो इक्ट्ठा कर लें।

एक दूसरा--पर बिकें तब तो ?

एक अन्य--हा, ठीक कहते हैं आप। देखिये हमारे यहाँ कुछ ईतियो का वर्णन है।

एक अन्य--ईतिया। ईतिया क्या ?

वही--दैवी आपत्तिया।

एक दूसरा--जैसे ?

वही--जैसे टिड्डियो का आक्रमण।

कुछ--(एक साथ) अच्छा।

वही--तो विनोबा का यह भूदान में एक ईति मानता हू।

(कुछ लोग हस पडते हैं)

एक अन्य--जो कुछ हो कि तु मैं तो इस जमीन के प्रश्न को एक दूसरी दृष्टि से ही देखता हू।

एक दूसरा--कैसे ?

वही--देखिये, इस देश में अनाज की कमी है, है न ?

कुछ--(एक साथ) जरूर है।

वही--ऐसी दशा में क्या आप सोचते हैं कि सरकार जमीन के बटवारे का सवाल हाथ में लेगी, क्योंकि इससे उ पादन उल्टा घट जायगा और जितना रुपया आज हम बाहर के अनाज के लिये भेजते हैं उससे कहीं ज्यादा भेजना होगा।

एक अन्य--हाँ, हमें तो चाहिये बडे बडे फार्म, जहाँ मशीनो से सारा काम होकर उत्पादन बढाया जाय।

एक दूसरा—अरे छोडिये इस बात को। इस सरकार का काम आप समझते हैं मस्तिष्क से चलता है ?

एक अन्य—ठीक कहते हैं आप । इस सरकार में अक्ल ही हो तो फिर ऐसे काम क्यों करे जो कर रही है।

एक दूसरा—हा, चौपट कर दिया सारा देश ।

एक अन्य—बिलकुल चौपट । राजा महाराजाओं और जमींदारों को खत्म कर देश की सच्ची संपत्ति और सभ्यता का नाश कर दिया। इनकम टैक्स के मामले में नये नये कानून बनाकर और नई नई कारवाइया करके उद्योग धधों का जो प्रचार हो रहा था वह कतई रोक दिया और अब जमीन का बटवारा कर अनाज का उत्पादन समाप्त कर देगी ।

एक दूसरा—ठीक कहते थे (उसकी ओर संकेतकर जिसने अपनी माता की कहानी सुनाई थी) वैदेहीशरणनारायण सिन्हा, अगर यही सरकार रही तो कुछ दिनों में यह देश भिगमगों का देश रह जायगा।

एक अन्य—इसी कयामत का मुझे खौफ था, इसीलिये आप जानते हैं मैं सुराज के इतना खिलाफ था ।

शिवसत्यनारायण सिन्हा—आप ही क्या, नवाब साहब, हम लोगों में ज्यादा तर लोग स्वराज्य के खिलाफ थे, हम स्वराज्य के लायक हीं न थे ।

पहला—फिर अपनी बात पर वापस लौटने की मैं याद दिलाता हू । सोचिये यह कि इस जमीन के मामले में करना क्या है ?

(सब लोग एक दूसरे की ओर देखते हैं । कुछ देर निस्तब्धता)

पहला—तो किसी को कुछ सूझ नहीं रहा है ?

कुछ—(एक साथ) सच बात तो यही है।

एक नौजवान—मेरी राय सुनना चाहते हैं ?

कुछ—(एक साथ) कहिये कहिये ।

वही—मेरी यह राय है कि हमें स्वय अपनी जमीनें विनोबाजी को दे देनी चाहिये ।

एक बूढा—क्या क्या कहा ?

नवाब—यानि खुदकुशी कर लेनी चाहिये ।

कुछ—(एक साथ) क्या खूब ! वाह ! वाह !

वही—देखिये, कुछ दिन हुए मैंने एक प्रदर्शनी में एक चित्र देखा था। उस चित्र में एक तरफ समुद्र की उठती हुई लहरें दिखायी गयी थी और उन लहरों के सामने जमीन के एक छोटे टुकडे पर एक टूटा सा झोपडा था। झोपडे के बाहर एक कमर झुकी हुई दुबली पतली बुढिया हाथ में एक टूटी सी झाडू लिये उस झाडू से समुद्र की लहरो को रोक अपनी टूटी झोपडी बचाना चाहती थी। जैसा हास्यास्पद उस बुढिया का प्रयत्न था, वैसा ही हम जमीदारो का अपनी जमीन बचाने का प्रयत्न है ।

एक अन्य—आपको याद आया अपना कभी देखा हुआ एक चित्र, मुझे स्मरण आ रहा है अपना कभी सुना हुआ एक किस्सा ।

कुछ—(एक साथ) कहिये आप भी उसे कह डालिये ।

वही—एक दफा एक जगल में से कुल्हाडियो के लोहे के कुछ फल जा रहे थे। जगल के दरख्त उन्हें देखकर बहुत घबराये। एक समझदार वृक्ष ने अपने भाइयों की घबराहट देख उन्ही की भाषा में उनसे कहा कि इन लोहे के टुकडो का हमें तब तक डर नही जब तक हमारे भाई ही उनकी बेंट बनकर इनका साथ नही देते ।

वह नौजवान—तो आप मुझे कुल्हाडी का बेंट समझते हैं ?

वही--हममें से कुछ तो पहले ही कुल्हाडी के बेंट वन चुके हैं। आपकी इस वक्त की वात सुनकर कोई भी यह कहेगा कि अब आपकी भी वही वनने की वारी है ।

वह नौजवान--आप मेरे संबंध में जो भी राय रखना चाहें रखने के लिये स्वतन्त्र हैं लेकिन मैं आपसे कहना चाहता हू कि व्यापक दृष्टि को एक तरफ रख यदि हम अपने फिरके के हित की दृष्टि से भी इस सवाल को देखें तो भी हमारा फायदा विनोवाजी का साथ देने में ही है ।

कुछ--(एक साथ) कैसे ?

वह नौजवान--ऐसे कि विनोवाजी हमारी जमीन में से एक छठवा हिस्सा ही मागते हैं न ?

एक दूसरा--हा, अभी तो एक छठा भाग ही मागते हैं ।

वह नौजवान--अभी की वात ही लीजिये। आजकल दुनिया में सव चीजें इतनी तेज चाल से चल रही हैं कि वहुत दिन के लिये तो कोई भी किसी बात के संबंध में कोई निश्चित वात नही कह सकता। अभी तो विनोवाजी जमीन का एक छठवा हिस्सा ही चाहते हैं न ?

कुछ--(एक साथ) हा अभी तो इतना ही चाहते हैं ।

वह नौजवान--अभी यदि उन्हें इतनी जमीन मिल गई तो भूमिहीनों का सवाल हल हो जायगा और रूस तथा चीन में जिस तरह की क्रान्तियां हुई उस प्रकार की क्रान्ति से हमारा देश और उसी के साथ हम भी वच जायंगे, नही तो फिर यहा भी वही होगा जो रूस और चीन में हुआ और उसमें हमारा फिरका तो नेस्तनावूद हो जायगा। अभी एक भाई ने विनोवाजी के लिये ईत की उपमा दी थी। मैं तो उन्हें इस देश का ही नही देश के साथ अपने जमींदार वर्ग का भी तारक मानता हू ।

एक अन्य—तो आपने तो अपनी जमीन का छठवा हिस्सा देना विनोबाजी को तय कर ही लिया होगा ?

वह नौजवान—मेरी बात छोड दीजिये ।

कुछ—(एक साथ) नही, नही, बताइये, बताइये, आपने क्या तय किया है ?

वह नौजवान—देखिये, मेरा मत तो यह है कि दुनिया में सब चीजें परिवर्तनशील है। कभी मानव जगलो मे रहकर शिकार किया करता था, उस समय न जमीन किसी की थी और न कही खेती होती थी। फिर खेती शुरू हुई, उस समय जमीन समुदाय के हाथ में आयी, किसी व्यक्ति के नही। व्यक्तिगत सपत्ति के युग में पहले सामत-शाही आयी, जिसके अब हम भग्नावशेष है। सामन्तशाही के बाद पूँजीवाद की रचना हुई। अब यह भी लडखडा रहा है। अगर निन्यानवे भिखमगे है तो एक सपन्न नही रह सकता, चाहे सारा देश भिखमगा का ही क्यो न हो जाय। यह आर्थिक असमानता रह ही न सकती और जिस प्रकार निन्यानवे रहते है उसी तरह सौ वें को भी रहने के लिये तैयार होना पडेगा। मैंने अपनी सारी एक लाख एकड जमीन विनोबाजी को देना तय किया है।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ आश्चर्य से) सारी जमीन !

कुछ व्यक्ति—(एक साथ आश्चर्य से) एक लाख एकड !

(कुछ देर निस्तब्धता)

शिवसत्यनारायण सिन्हा—राजीवरजन सिन्हाजी, मै आपके पिता के दोस्तो में हू ।

राजीवरजन सिन्हा—मैं खूब जानता हू ।

शिवसत्यनारायण सिन्हा—इसीलिये आपको कुछ राय देने का हक रखता हू ।

राजीवरंजन सिन्हा—अवश्य ।

शिव सत्यनारायण सिन्हा—अभी आपके पिता के स्वर्गवास को बहुत वक्त नही बीता है । मैं कहना चाहता हूं कि आपको कुछ आख खोलकर चलना चाहिये ।

नवाब—और आपके वालिद मुझ पर भी बहुत इनायत रखते थे । आपने कभी सोचा कि आपने अगर ऐसा किया तो बिहिश्त मे उनकी रूह को कैसी ठेस पहुचेगी ?

(कोई कुछ नहीं बोलता । कुछ देर निस्तब्धता)

एक दूसरा—और यह भी सोच लीजिये कि इक्के दुक्के जो आपके पहले हमारा साथ छोड चुके है उनके सदृश ही आपका हाल होने वाला है । जिस तरह उनका किसी ने साथ नही दिया उसी तरह आपके फिरके का कोई आपका साथ भी न देगा ।

एक अन्य—हा, आप भी अकेले ही रहेगे ।

(नेपथ्य में इसी समय एकाएक रवीन्द्र बाबू का निम्नलिखित गायन होता है)

यदि तोर डाक सुने केउना आसे तबे एकला चलो रे,
एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो रे !
यदि केउ कथा ना कय, ओरे, ओरे, ओ अभागा,
यदि सबाई थाके मुख फिराये, सबाई करे भय तबे परान खुले
ओरे, तुई मुख फुटे तोर मनेर कथा एकला बोले रे !
यदि सबाई फिरे जाय, ओरे, ओ अभागा,
यदि गहन पथे जबार काले केउ फिरे ना तबे पथेर कांटा
ओ, तुई रक्त माखा चरन तले एकला दलो रे !
यदि आलो ना धरे, ओरे, ओरे, ओ अभागा,

यदि ज्ञान् बादले आवार राते दुआर देय घरे तबे बज्रानले
आपन बुकेर पाचर ज्वालिये निये एकला जलो रे ?*

(सब लोगों का ध्यान इस गान की ओर आकर्षित होता है)

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—बबई के बैलार्डपियर वन्दर का आने वाले यात्रियो के बैठने का आलय

समय—प्रात काल

(एक ओर समुद्र की खाडी के उस भाग का थोडा सा हिस्सा दिखता है जहा कि विदेशी जहाज ठहरते हैं। एक आये हुए जहाज का भी कुछ भाग दिखाई पडता है। आलय आधुनिक ढंग से सजा हुआ है। एक टेबिल के चारों ओर विदेशी पत्रकार बैठे हुए है, इनमें दो स्त्रिया और तीन पुरुष हैं। सबकी वेष-भूषा यूरोपीय है)

एक स्त्री—टो अपना अपना नाम, जिस मुलुक से जो आया, उस मुलुक का नाम खुदई बटलाकर इन्ट्रोडक्शन एक डूसरे का कर लेना चइए। माइ नेम इज मागरेट, रैम्सडन माइ कम फ्राम इग्लैंड एन्ड आइ रिप्रेजेन्ट रायटर्स।

एक पुरुष—मिस रैम्सडन ने ठीक कहा। इन्ट्रोडक्शन का यह सबसे अच्छा टरीका। हमरा नाम चार्ल्स स्टीवन्सन। हम अमरीका से आया। न्यूयार्क टाइम्स फारेन कौरस्पान्डन्ट।

दूसरा पुरुष—(दाहिने हाथ से छाती ठोकते हुए) ईचुई टोकियो टाइम्स।

*श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर कृत

दूसरी स्त्री—चीएनलाइ । चाइना । न्यूज एजेन्सी चाइना ।

तीसरा पुरुष—स्तान खौफ । रशा ।

मार्गरेट—मिस्टर स्टीवन्सन और हम एक जहाज में साठ साठ आया । –

स्टीवनसन—(जापानी, चीनी और रूसी पत्रकारों की ओर संकेत कर) और आप टीनो ?

तीनों—(एक साथ) साठ साठ . साठ सा ।

मार्गरेट—आपका जहाज बी अबी आया ?

(तीनों सिर हिलाकर 'हां' कहते हैं)

स्टीवनसन—हिन्डोस्टान पैला डफा ?

ईबूई—(तीन उंगलियां ऊंची करता हैं)

चो इन लाइ—(दो उंगलियां ऊंची करती हैं)

स्तानें खोफ—(चार उंगलियां ऊंची करता है)

मार्गरेट—हम टो पूरा एक डजन दफा आ चुका । नान को आपरेशन का वकट, नाइन्टीन ट्वन्टीवन में डो डफा । सिविल डिसोबिडियन्स का वकट नाइन्टीन थर्टी में डो डफा । इन्डीविज्युअल सिविल डिसोबीडियन्स का वकट नाइन्टीन फाट्टी में एक डफा । क्रिप्स मिशन का वकट एक डफा । नाइन्टीन फाट्टी टू से फाट्टी फाइव टक चार डफा । नाइन्टीन फिफ्टी टू का जनरल इलेक्शन का वकट एक डफा और अब आया है बूडान जज्ञा के लिये ।

स्टीवनसन—हम बी कई डफा आया ।

मार्गरेट—(जापानी, चीनी प्रतिनिधियों की ओर इशारा कर स्टीवनसन से) मिस्टर स्टीवनसन और (स्टीवनसन की ओर इशारा

कर जापानी, चीनी और रूसी प्रतिनिधियों से) मिस्टर स्टीवनसन और हम टो यहा का वोली समज सकटा, बोल बी सकटा। यहा का लैंग्वा फ्रेंका हिन्डी अवी जहाज में पढा बी। और आप लोग ?

(स्ताने खोफ हाथ उठाकर तर्जनी उंगली की पहली पोर पर अंगूठा रखता है। इ चुई और चो इन लाइ भी स्ताने खोफ की नकल करती है। इसके बाद दोनों हस पड़ते हैं)

स्टीवनसन—थोरा थोरा।

मार्गरेट—समज सकटा ?

(तीनों सिर हिलाकर 'हा' कहते हैं)

मार्गरेट—इगलिश जानटा।

स्ताने खोफ—ओ यस।

ई चुई और ची इन लाइ—(एक साथ) थोरा थोरा।

(सब हस पड़ते हैं)

मार्गरेट—डेखिए, हम लोग को इस बूडान जग का टमाम खबर का लिए साठ साठ रेना चाइए।

(स्ताने खोफ इचुई और चो इन लाइ सिर हिलाकर 'हा' कहते हैं)

स्टीवनसन—हम डोनों टो साठ आया है।

मार्गरेट—साठ साठ रहने से आराम बी मिलेगा और काम बी खूब होगा।

(सब लोग सिर हिलाकर 'हा' कहते हैं)

मार्गरेट—और हम लोगों को यह भी टय कर लेना चाइए कि हम लोग यहां का लैंग्वाफ्रेंका हिन्डी में ई बाट करेगा। इससे हमको यहां का लेंगवेज बी आ जायगा।

स्टीवनसन––हमने टो अपना डूसरा विजिट का वकट से यहीं का बोली में बाट करना शुरू कर डिया था।

मार्गरेट––(तीनों को ओर देख संकेत कर) इससे इन लोगों को बहुट फायडा होगा।

(तीनों सिर हिलाकर 'हां' कहते हैं। अब कुछ खानसामे नाश्ते का सामान लाकर जिस टेबिल के चारों ओर ये लोग बैठे हैं उस पर सजाते हैं। सब लोग खाना आरंभ करते हैं और अब खाते खाते बातें चलती हैं)

मार्गरेट––आप सबका मुलुक में बूडान जज्ञ का बड़ा चर्चा?

(तीनों सिर हिलाकर 'हां' कहते हैं)

स्टीवनसन––ओ। स्टेट्स का टो एक बी ऐसा डेली, वीकली मेंगजीन नई जिसमें विनोवा का फोटो, उसका लाइफ और बूडान का हाल न निकला हो। फिर एक मर्टबाई नई डजन्स आफ टाइम्स।

मार्गरेट––ग्रेट ब्रिटेन का बी ये ही हाल है।

(तीनों प्रतिनिधि फिर सिर हिलाते हैं)

मार्गरेट––ह्यूमन हिस्ट्री में कबी बी किसी मुलुक में ऐसा बाट नेई हुआ कि मांगने से किसी को मिलियन्स आफ एकर्स लैण्ड मिले।

स्टीवनसन––ये मुलुक ही वन्डरफुल। यहां फ्रीडम मिला बिना लराई। यहां का प्रिन्सेज अपना टमाम पावर डे डिया बिना झगरा। यहां लोग मिलियन्स आफ एकर्स जमीन डे रहा है मांगने से।

मार्गरेट––रशा और चाइना में किटना ब्लड शेड हुआ इस जमीन का लिये। रिवोल्यूशन।

(रूस और चीन के प्रतिनिधि सिर हिलाकर 'हां' कहते हैं)

स्टीवनसन––और यहां बिना ब्लडशेड का रिवोल्यूशन हो रहा।

मार्गरेट—यह मुलुक सेन्ट्स का फकीर का ।

स्टीवनसन—जीजस के बाड दुनिया में गान्धी जैसा कौन आडमी पैडा हुआ ?

मार्गरेट—गाधी ने इस मुलुक को एक नया टरीका से फ्रीडम डिलाया और अब विनोबा एक नया टरीका से इकनामिक रिवोल्यूशन कर रहा है ।

स्टीवनसन—स्टेट्स में टो सब लोग वन्डर स्ट्रक....वन्डर स्ट्रक !

मार्गरेट—ग्रेट ब्रिटेन में वी ये ई हालट ।

स्टीवनसन—और डूसरा मुलुक में वी ये ही हालट होगा ? न्यूयार्क टाइम्स का डफ्टर में सब मुलुक का पेपर्स आटा । हम लोग डेखटा कि आज टो दुनिया का सबसे इंपार्टेन्ट खबर भूडान ।

(तीनों अन्य पत्र प्रतिनिधि सिर हिलाकर 'हां' कहते हैं)

मार्गरेट—रायटर का इस मुलुक मे डफ्टर, लेकिन हमको स्पेशली भेजा गया बूडान जज्ञ का पार्टीज के साठ घूम घूमकर किस टरा जमीन मिलटा, किस टरा बटटा इस सबको डेखना, सच मामला सब समझना और स्पेशल खबर भेजटा जाना ।

स्टीवनसन—हमको भी इसीलिये भेजा ।

(तीनों अन्य पत्र प्रतिनिधि भी सिर हिलाते हैं। नेपथ्य में एक गान की ध्वनि आती है । सबका ध्यान इस ओर आकर्षित होता है)

गीत

लक्ष्मी सदैव चलती फिरती चपला-सी चमक दिखाती है ,
यह धरती अचला होने से कब साथ किसी के जाती है ?
मनुजात तुम्हीं जैसे हैं जो हतभाग्य तुम्हारे ही भाई ,
वे भूमि-भाग से वंचित हैं तो कहो, कौन उत्तरदायी ?

प्रभु ने यह अवसर दिया तुम्हें, जो वस्तु अधिक तुमने पाई,
देकर वह उनके अर्थ उन्हें तुम बनो समान सदय न्यायी।
ले लो, यह यश की लूट स्वयं जो टूट सुफल-सी आती है,
यह धरती अचला होने से कब साथ किसी के जाती है?
शुभ कार्य सिद्ध करवाने को आचार्य संत हों सुलभ जहां,
तो इससे बढ़कर भाग्य भला हो सकता है क्या और यहां।
यह तुम्हें खोजता हुआ स्वयं आया है उलटा सुकृत यहां,
तुम चूक गये यह समय कहीं तो यही काल बन जाय न, हा।
रस-वंचित होकर प्रतिक्रिया विष ही विशेष बरसाती है,
यह धरती अचला होने से कब साथ किसी के जाती है?*

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान— तिलंगाने में नालगुंडा

समय—रात्रि

(पहले अंक के प्रथम दृश्य वाला दृश्य है। रुद्रदत्त सिर झुकाये हुए बैठा है। उसके सामने वही व्यक्ति बैठा है जिसने प्रस्ताव किया था कि रुद्रदत्त दल का नेता बनाया जाय। वह एकटक उत्सुकता से रुद्रदत्त की ओर देख रहा है)

रुद्रदत्त—(कुछ देर बाद सिर उठाते हुए भर्राये हुए स्वर में) हां, नवलकिशोर, मेरा अब यही मत है कि हमारा रास्ता सही नहीं है।

नवलकिशोर—इतने साथियों की हत्या करवाने के पश्चात्, जनता का इतना खून बहवाने के बाद आप इस निर्णय पर पहुंचे हैं?

* श्री मैथिलीशरण गुप्त कृत

रुद्रदत्त—तुम समझते हो कि जो कुछ हुआ है उससे मुझसे अधिक किसी को सताप हो सकता है ?

नवलकिशोर—यह तो ठीक है, लेकिन

रुद्रदत्त—(बीच ही में जल्दी जल्दी) नवलकिशोर, जिन साथियों की हत्यायें हुई है, उनके चेहरे जागते सोते मेरी आखो के सामने घूमा करते है। जनता में जिनका खून बहा है अनेक बार जान पडता है वह खून मेरी रगो से वह रहा है। इन सबके कुटुम्बो से मेरा परिचय नही, पर कल्पना कर करके मै इनकी माताओ, इनके पिताओ, इनकी पत्नियो,इनके बच्चो की बिलखती चिल्लाती आर्तनाद करती हुई शक्लो को देखा करता ह। मुझे दो दृश्य तो कभी भुलाये नही भूलते—धर्मव्रत द्वारा अपने उस साथी का वध, जिसकी राय के अनुसार ही आज मेरा मत हो गया है, और उस साथी की हत्या के कारण धर्मव्रत का पागल होकर आत्म-हत्या करना। नवलकिशोर, नवलकिशोर ! मै मस्तिष्क से शासित होता हू, लेकिन मुझसे ज्यादा दुखी आज आज . शायद दुनिया में कोई न होगा. पर पर (रुक जाता है)

नवलकिशोर—(एकटक रुद्रदत्त की ओर देखते हुए) पर ?

रुद्रदत्त—पर हृदय की यह अवस्था होते हुए भी मै मस्तिष्क को तो ठिकाने पर रखना चाहता हू।

नवलकिशोर—आपका मस्तिष्क ही तो आपकी विशेषता है। इसीलिये तो उस दिन मैने प्रस्ताव कर आपको अपने दल का नेता चुनवाया था।

रुद्रदत्त—मेरा मस्तिष्क कहता है कि हमारा रास्ता सही नही है। नवलकिशोर तुम जानते हो इस सारे हत्याकाड में मेरा कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नही था।

नवलकिशोर—खूब जानता हू। आप हर तरह सपन्न थे।

कुटुम्ब की दृष्टि से सब प्रकार सुखी थे। आपने अपनी सारी जायदाद मटियामेट कर डाली। अपने सुखी कुटुम्ब को छोड़ा। अपनी जान को हथेली पर रख दिन और रात, आठों पहर, चौसठों घड़ी, मारे मारे घूम रहे हैं।

रुद्रदत्त—यह सब मैं इसलिये कर सका कि जो कुछ मैं कर रहा था, उस पर मेरा दृढ़ विश्वास था, पर, नवलकिशोर, आज मेरा वह विश्वास काफ़ूर हो गया। देखो, समझ लो, सारे विषय को, क्योंकि अब तो तुम्हीं भर बचे हो सारे साथियों में, बहुत से मारे गये, कुछ ने साथ छोड़ दिया।

नवलकिशोर—क्षमा कीजिये, तो एक बात पूछूं ?

रुद्रदत्त—क्षमा मांगने की जरूरत नहीं, नवलकिशोर, तुम मुझसे कुछ भी पूछ सकते हो, मुझे कुछ भी कह सकते हो।

नवलकिशोर—अपने रास्ते पर चलने वाले आज हम दो ही रह गये हैं, यह वजह तो आपके मत परिवर्तन की नहीं है ?

रुद्रदत्त—(नवलकिशोर की ओर ध्यान से देखते हुए) तुम — तुम भी ऐसा सोच सकते हो, नवलकिशोर, तुम भी ! देखो, मुझे यदि किसी रास्ते में विश्वास हो तो चाहे तमाम दुनिया एक तरफ रहे, चाहे मेरा एक एक अंग, मेरी बोटी बोटी काटकर मुझे क्रूर से क्रूर तरीके से मारने के लिये मैं भीषण से भीषण जल्लादों को दे दिया जाऊं, किसी हिंसक जन्तु के सामने उसके भक्षण के लिये फेंक दिया जाऊं, जिस प्रकार पुराने जमाने में किया जाता था, तो भी मैं अपने पथ से विचलित न होऊंगा। पर आज तो मेरा अपने रास्ते पर से ही जो विश्वास उठ गया है। आज तो मैं यह मानने लगा हूं कि जिस मार्ग पर मैं चल रहा हूं, वह इस देश और संसार के लिये कल्याणकारी नहीं है। (कुछ रुककर) तुम्हारा मुझ पर अटल विश्वास रहा है क्या मेरी एक प्रार्थना

स्वीकार करोगे ?

नवलकिशोर—प्रार्थना ? आप आज्ञा देने का अधिकार रखते है।

रुद्रदत्त—तो सारे विषय पर मै जो कुछ कह रहा हू उसे शान्ति से सुनो ।

नवलकिशोर—अवश्य, अवश्य ।

रुद्रदत्त—तुम जानते हो कि मै मार्क्स का कट्टर अनुयायी हू ।

नवलकिशोर—खूब जानता हू—मार्क्स के मुख्य ग्रथ कैपिटल उनके कम्युनिस्ट मैनिफैस्टो और साम्यवादी साहित्य के अनेक अश आपको कठस्थ हैं ।

रुद्रदत्त—और यह भी समझ लो कि मै इस निर्णय पर पहुचा हू कि हम सही नही है तब भी साम्यवाद और उसके प्रमुखवाद मार्क्स-वाद पर से मेरा विश्वास रच मात्र नही हटा है ।

नवलकिशोर—(कुछ आश्चर्य से) तब ?

रुद्रदत्त—मै आज भी उतना ही कट्टर साम्यवादी और मार्क्स-वादी हू जितना कभी था ।

नवलकिशोर—मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि एक तरफ तो आप कहते हैं कि हम जिस रास्ते पर चल रहे है उसे अब आप सही नही मानते और दूसरी ओर अपने को साम्यवादी और मार्क्सवादी भी कहते है ।

रुद्रदत्त—वही तो तुम्हें समझाता हू । मार्क्स ने जिस पूर्ण विकसित सामाजिक रचना की कल्पना की थी, उसमें व्यक्तिगत सपत्ति का कोई स्थान नही है । उस साम्यवादी समाज में हर व्यक्ति अपनी योग्यता तथा शक्ति के अनुसार उत्पादन करेगा: अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त करेगा । ऐसे समाज के अतिम विकसित रूप में राज्य

व्यवस्था का भी लोप हो जायगा। कैपिटल के अंग्रेजी अनुवाद में शब्द हैं —"स्टेट विल विदर अवे" क्यो ठीक कह रहा हू न।

नवलकिशोर—बिलकुल ठीक।

रुद्रदत्त—ऐसी समाज रचना ही पूर्ण विकसित समाज रचना है और यही मानव के लिये इष्ट हो सकती है। इसे मैं आज भी मानता हू।

नवलकिशोर—तब हमारा जो रास्ता है वह सही कैसे नही है?

रुद्रदत्त—यही बताता हू। इस समाज रचना को लाने के लिये हमने जो रास्ता पकडा है वह गलत है। साध्य सही है, साधन सही नही।

नवलकिशोर—आपका कथन समझ में नही आ रहा है।

रुद्रदत्त—थोडी देर मे आ जायगा। देखो, नवलकिशोर, मुख्य बात होती है साध्य। मार्क्स के साध्य की कल्पना सही थी। मार्क्स ने जिस प्रकार के पूर्ण विकसित समाज की कल्पना की थी उसमें राज्य व्यवस्था के लोप होने का अर्थ है फौज तथा पुलिस की भी समाप्ति अर्थात् वह पूर्ण विकसित समाज सर्वथा अहिंसक होगा। क्यो?

नवलकिशोर—(विचारते हुए) हा, यह तो आपका कथन ठीक है।

रुद्रदत्त—अब इस साध्य को प्राप्त करने के लिये मार्क्स जिन साधनो का उपयोग बताते हैं वहा मेरे मतानुसार उन्होंने गलती की है।

नवलकिशोर—अर्थात्?

रुद्रदत्त—अर्थात् यह कि मार्क्स की कल्पना के अनुसार पूर्ण विकसित अहिंसक समाज की रचना हिंसामय साधनो से सभव नही दिखती। इसीलिये रूस की क्रान्ति सच्चे साम्यवादी समाज को नहीं ला सकी। चीन में भी यही हुआ।

नवलकिशोर—तब सच्चे साम्यवादी समाज की रचना किन साधनों से हो सकती है ?

रुद्रदत्त—मूल्यों और हृदयों के परिवर्तन से ।

नवलकिशोर—आप समझते हैं यह हो सकता है ?

रुद्रदत्त—मानव समाज में यह सदा हुआ ही है ।

नवलकिशोर—कैसे ?

रुद्रदत्त—देखो, कभी मानव मानव को खा जाता था । उस समय में समझता हू कि वह मानव-समाज में वीरता की दृष्टि से पूजा जाता होगा जो सबसे अधिक मानवों को खाने की क्षमता रखता होगा । कभी गुलामी प्रथा थी । उस समय समाज में सबसे बडा आदमी वह माना जाता था जिसके कब्जे में सबसे अधिक गुलाम होते थे । आज तो वह बात नही रही न ?

नवलकिशोर—नहीं ।

रुद्रदत्त—तो मूल्यों में परिवर्तन हुआ न ?

नवलकिशोर—(विचारते हुए) हा, हुआ तो ।

रुद्रदत्त—अब आज के समाज की स्थिति लो । तुम समझते हो कि जमीन आदि सपत्ति का सग्रह लोग अपनी नैसर्गिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये करते हैं ?

नवलकिशोर—तब ?

रुद्रदत्त—यह सग्रह यथार्थ में समाज में प्रतिष्ठा के लिये किया जाता है । देखो, सबसे बडी नैसर्गिक तीन ही आवश्यकताए हैं, भोजन, वस्त्र और घर ।

नवलकिशोर—(विचारते हुए) हा, तीन ही हैं ।

रुद्रदत्त—अब यदि किसी गरीब का पेट आध सेर या तीन पाव

अन्न में भरता है तो क्या ऐसा कोई श्रीमान् है जो दस बीस सेर इकट्ठा खाकर पचा सकता है ?

नवलकिशोर—ऐसा कोई कैसे हो सकता है ?

रुद्रदत्त—बल्कि धनवानों को तो बदहजमी की शिकायत रहती है वे तो उतना पचा नही सकते जितना निर्धन ।

नवलकिशोर—(हसते हुए) हा, ज्यादातर श्रीमान् तो डिसपैपसिया के रोगी रहते है ।

रुद्रदत्त—यही बात कपडे के सम्बन्ध में है । यदि निर्धन का शरीर पाच सात गज कपडे से ढकता है तो क्या कोई ऐसा धनवान मिलेगा जो सौ दो सौ गज कपडा इकट्ठा पहन सकता हो ?

नवलकिशोर—कोई नही ।

रुद्रदत्त—अब तीसरी नैसर्गिक आवश्यकता घर की है । मैं बडे बडे मकानो में हो रहा हू पर इन बडे मकानो के किसी बडे हाल में यदि किसी श्रीमान् को सुलाया जाय तो उसे नींद नही आती । रहने के लिये तो वही बारह से चौदह फुट के कमरे की जरूरत होती है ।

नवलकिशोर—ठीक कहते है आप ।

रुद्रदत्त—तब यह धन सग्रह किसलिये होता है ?

नवलकिशोर—किसलिये ?

रुद्रदत्त—जो मैंने अभी कहा था समाज में प्रतिष्ठा के लिये । हम इन धनवानो को चोर, डाकू लुटेरा, खून पीने वाला कहने जरूर लगे है, पर क्या आज भी बहुजन समाज इन्हें ऐसा मानता है ?

नवलकिशोर—नही ।

रुद्रदत्त—इसीलिये हमें मूल्यो में परिवर्तन करना है । यदि समाज इन श्रीमानो को यथार्थ में चोर, डाकू, लुटेरा, खून पीने वाला

मानने लगे तो कोई धन सग्रह न करना चाहेगा। मूल्यो के परिवर्तन के साथ हृदय का परिवर्तन होता है। दोनो का अन्योन्य सम्बन्ध है।

नवलकिशोर—(विचारते हुए) परन्तु इस अहिंसक मार्ग से समाज परिवर्तन में कितना समय लगेगा?

रुद्रदत्त—तुम समझते हो हिंसात्मक मार्ग से सफलता जल्दी प्राप्त होती है?

नवलकिशोर—(प्रश्न सूचक स्वर में) नही?

रुद्रदत्त—मै भी पहले ऐसा ही समझता था, पर यथार्थ मे ऐसी बात नही है।

नवलकिशोर—कैसे?

रुद्रदत्त—ससार में जिन देशो ने स्वतत्र होने का प्रयत्न किया, उनके इतिहास की ओर देखो। इटली, मिश्र, आयर्लेंड और भारत चार देशो की स्वतत्रता के इतिहास को लो। प्रथम तीन ने हिंसा के मार्ग से स्वाधानीनता प्राप्त करने के प्रयत्न किये और भारत ने अहिंसा के मार्ग से। इटली, मिश्र, और आयर्लेंड को कितना समय लगा आजाद होने में, कितनी दिक्कत उठानी पडी और भारत को कितना वक्त लगा तथा कितना त्याग करना पडा।

नवलकिशोर—पर भारत की स्वाधीनता के सम्बन्ध में तो यह कहा जाता है कि अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियो की वजह से भारत आजाद हुआ।

रुद्रदत्त—पहले मै भी यही कहा करता था, लेकिन गहराई से विचारने पर सिद्ध हो जाता है कि यह फिजूल की बकवक है।

नवलकिशोर—ऐसा?

रुद्रदत्त—बेशक, अब तो मेरा यह मत है कि अगर गान्धीजी न होते और उन्होंने जो कुछ किया वह न करते तो जिस अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति में भारत स्वतंत्र हुआ वह स्वतंत्र तो अलग रहा हमारा देश उस परिस्थिति में और ज्यादा कुचला तथा पीसा जाता। (कुछ रुककर) दूसरा, दृष्टात जमीन के बटवारे का ही लो। आधुनिक काल में तो रूस और चीन में ही जमीनें बटी है न ?

नवलकिशोर—हा इन्ही में बटी हैं, इन्ही का हम लोग दृष्टात दिया करते हैं।

रुद्रदत्त—पहले रूस की लो। रूस की क्रान्ति सन् १९१७ में हुई न ?

नवलकिशोर—हां, १९१७ में।

रुद्रदत्त—और सन् १७ की क्रान्ति के बाद वहा डिक्टेटरशिप की स्थापना हुई।

नवलकिशोर—और वह डिक्टेटरशिप प्लोरिटेरियट की।

रुद्रदत्त—हा, मजदूर दल का एकाधिपत्य। पर जिस रूस में सन् १७ में क्रान्ति हुई और जहा मजदूरों के एकाधिपत्य की सरकार कायम हुई वह रूस जमीन के प्रश्न की जटिलता के कारण जमीन के सवाल को सन् ३० तक ......

नवलकिशोर—(बीच ही में) तेरह वर्ष तक।

रुद्रदत्त—हा, तेरह वर्ष तक हाथ में न ले सका।

नवलकिशोर—और चीन ?

रुद्रदत्त—चीन में पहली क्रान्ति हुई १९१० में। उस वर्ष वहा के शाही राज्य की समाप्ति हो डाक्टर सनयत सन की अध्यक्षता में वहा प्रजातत्र स्थापित हुआ। गत चालीस वर्षों तक चीन में विविध प्रकार

की घटनाए घटित होती रही और जमीन के प्रश्न को चीन चालीस वर्षों के बाद हाथ में ले सका। भारत को स्वराज्य मिला सन् १९४७ मे।

नवलकिशोर—हा, सन् ४७ में।

रुद्रदत्त—और स्वतन्त्र होने के केवल चार वर्ष बाद भारत में विनोबा ने इस प्रश्न को उठाया। सरकार ने भी उन्हें सहायता दी। विनोबा ने प्रतिज्ञा की थी कि सन् १९५७ तक वे इस प्रश्न को हल कर देंगे। यह है सन् ५७। उन्हें जनता से जमीन मिली, सरकार से जमीन मिली। जमींदारों ने दी, किसानो ने दी। जो लाखो एकड दे सकते थे उन्होंने लाखो एकड। जो कुछ डिसिमल ही दे सकते थे उन्होंने कुछ डिसिमल ही। पाच वर्षों से कम ही समय मे पाच करोड एकड जमीन मागने से मिल गयी, नवलकिशोर। उसका अब वितरण हो रहा है। उस जमीन की लागत के लिये लोगो से करोडो रुपया सपत्ति दान के रूप में भी मिल गया और फिर जिन्हे जमीन बट रही है उन्हे सरकार प्रचुर परिमाण में तरह-तरह की तकाविया दे रही है। भूदान-यज्ञ सचमुच में ऐसा महान यज्ञ सिद्ध हुआ जैसा मानव इतिहास में किसी काल में कही भी नहीं हुआ था। सारे मूल्यो मे कैसा परिवर्तन हुआ है, सारे हृदयो में कैसा परिवर्तन हुआ है? अरे जमींदारो के हृदय परिवर्तित हो गये।

नवलकिशोर—(मुस्कराते हुए) आपका हृदय भी परिवर्तित हो गया।

रुद्रदत्त—नवलकिशोर, मैं मस्तिष्क से शासित होता हू हृदय से नहीं, मेरा तो मस्तिष्क परिवर्तित हो गया। मैं आज भी साम्यवादी हू। गान्धीजी कहते थे गाधीवाद कोई वाद नही। गाधीवाद कोई वाद होया न हो, पर मुझे साम्यवाद और गाधीवाद के साध्य म कोई अन्तर नहीं दिखता, हा, साधन में अतर अवश्य है। मार्क्स जिसे पूर्ण

विकसित समाज कहते हैं वह पूर्ण रूप से अहिंसक समाज होगा, पर वह समाज रचना मार्क्स हिंसा के साधनों से करना चाहते हैं, गाधीजी उस अहिंसक समाज की रचना अहिंसक साधनों से। अहिंसा से उन्होंने स्वराज्य प्राप्त किया और उनके सिद्धातों को सबसे अधिक समझने वाले उनके शिष्य विनोबा ने उन्ही अहिंसक साधनों से जमीन का यह प्रश्न हल कर दिया। गाधीजी के अहिंसा से स्वराज्य प्राप्त करने पर मेरा मस्तिष्क नही बदला था, पर विनोबा की इस अहिंसक क्रान्ति ने मेरा मस्तिष्क भी बदल दिया। साम्यवादी रहते हुए भी मैं आज मानता हू कि सच्ची साम्यवादी समाज रचना अहिंसा से मूल्यो में परिवर्तन और जनता के हृदय में तथा मेरे सदृश व्यक्तियो के मस्तिष्क में परिवर्तन से ही हो सकती है। रूस और चीन में उसे हिंसा के द्वारा लाने का प्रयत्न किया गया, ऐसे वक्त जब वहा उपयुक्त परिवर्तन नही हुए थे, इसीलिये वहा न सच्ची साम्यवादी समाज रचना हो सकी और न हो रही है। वह भारत में होगी, नवलकिशोर। इस पुराने, इस बूढे भारत के पास अभी भी ससार को नये नये सदेश देने को हैं, नये नये मार्ग बताने को है।

नवलकिशोर—तो अब आपका कार्यक्रम क्या होगा?

रुद्रदत्त—जितनी भी मेरी जमीन और संपत्ति बची है उस सबको भूदान-यज्ञ में दान देकर विनोबा के एक शिष्य के नाते उनका अनुसरण। तुम जानते ही हो कि जमीन का सवाल हल करना तो आर्थिक असमानता दूर करने का विनोबा पहला कदम मानते हैं।

लघु यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान—सेवाग्राम

समय—सन्ध्या

(पीछे की ओर गान्धीजी की कुटिया का कुछ भाग दिखायी देता है। उसके सामने जहा महात्मा प्रार्थना करते थे उस मैदान में विनोबा जी के स्वागत की तैयारी है। राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद इस स्वागत समारोह के सभापति का आसन ग्रहण करने वाले हैं। सारा मैदान ध्वजा पताकाओं से सजा है। इनके बीच भारत के सभी राजनैतिक दलों के ध्वज दिखाई पडते हैं। मैदान के बीच में एक तख्त है उस पर एक गद्दी और दो मसनद रखे हैं। तख्त के सामने लाउड स्पीकर है। जमीन पर बिछावन है। सादी बिछावन और जहा तक दृष्टि जाती है सादा स्थान देहाती और शहराती नर-नारियों की भीड से खचाखच भरा हुआ है। इनमें तख्त के निकट उप-राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन, प० जवाहरलाल नेहरू, उनके अन्य मंत्री, श्री जयप्रकाशनारायण, श्री गोपालन, श्री कृपलानी राज्यों के मुख्यमंत्री एव अन्य मंत्रीगण और अनेक देशों के राजदूत बैठे हैं। लोक सभा, राज्य सभा तथा प्रातों की विधान सभाओं के सदस्य भी हैं। भूदान में कार्य करने वाले सभी कार्यकर्त्ता भी उपस्थित हैं। इनमें मुख्य हैं— श्री दामोदरदास मूदडा, पुरुषोत्तमदास टडन, जानकीदेवी बजाज, शकरराव देव, श्री कृष्णदास जाजू, वल्लभ स्वामी, दादा धर्माधिकारी, राधाकृष्ण बजाज, श्रीमन्नारायण अग्रवाल, मदालसा देवी, रामेश्वरी नेहरू, दादाभाई नाइक, ठाकुरदास बग, पाटसकर, गगाप्रसाद माहेश्वरी, मृदुला मूदडा, महादेवी ताई, बाबा राघवदास, अक्षयकुमार कर्ण, श्री भुवनचन्द्रदास, सुब्रह्मण्यम् तिमप्पा नायक, इक्का वारियर, सिद्धराज ढड्ढा, केदररत्नम् पिल्ले, एस जगन्नाथम्, अचिन्तराम, बाबू लक्ष्मीनारायण, चारुचन्द्र भडारी,

बी. सी. खोड़े, अप्पा साहब पटवर्द्धन, कनु गांधी, धर्मदेव शास्त्री, केशवराव, नारायण देसाई, शरत्चन्द्र महाराणा, चतुर्भुज पाठक, दद्रदत्त, नवलकिशोर (ये दोनों साम्यवादी नेता जो इस नाटक के तीसरे अंक के चौथे दृश्य में अन्तिम बार दिखाई दिये थे) एक ओर अखबार वालों के बैठने के स्थान हैं जहां डेस्क रखे हुए हैं। अखबार वालों में विदेशों से आने वाले वे पांचों प्रतिनिधि भी हैं जो इस नाटक के तीसरे अंक के तीसरे दृश्य में बम्बई के बैलार्ड पियर बन्दर पर उतरे थे। इनमें कुछ लोग कैमरा भी लिये हुए हैं और फिल्म लेने वाले भी हैं। कुछ देर में राष्ट्रपति के आगमन की सूचना में बिगुल बजता है। तत्काल राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद और विनोबाजी का प्रवेश होता है। ये लोग धीरे धीरे चलते हुए तख्त पर जाते हैं। राष्ट्रपति और विनोबा जी जन-समुदाय की ओर मुख करके खड़े हो जाते हैं। कुछ लड़कियां वन्देमातरम् गीत गाती हैं। सारा जन-समुदाय खड़ा हो जाता है। राष्ट्रगीत पूरा होने पर सब लोग बैठते हैं। राष्ट्रपति और विनोबाजी तख्त पर बैठते हैं। अब राष्ट्रपति फिर खड़े होकर लाउड-स्पीकर के सामने बोलना आरंभ करते हैं। राष्ट्रपति के प्रवेश के बाद कैमरा और फिल्म वालों का काम बराबर चलता रहा है और अब भी चलता है)

राजेन्द्रप्रसाद—आज हम राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी के इस महान पवित्र सेवाग्राम में उस महापुरुष के सार्वजनिक स्वागत के लिये इकट्ठे हुए हैं जिसने दुनिया को क्रांति का एक नया रास्ता बताया है।

(तालियां)

राजेन्द्रप्रसाद—किस मुश्किल से विनोबाजी ने यह स्वागत मंजूर किया। जब उनको कहा गया कि दरअसल यह स्वागत उनका नहीं, लेकिन उस क्रान्ति का है जो उन्होंने मूल्यों और हृदय के परिवर्तन

द्वारा पूरे अहिंसात्मक तरीके से सफल की, और जिस स्वागत से इस अहिंसात्मक क्रान्ति को दुनिया जान सकेगी जिससे दुनिया के लोग अपनी तकलीफो को दूर करने के लिये एक नया रास्ता सीखेंगे, तब विनोबाजी यहा आये ।

(तालिया)

राजेन्द्रप्रसाद—महात्मा गान्धी ने अहिंसा से आजादी हासिल कर स्वतत्रता प्राप्त करने का दुनिया को एक नया मार्ग दिखाया था। विनोबाजी ने मूल्यो और हृदय परिवर्तन से बिना खून बहे आर्थिक असमानता दूर करने की सफल क्रान्ति हो सकती है यह दुनिया को सबूत कर दिया ।

(तालिया)

राजेन्द्रप्रसाद—१५ अप्रेल सन् १९५१ को विनोबाजी ने तिलगाने से भूदान-यज्ञ शुरू किया और यह है सन् १९५७ का अत । सात वर्षों से भी कम समय में विनोबाजी ने इस देश की जमीन के सवाल को हल कर दिया ।

(तालियाँ)

राजेन्द्रप्रसाद—धनवान जमीदारो ने उन्हें हजारो नही लाखो एकड जमीनें दी, गरीब किसानो ने उन्हें कुछ डेसिमल जमीनें तक दी। पाच करोड एकड जमीन वे चाहते थे। इस दान के बाद जो कमी रही वह सरकार ने पूरी कर दी ।

(तालियाँ)

राजेन्द्रप्रसाद—एक-एक अगुल जमीन के लिये किस प्रकार सिर फूटते हैं किस तरह बडे बडे राष्ट्रो में युद्ध तक होते हैं । मानव इतिहास

के किसी भी युग और किसी भी मुल्क म आज तक इस तरह मागने से भूमि नही मिली। यह एक नवीन घटना हुई है दुनिया के इतिहास में।

(तालियां)

राजन्द्रप्रसाद—कितना परिश्रम किया और कितनी तकलीफ उठायी इस भूदान-यज्ञ में काम करने वालो ने। सभी ने अपूर्व त्याग तथा महान दूरदर्शिता का परिचय दिया है और सभी अगणित धन्यवाद के पात्र है।

(तालियां)

राजेन्द्रप्रसाद—इस जमीन में पडती जमीन तोडने तथा जो जमीन भी मिली है उसमें खेती अच्छी तरह की जा सके इसके लिये जिनके पास जमीन नही थी उन्होने सपत्ति दान भी कम नही दिया है। और जिनके पास न जमीन थी और न सपत्ति, उन्होने जमीन पर मुफ्त काम करने के लिये श्रम-दान दिया है। श्रीमती जानकी देवीजी बजाज द्वारा कूपदान का भी बहुत काम हुआ है। इन सब दानियो को भी जितनी धन्यवाद दी जाय थोडी है।

(तालियां)

राजेन्द्रप्रसाद—इस जमीन का काम धन की कमी के कारण रुक न सके इसलिये सरकार भी आगे आयी और उसने भी तरह-तरह की तकाविया दी।

(तालियां)

राजेन्द्रप्रसाद—सबसे मुश्किल काम था जमीन का बटवारा। तरह-तरह की जमीने थी और इतनी भूमि हर भूमिहीन कुटुम्ब को दी जाना जरूरी था जितनी जमीन से उसका बखूबी गुजर हो सके। यह बटवारा भी करीब करीब पूरा हो चुका और जहा कही कहीं एक कुटुम्ब को पचास डेसिमिल जमीन मिली है वहां कहीं कहीं एक कुटुम्ब को २० एकड भी। पर जैसा अंदाज किया गया था औसत से फी कुटुम्ब

को पाच एकड जमीन पडी है और इस प्रकार इस देश के भूमिहीनो का सवाल हल हो गया है ।

(तालियां)

राजेंद्रप्रसाद—कई जगह सहकारी फार्म भी बने हैं और आदर्श गाव भी बसे हैं। इन आदर्श गावो को बसाने में भी श्री पुरुशोत्तमदासजी टंडन की वाटिका-गृह–योजना बडी सफल हुई है ।

(सब लोग टंडनजी की ओर देखते हैं । जोर की तालियां)

राजेंद्रप्रसाद—इस सारे आन्दोलन के सफल प्रवर्तक विनोबाजी का मैं भारत सरकार की तरफ से हार्दिक अभिनदन करता हू ।

(एक महिला थाल में एक सुन्दर सूत का हार लेकर आती है। राष्ट्रपति उस हार को विनोबाजी को पहनाते हैं। जोर की तालियां। राष्ट्रपति बै जाते हैं। लाउड स्पीकर वाला लाउड स्पीकर विनोबाजी के सामने करता है)

विनोबा—(हार को गले में से उतार गोद में रखते हुए तथा गला साफ करते हुए बैठे बैठे ही)

चहौं न सुगति सुमति संपति कछु रिधिसिधि बिपुल बड़ाई।
हेतु रहित अनुराग रामपद बढ़ै अनुदिन अधिकाई ।
सबै भूमि गोपाल की । सपति सब रघुपति के पाही ।

इस यज्ञ के शुरू में मैंने कहा था कि महाभारत में राजसूय यज्ञ का वर्णन है और मेरा यह प्रजासूय यज्ञ है, जिसमें प्रजा का अभिषेक होगा। यह यज्ञ मै सन् १९५७ में पूरा करना चाहता हू । यह १९५७ का अत है और भगवान की कृपा से निश्चित समय के भीतर यज्ञ पूरा होकर आज इस राष्ट्र के राष्ट्रपति द्वारा यथार्थ में मेरा नही, पर मुझे प्रतीक मान इस राष्ट्र की प्रजा का अभिषेक हो रहा है । और यह राष्ट्रपिता के पवित्र सेवाग्राम में ।

(तालियां)

विनोबा—गान्धीजी ने कहा था "अधिकांश जमीदार खुशी से अपनी जमीन छोड देंगे" वे हमारे ऋषि–महर्षियो, अवतारी पुरुषो के सदृश त्रिकालज्ञ है। उनकी भविष्यवाणी सत्य हुई। जमीदारो ने ही खुशी से जमीन नही छोडी,लेकिन जिनके पास थोडी से थोडी जमीन थी उन्होने भी अपनी जमीन के कुछ हिस्से को इस यज्ञ मे आहुति डाली।

(तालियां)

विनोबा—हिन्दुओ ने जमीन दी, मुसलमानो ने जमीन दी, हरिजनों ने जमीन दी, अन्य धर्मवालो ने जमीन दी, सब समुदायो ने, सब वर्गों ने जमीन दी और यह दान देकर यह सिद्ध कर दिया कि वर्ग-संघर्ष कोई अनिवार्य वस्तु नही।

(तालियां)

विनोबा—अगर ऐसा न होता तो क्या अकेले बडे-बडे जमीदारो की जमीन के दान या उनकी जमीन को लेने के लिये कानून बनने से पाच करोड एकड जमीन मिल सकती थी? कदापि नही। अरे अगर तीस एकड के ऊपर जमीन किसी कुटुम्ब के पास न रहने दी जाती तो भी नहीं, जो देश की जमीन का पूरा हिसाब तथा किसके पास कितनी जमीन थी यह देखने से सबूत हो जाता है। मुल्क की तमाम जनता, सारे राजनैतिक दल और सरकार के पूरे पूरे सहयोग के कारण ही यह क्रान्ति सफल हुई है।

(तालियां)

विनोबा—मैंने शुरू में ही कहा था कि दूसरे मुल्को ने जिस प्रकार जमीन का सवाल हल किया वह हमारे देश के लिये इष्ट नही है और रशिया तथा अमरीका की स्पर्धा से दुनियाके दूसरे राष्ट्रो का जो नाश होने जा रहा है इस समय दुनिया को समझदारी का रास्ता बताने

वाला एक ही मुल्क, भारत है।

(तालियां)

विनोबा—भूल्यो नया हृदय के परिवर्तन से दुनिया की अहम समस्याओं को शान्ति के रास्ते से हल करने का भारत ने यह रास्ता दिखाया है।

(तालियां)

विनोबा—भारत कृषिप्रधान देश है। आर्थिक असमानता दूर करने के लिये जमीन का सवाल इस मुल्क का पहला सवाल था। इस प्रश्न को हल कर हमने इस दिशा में पहला, पर सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इसी रास्ते पर अब एक के बाद दूसरा कदम उठाते हुए हम इस देश की सारी आर्थिक असमानता को समाप्त कर देने वाले हैं।

(तालियां)

विनोबा—प्रश्न केवल जमीन का नहीं था। मेरा उद्देश्य क्या था और आज भी क्या है ? मैं परिवर्तन चाहता हूं। हृदय परिवर्तन, फिर जीवन परिवर्तन और बाद में समाज रचना में परिवर्तन। यह परिवर्तन मैं प्रेम से, विचार से, लाना चाहता हूं। मैंने पहले भी कई बार कहा है और फिर कहता हूं। प्रेम और विचार की तुलना में कोई शक्ति टिक नहीं सकती। अन्त में मैं एक वेद वाक्य कहता हूं—"चरैं वेति" अर्थात् बढ़े जाइये। प्रेम और विचार के इस मार्ग में बढ़े जाना ही जीवन है, ठहर जाना मृत्यु। चरैवेति ....चरैवेति।

(विनोबाजी के चुप होते ही आश्रम की प्रसिद्ध सायंकालीन प्रार्थना होती है)

सायंकाल की उपासना

१

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति य योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः

अर्जुन ने कहा--

१ स्थितप्रज्ञ समाधिस्थ कहते कृष्ण है किसे,
स्थितधी बोलता कैसे, बैठता और डोलता।

श्री भगवान् ने कहा--

२ मनोगत सभी काम तज दे जब पार्थ जो,
आप में आप हो तुष्ट, सो स्थितप्रज्ञ है तभी।

३ दुःख में जो अनुद्विग्न सुख में नित्य निःस्पृह,
वीत-राग-भय-क्रोध, मुनि है स्थितधी वही।

४ जो शुभाशुभ को पाके न तो तुष्ट न रुष्ट है,
सर्वत्र अनभिस्नेही, प्रज्ञा है उसकी स्थिरा।

५ कूर्म ज्यों निज अंगों को, इन्द्रियों को समेट ले,
सर्वशः विषयों से जो, प्रज्ञा है उसकी स्थिरा।

६ भोग तो छूट जाते हैं निराहारी मनुष्य के,
रस किन्तु नहीं जाता, जाता है आत्म-लाभ से।

७ यत्नयुक्त सुधी की भी इन्द्रियां ये प्रमत्त जो,
मन को हर लेती हैं अपने बल से हठात्।

८ इन्हें संयम से रोके मुझी में रत, युक्त हो,
इन्द्रियां जिसने जीतीं प्रज्ञा है उसकी स्थिरा।

९ भोग-चिन्तन होने से होता उत्पन्न संग है,
संग से काम होता है, काम से क्रोध भारत।

१० क्रोध से मोह होता है, मोह से स्मृतिविभ्रम,
उससे बुद्धि का नाश, बुद्धिनाश विनाश है।

११ राग-द्वेष-परित्यागी करे इन्द्रिय-कार्य जो,
स्वाधीन वृत्ति से पार्थ, पाता आत्म-प्रसाद सो।

१२ प्रसाद-युत होने से छूटते सब दुःख हैं,
होती प्रसन्नचेता की बुद्धि सुस्थिर शीघ्र ही।

१३ नहीं बुद्धि अयोगी के, भावना उसमें कहां,
अभावन कहां शान्ति, कैसे सुख अशान्त को।

१४ मन जो दौड़ता पीछे इन्द्रियों के विहार में-
खींचता जन की प्रज्ञा, जल में नाव वायु ज्यों।

१५ अतएव महाबाहो, इन्द्रियों को समेट ले-
सर्वथा विषयों से जो, प्रज्ञा है उसकी स्थिरा।

१६ निशा जो सर्व भूतों की संयमी जागते वहां,
जागते जिसमें अन्य, वह तत्त्वज्ञ की निशा।

१७ नदी-नदों से भरता हुआ भी
समुद्र है ज्यों स्थिर सुप्रतिष्ठ,
त्यों काम सारे जिसमें समावें,
पाता वही शान्ति, न काम-कामी।

१८ सर्व-काम परित्यागी विचरे नर निःस्पृह,
अहंता-ममता-मुक्त, पाता परम शान्ति सो।

१९ ब्राह्मीस्थिति यही पार्थ, इसे पाके न मोह है,
टिकती अन्त में भी है ब्रह्मनिर्वाण-दायिनी ।

२

ॐ तत्सत् श्री नारायण तू, पुरुषोत्तम गुरु तू ।
सिद्ध-बुद्ध तू, स्कन्द विनायक सविता पावक तू ।।
ब्रह्म मज्द तू, यह्व शक्ति तू, ईशु-पिता प्रभु तू ।
रुद्र विष्णु तू, राम कृष्ण तू, रहीम ताओ तू ।।
वासुदेव गो-विश्व रूप तू, चिदानन्द हरि तू ।
अद्वितीय तू, अकाल निर्भय आत्म-लिंग शिव तू ।।

३

राजा राम राम राम, सीता राम राम राम ।।
राजा राम राम राम, सीता राम राम राम ।। धुन

४

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह ।
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन ।।
सर्वधर्म समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना ।
विनम्र व्रत निष्ठा से ये एकादश सेव्य हैं ।।

(अब राष्ट्रपति खड़े होते हैं। विनोबाजी भी खड़े होते हैं। बैण्ड राष्ट्रध्वनि बजाता है)

यवनिका

उपसंहार

स्थान—उत्तरप्रदेश के गोरखपुर जिले का वही गाव जो उपक्रम मे था

समय—रात्रि

(दृश्य ठीक उपक्रम के सदृश है। पीछे की ओर फिल्म देखने की सफेद चादर लगी हुई है। उसके सामने जमीन पर एक जाजम बिछी है। जिस पर कुछ देहाती तथा शहराती स्त्री पुरुष और बच्चे बैठे हैं। इस जाजम पर एक ओर सिनेमा के फिल्म दिखाने की मशीन रखी है। संपूर्णदास अपने उसी वेष में खड़ा हुआ समुदाय को कुछ कहा रहा है। सपूर्णदास की उम्र बढ गई है। यह उसके बालों की सफेदी बढ जाने से स्पष्ट ज्ञात हो जाता है)

सपूर्णदास—दस . दस साल के लगभग बीते होंगे उस समय को जब मैंने आप लोगो को इसी जगह एक फिल्म दिखाया था, जिसमे भारत की गरीबी के कुछ भयानक साथ ही दयनीय दृश्य दिखाये गये थे। क्यो ?

एक वृद्ध—जी हा, दस बरस बीत गये उस बात को। मुझे उस दिन का हाल वैसा का वैसा स्मरण है।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) हमें . हमें भी उसकी पूरी याद है।

एक व्यक्ति—पर वह बात तो अब सपन हो गयी।

संपूर्णदास—बिलकुल ठीक कहते है आप। वह बुरे से बुरा समय था। बुरे सपने के समान बीत गया।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) बीत गया सचमुच ही बीत गया।

एक व्यक्ति—हा, जान पडता था कभी न बीतेगा, पर ..

कुछ व्यक्ति—(एक साथ बीचही में)बीत गया.....बीत गया।

संपूर्णदास—वह बीता है एक संत के प्रयास से।

एक व्यक्ति—(जोर से) सन्त विनोबा की जय !

सारा जन समुदाय—(एकसाथ जोर से) सन्त विनोबा की जय !

संपूर्णदास—भाइयो ! इस पुण्य भूमि भारत पर अनतकाल से पुण्य श्लोक ऋषि महर्षियो, सन्तों और भक्तों का ही प्रभाव रहा है।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) पुण्य भूमि भारत की जय !

संपूर्णदास—महात्मा गांधी ने एक सर्वथा नवीन प्रणाली से इस देश को स्वतत्र किया।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) महात्मा गाधी की जय !

संपूर्णदास—उनके यह शिष्य सन्तविनोबाने एक अभूतपूर्व पद्धति से इस भूमि की आर्थिक समस्याओ को हल कर इस देश की गरीबी दूर की।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) सन्त विनोबा की जय !

संपूर्णदास—गाधीजी ने स्वराज्य प्राप्त किया अग्रेजो का हृदय परिवर्तन कर। अत आज इगलिस्तान और हिन्दुस्तान सबसे बड़े मित्र हैं। इसी तरह विनोबाजी आर्थिक समता लाये हृदय परिवर्तन कर। अत. किसी के बीच कोई कटुता पैदा न हुई।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) महात्मा गाधी की जय !

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) सन्त विनोबा की जय !

संपूर्णदास—फिर विनोबाजी ऐसे नये मूल्यों का निर्माण कर रहे है जिसमें धातु के टुकडो और कागज के चिथडो का स्थान न होकर उत्पादित पदार्थों का स्थान हो। हर गाव में वस्तुओ के क्रय विक्रय को गौण और स्वावलंबन को प्रधानता रहे।

एक व्यक्ति—ये सिद्धान्त एक नयी समाज रचना ला रहा है ।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) बिलकुल बिलकुल ।

संपूर्णदास—जानते हैं ऐसे गावो में से पहले गाव का उन्होंने क्या नाम रखा था ?

एक व्यक्ति—कौन सा ?

संपूर्णदास—गोकुल । भगवान श्रीकृष्ण के गोकुल में सारा गोकुल एक कुटुम्ब बन गया था । कही किसी तरहके झगडे झासे न थे और न कही किसी तरह के कोई मतभेद । वहा सब लोग पाच उगलियोकी तरह रहते थे । फिर भगवान ने गोकुल में क्रय-विक्रय का स्थान न रहने दिया था । वहा प्रधानतया गोरस होता था । उसे यदि कोई बेंचना चाहता तो भगवान चोरी तककर उसे सारे ग्वाल बालो को बाट देते । गोरस बेंचने को मथुरा जाने वाली गोपियो से गोरस का दान मागते और दान न मिलता तो उनके मटको को फोड देते ।

कुछ व्यक्ति--(एक साथ) भगवान श्रीकृष्ण की जय !

संपूर्णदास—दस वर्ष पहले मैंने आपको उस समय के कुछ वीभत्स और निराशापूर्ण दृश्य दिखाये थे । आज दिखाता हू इस काल के सुन्दर और आशापूर्ण दृश्य ।

एक व्यक्ति—शायद ऐसे जिनका हमें रोज मर्रा तजरबा हो रहा है ।

सपूर्णदास—हा, ऐसे जिनका आपको ही नही हिमालय से कन्याकुमारी और जगन्नाथपुरी से द्वारकापुरी तक समस्त भारत की जनता को अनुभव हो रहा है ।

सपूर्णदास—भगवान श्रीकृष्ण के समय के गोकुल के सदृश इन गावो में सारे वादो के ऊपर उठकर सारे सवर्णों, हरिजनो

कुछ व्यक्ति—(एक साथ धीमे में)बीत गया बीत गया।

सपूर्णदास—वह बीता है एक सत के प्रयास से ।

एक व्यक्ति—(जोर से) सन्त विनोबा की जय !

सारा जन समुदाय–(एकसाथ जोर से) सन्त विनोबा की जय !

सपूर्णदास—भाइयो ! इस पुण्य भूमि भारत पर अनतकाल से पुण्य श्लोक ऋषि महर्षियो, सन्तो और भक्तो का ही प्रभाव रहा है।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) पुण्य भूमि भारत की जय !

सपूर्णदास—महात्मा गाधी न एक सर्वथा नवीन प्रणाली से इस देश को स्वतत्र किया।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) महात्मा गाधी की जय !

सपूर्णदास–उनके यह शिष्य सन्तविनोबाने एक अभूतपूर्व पद्धति से इस भूमि की आर्थिक समस्याओ को हल करइस देश की गरीबी दूर की।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) सन्त विनोबा की जय !

सपूर्णदास—गाधीजी न स्वराज्य प्राप्त किया अग्रेजो का हृदय परिवर्तन कर। अत आज इगलिस्तान और हिन्दुस्तान सबसे बड मित्र हैं। इसी तरह विनोबाजी आर्थिक समता लाये हृदय परिवर्तन कर। अत किसी के बीच कोई कटुता पैदा न हुई।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) महात्मा गाधी की जय !

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) सन्त विनोबा की जय !

सपूर्णदास—फिर विनोबाजी एसे नय मूल्यो का निर्माण कर रहे हैं जिसमें धातु के टुकडों और कागज के चिथडो का स्थान न होकर उत्पादित पदार्थों का स्थान हो। हर गाव म वस्तुओ के क्रय विक्रय को गौण और स्वावलबन को प्रधानता रहे।

एक व्यक्ति—ये सिद्धान्त एक नयी समाज रचना ला रहा है।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) बिलकुल.....बिलकुल ।

संपूर्णदास—जानते हैं ऐसे गावों में से पहले गाव का उन्होंने क्या नाम रखा था ?

एक व्यक्ति—कौन सा ?

संपूर्णदास—गोकुल। भगवान श्रीकृष्ण के गोकुल में सारा गोकुल एक कुटुम्ब बन गया था। कही किसी तरह के झगड़े झासे न थे और न कही किसी तरह के कोई मतभेद। वहा सब लोग पाच उगलियोंकी तरह रहते थे। फिर भगवान ने गोकुल में क्रय-विक्रय का स्थान न रहने दिया था। वहा प्रधानतया गोरस होता था। उसे यदि कोई बेंचना चाहता तो भगवान चोरी तककर उसे सारे ग्वाल बालों को बाट देते। गोरस बेंचने को मथुरा जाने वाली गोपियों से गोरस का दान मागते और दान न मिलता तो उनके मटको को फोड देते ।

कुछ व्यक्ति--(एक साथ) भगवान श्रीकृष्ण की जय !

संपूर्णदास—दस वर्ष पहले मैंने आपको उस समय के कुछ बीभत्स और निराशापूर्ण दृश्य दिखाये थे। आज दिखाता हू इस काल के सुन्दर और आशापूर्ण दृश्य।

एक व्यक्ति—शायद ऐसे जिनका हमें रोज मर्रा तजरबा हो रहा है।

संपूर्णदास—हा, ऐसे जिनका आपको ही नही हिमालय से कन्याकुमारी और जगन्नाथपुरी से द्वारकापुरी तक समस्त भारत की जनता को अनुभव हो रहा है।

संपूर्णदास—भगवान श्रीकृष्ण के समय के गोकुल के सदृश इन गावो में सारे वादो के ऊपर उठकर सारे सवर्णों, हरिजनों

हिन्दू, मुसलमान आदि तथा इसी तरह के अन्य भेदभावो को मिटाकर आधुनिक से आधुनिक सामूहिक ढग से कार्य करने के सिद्धान्तो के अनुसार कार्य एव आमोद-प्रमोद करते हुए लोग सुख और चैन की बंशी बजा रहे हैं।

कुछ व्यक्ति—धन्य है धन्य है !

(संपूर्णदास फिल्म दिखाने की मशीन के निकट बढ़ता है। अंधेरा हो जाता है। पीछे की सफेद चादर पर फिल्म दिखाई देता है। दूरी पर एक गाव दिख पड़ता है। फिर वही गांव नजदीक से दिखाई देता है। छोटे छोटे वाटिका गृहों और सकरी सकरी सड़कों का गांव है। घर प्रायः एक से हैं। हर घर के चारों ओर खाली जमीन है, जिसमें फलों-फूलों और साग-भाजी के छोटे छोटे बाग है। हर बाग में एक-एक कुआ है जिसमें रहट लगे हुए हैं। घर और सड़क खूब साफ-सुथरी है। इधर उधर कुछ ग्रामीण स्त्री-पुरुष घूम रहे हैं। वेष-भूषा से उत्तरप्रदेश के देहाती जान पड़ते हैं, पर वेष-भूषा से गरीबी न झलक कर संपन्नता दृष्टिगोचर होती है। इसके बाद एक घर का भीतरी भाग दिखायी पड़ता है। छोटे-छोटे बरामदों और कमरोंका स्नानागार तथा रसोईघर से युक्त मकान है। एक पुरुष एक स्त्री एक लड़का और एक लड़की इस घर के निवासी हैं। पुरुष चक्की पीस रहा है। स्त्री रसोई बना रही है। लड़का पढ़ रहा है लड़की गुड़िया से खेल रही है। गांव का दृश्य बदलकर खेती दिखाई पडती है। हृष्ट-पुष्ट बैलों से खेती हो रही है। यह दृश्य परिवर्तित होकर आबपाशी दिखायी देती है और इसके बाद बड़ी अच्छी फसल के हरे-भरे खेत। फिर गृह-उद्योगों के कई दृश्य दिखायी देते हैं। कहीं चरखे चल रहे हैं, कहीं कपड़ा बन रहा है, कहीं तेल घानी चल रही है, कहीं गन्ना पिरकर गुड़ बन रहा है, कहीं बढ़ई काम कर रहे हैं और कहीं लुहार। यह दृश्य बदलकर एक सुन्दर गोशाला और उसमें बड़ी अच्छी गायें दिख पड़ती हैं। एक ओर महि-

लाए दूध दुह रहो हैं और दूसरी ओर दधि मन्थन हो रहा है। यह दृश्य परिवर्तित होकर एक बाल भवन (नरसरी) दिख पड़ता है, जिसमें खूब हृष्ट-पुष्ट बालक बालिकाएं खेल रहे हैं। फिर एक पाठशाला दिखाई देती है। मोटे किन्तु साफ सुथरे वस्त्र पहने हुए बालक बालिकाएं पढ़ रही हैं। पाठशाला के एक मैदान में बालकों के विविध प्रकार के खेल भी दृष्टिगोचर होते हैं। इसके बाद 'वनस्पति औषधालय' साइनबोर्ड का एक छोटा सा दवाखाना दिख पड़ता है, पर यह प्रायः खाली है। अन्त में रात्रि की चांदनी में एक देहाती नृत्य के दृश्य दिखायी देते हैं। इस फिल्म के साथ निम्नलिखित गाना चलता रहता है।)

गीत

मानव झुका चरण में
सन्त विनोबा तुम प्रभात हो भारत भाग्य गगन में
जन को भूमि मिली है, जन को विष्णु सजग पालन में
समता में पल खिली सम्पदा
विकसी जन-जीवन में
प्रभा बरसने लगी उदय की
घर घर के आंगन में
श्रम-कण सिंचित शस्य-बालियां
झम झुकीं, गुरु तन में
हरियाली, लहरायी, नाची,
तृण-तृण में कण-कण में
मांसल, मसृण, वृषभ-कुल गोकुल
चारों सागर थन में
पुरोडाश पयमय पीकर ही
होते अमर मरण में

द्वापर के गोपाल लौटकर
आये क्या जन-जन में
प्रेम प्रीति की मधुर मुरलिया
गूंज उठी मधुवन में।
स्वर्ण रजत* की कुत्सित क्रीड़ा
तज क्रय-विक्रय धन में
शुद्ध हुआ है बुद्ध मनुज अब
जागा सत् चित् मन में।

यवनिका

समाप्त

* श्रीमती राजकुमारी देवी कृत